॥ श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः ॥

श्रीकाँचनकुँज विनोदलता

ग्रन्थकर्त्री:—

श्री १०८ श्रीमान् स्वर्गीय सवाई महाराजाधिराज श्रीमान् सावन्तसिंह बहादुर जू देव के० सी० आई० ई० पदाढय बीर पुंगव भारत धर्मेन्दु बिजावर नरेश की धर्मपत्नी श्री १०८ श्रीमती सवाई महारानी साहिबा श्री कांचन कुँवरि जू भारत धर्म भक्ति चन्द्रिका करहिया वारी जू देवी

ने अपने निज हृदय रूपी प्रेम सरोवर से विकसित हुये कंज रूपी ललित पदों को श्रीयुगल सरकार पद पद्म पराग लोलुप भगवत् भक्त जनों के हितार्थ निर्माण किया ।

बल्लभसिंह 'परिहार' द्वारा—

श्रीसीताराम प्रेस, अयोध्या जी में मुद्रित ।
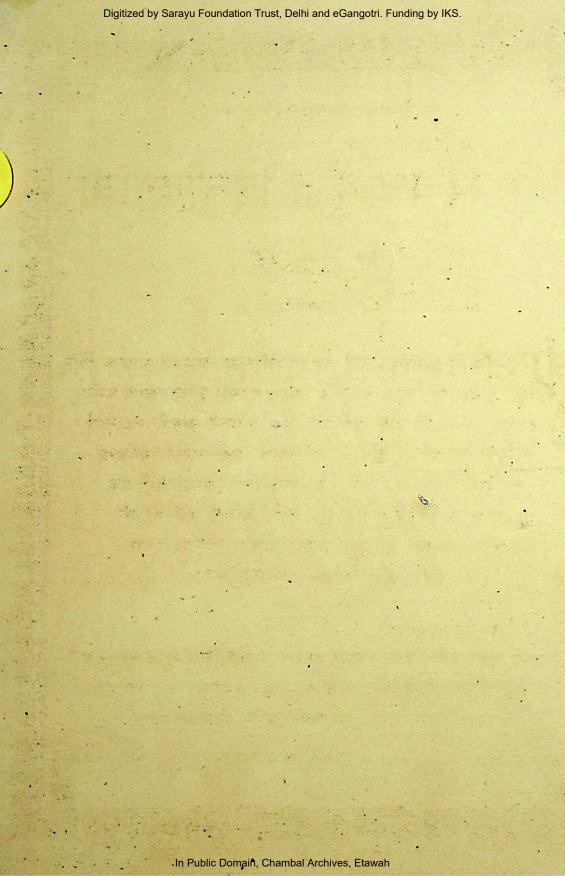
॥ श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः ॥

श्री कांँचन कुँज विनोदलता

॥ जिसको ॥

श्री १०८ श्रीमान् स्वर्गीय सवाई महाराजाधिराज श्रीमान् सावन्त सिंह बहादुर जू देव के० सी० आई० ई० पदाढ्य वीर पुंगव भारत धर्मेन्दु बिजावर नरेश की धर्म पत्नी श्री १०८ श्रीमती सवाई महारानी साहिबा श्री कांचन कुँवरि जू भारत धर्म भक्ति चन्द्रिका करहिया वारी जू देवी ने अपने निज हृदय रूपी प्रेम सरोवर से विकसित हुये कंज रूपी ललित पदों को श्री युगल सरकार पद पद्म पराग लोलुप भगवत् भक्त जनों के हितार्थ निर्माण किया ।

—ः उसीको ः—

स्वामी भक्त श्री दीवान बहादुर साहब बरजोर सिंह जू कंचन भवन तथा श्रीवेदान्तीजी महाराज के कृपा पात्र महात्मा रामनारायण दास जी जानकीघाट, श्री अयोध्या ने प्रकाशित किया ।

प्रथमबार १०००] शुभ सम्वत् २०१८ [मूल्य प्रेम
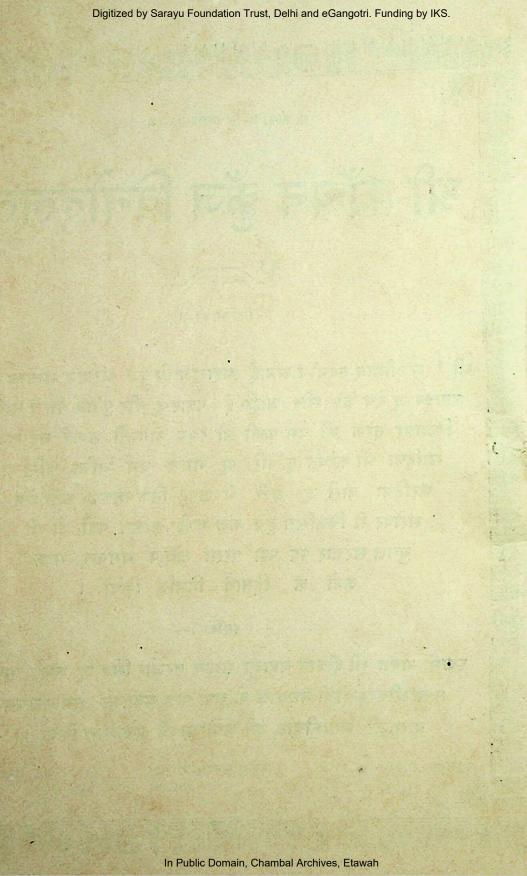
अनन्तश्री कांचन भवन बिहारी बिहारिणी जू

श्री सीतारामचन्द्राभ्यां नमः श्री गणेशाय नमः श्री मन्थ मारुतनंदनाय नमः

श्री सद्गुरु चरण कमलेभ्यो नमः

॥ श्री ॥

शुभ मंगलमई भूमिका

दोहा
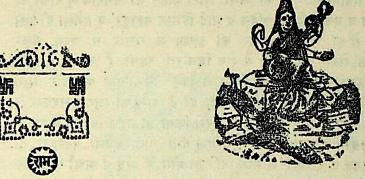
गणपति सारद गौरि वर, हिय में धारूँ ध्यान।
महारानी कंचन कुँवरि, जीवन केर बखान॥
निज भ्राता हूँ श्रीमती. कृपा पात्र हूँ दास।
निकट रहूँ सेवा करूं, श्रीमती के पास॥
बालि कालि के जो चरित, पुनि देखे बहु बार।
श्री विदेहजा सद्गुरू, विधिवत किंयो बिचार॥
श्री विदेहजा दूल्हा निकुंज, है सद्गुरु स्थान।
मेरे सद्गुरु हैं वही, तिन दीन्हों मुहिं ज्ञान॥
नित्य निरंतर रूप से, नित्य धाम में वास।
श्री मिथिलेशनंदनि सखि, कंचन कुँवरि खास॥
खास धाम से आय के, भू मंडल अवतार।
आज्ञा प्रिया प्रियतम से, प्रगटी तुम्हरे द्वार॥
बड़े रूप विस्तार से, ग्रन्थ रचे भी स्वरूप।
बरननि कीन्हो मोहि से, जिनके चरित अनूप॥

श्री प्रिय संत महात्माओं के समीप तथा सज्जन वृन्द पाठक जनों की सेवा में प्रार्थना करता हूँ अब इस सुधा सौरभ सपत्र वित सरोज काव्यादर्श की रचयेत्री जू का भाव पूर्ण जीवनी रहस्य पर थोड़ा ध्यान दीजिये—श्री मती देवी इस भूमंडल में श्री युगल सरकार की आज्ञा अथवा इच्छा से ही ग्वालियर राज्य के ग्राम करइया के जागीर दार पमार वंसीय श्री दीवान गजराजसींह जी की धर्म पतिनी श्री१०८ श्री महाराजा दतिया नरेस स्वर्गबासी भवानीसिंह जी की सगी छोटी वहिन श्री उमराव जू राजा की शुभ कुक्ष्या से हुआ है आपके दो वहिने व एक भाई थे वहिन व भाई दिमान बहादुर जू हमेशा ही पाल में रहकर सेवा करते हैं आप साकेत से ही जुगल सरकार की इच्छा से संसार में जन्म लेकर बिजावर से अयोध्या आकर सरकार की सेवा परिचरिया में रात दिन रत रहती हैं आपके गुरु जी श्री १०८ श्री महात्मा सिया शरण मधुकरिया जी ने आप को दिक्ष्या देकर सियाप्रिया सहिचरि नाम बगसा है और अटल प्रेम भक्ती अनुराग व दृढ़ उपासना की शिक्षा दी है आपको जुगल सरकार ने ही आज्ञा देकर भेजा है उन्ही की इच्छा से ही इन्होंने जन्म धारण किया श्री महल बिहारी बिहारनी जू को निकुंज का निरमाण ही इनके द्वारा होने की आज्ञा श्री रघुनन्दजू तथा प्राण प्रेयसी पटरानी श्री मिथिलेश राजनन्दनी जू की थी अथवा पहले से सम्पूर्ण सामग्री विधिवत होने के वाद में अर्चा विग्रह के रूप में अवतार धारण करना चाहा। वहां की जथा वत सेवा सम्पादन का भार श्री ग्रंथ रचयित्री श्रीकंचन कुंवर महारानीजी पर रक्खा गया व श्रीराजकिशोरीजू ने कहा कि सम्पूर्ण परिचर्या वहाँ की इनके द्वारा सुसुपस्थित हो जाने के बाद हम श्री अयोध्या रिनमोचन घाट श्री कांचन भवन पधारेंगे बस आप को वहां से अतर पान बीड़ा देकर मान सनमानत करके सरकार ने सतकार किया बस क्या था कि आप दतिया राजधानी के राज में संवत १६५१ वैशाख सुक्ल अक्षय तृतिया पुष्य नक्षत्र के सुभ लग्न में कन्या रूप में दिव्य अंशके द्वारा भूमि मंडल में अवतीर्ण होती भई। आप का शेष अवस्था वाल काल से ही प्रिया प्रियतम के संवन्धित केलि की पूर्ण कलाओं से युक्त व्यतीत हुआ है बहुत सा चरित आपकी जीवनी का है इसे बड़े थोड़े रूप में कह कर समाप्त करता हूँ। सादी के वाद जब आप बिजावर में थी वहां से श्री टीकमगढ़ पधारी व सेवा में मैं खुदही था वहां से श्रीटीकम गढ़ नरेस की आज्ञा लेकर श्री ओड़छा श्री राम राजा के दर्शनार्थ गई वहां विचार किया की पोसाक वनवायें परन्तु विचारती रही कि किस रँग की हो इस तरह विचार करते ही निद्रावसीभूत हुई कि साम सरकार रामचन्द्र जी सनमुख दर्श न दोनों युगल रूप में दिये व सरकार की पोसाग पीत बरन की थी व श्री किसोरीजू की पोसाग नील बरन की इस स्वप्न के भाव का एक पद आपने वनाया है वह श्री कांचन कुसुमांजलि के पद में है इसी प्रकार सैकड़ों पदों का भाव अलग २ है कहीं कहीं षटरितू का वर्नन है तो कही ग्रीषम रितू कही सरद रितू इसी तरह बड़े भाव भरे पदों के विलक्षण भाव हैं। विशेष समय इस लेखनी में व्यतीत करना नहीं चाहता हूँ जब यहां प्रतिष्ठा श्री कांचन भवन विहारी विहारणी जू की हुई उस समय श्री सरजू की धार बीच मांझा यानी मन्दिर से आध मील के करीब थी तथा रिणमोचन घाट पर बिलकुल जल ही नहीं था उस समय श्री ग्रन्थरचयेत्री जू श्री सरजू जी गई व पूजन की सर्व सामग्री जथा विधि भोग इत्यादि लेकर श्री सरजू जी का पूजन किया व निमन्त्रण पत्र लिखवाकर श्रीसरजू जी की भेंट किया व प्रार्थना की कि सरकार की प्रतिष्ठा पूजन में स्वयं पधारने की कृपा की जावे व पत्र श्रीसरजूजी में अर्पण कर वापिस आई रातही में सुबह देखा तो सरजू जी रिणमोचन घाट पर थोड़ी सी धारा आ गई व दिन ही भर में पूर्ण रूप से जल मई धारा सर्वत्र हो गई इनके भाव अनुराग बड़ अनूठे हैं इसमें श्री स्वामिनी श्री किशोरी जी की ही पूर्ण कृपा इन पर है विशेष रूप से वरनन में ज्जादा समय तथा विस्तार होगा इससे सूक्ष्म ही में थोड़ासा श्री अवध ही का वरनन श्री सरजू जी का करके समाप्त करता हूँ यों तो बहुत से इनके चरित्र हैं कि लिखने में बहुत बड़ी गाथा होगी श्री सीता राम श्री सीता राम—

सियावर शरण उपनाम कुँवर बरजोरसिंह
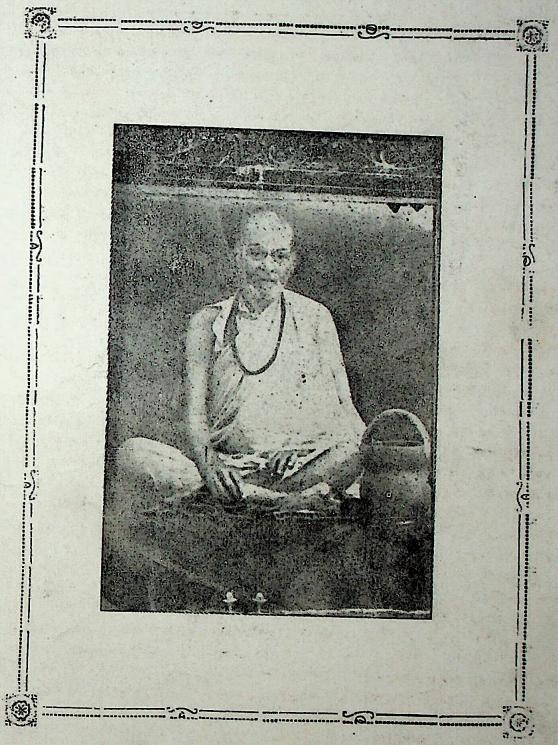
बिजावर निवासी।

श्री १०८ श्री सियाशरण जी मधुकरिया

❀ श्रीगणेशाय नमः ❀

❀ श्री गुरवे नमः ❀

श्री रानी श्री महारानी श्री सवाई महारानी भारतधर्म भक्ति चन्द्रिका कंचन कुँवरि जू देवी बिजावराधीश्वरी–श्रीमान् राजा श्री महाराजा श्रीसवाई महाराजा सावन्त सिंह जू देव–के० सी० आई० ई० बिजावर नरेश की धर्म संपन्ना पातिव्रतरता राजमहिषी के नवीन पदों की द्वितीय पुस्तक—

—: कांचन कुंज बिनोदलता की :—

भूमिका

श्री सज्जन वृन्द तथा संत जनों की जानकारी के हेतु मैं अपने को सूक्ष्म रूप से थोड़े ही शब्दों में उल्लेख देती हूँ मैं एक अल्प बुद्धि नारी हूँ ब्राह्मण वंश उत्तम कुल में जन्म पाया है। श्रीमती महारानी बिजावर की बाल सखी हूँ अथवा श्री महारानी के पिता वंश से ही मेरे तीन पुस्त की परवरिश हुई है मेरी माँ वा दादी इनके पिता के पूर्वजों की सेवा में रही हैं अथवा मैं स्वयम सेवा में हूँ श्रीमती देवी का सत्य चरित्र जो मैं लिखकर आप महाशयों को समर्पित करती हूँ–वह सब मेरे आंख का देखा हुआ है—

दोहा—

अवधपुरी कंचन भवन, रिणमोचन के पास। लाई लेखनी श्याम कर भरि हिय परम हुलास॥
दो हजार पन्द्रह सुभग, संवत अगहन मास। शुक्ल पक्ष-त्रितिया तिथी समय सुभल सुखरास॥

कवित्त—

सुमिरन करि सारदा मनाय गौर गनपति पद श्री गुरु उर ध्यान लाय चरनन सिर नाऊँ मैं।
हनुमत पद नाय माथ जोर हाथ करं निहोर बिमल बुद्धि करहु मोर ये ही वर पाऊँ मैं॥
गुप्त रहस्य भेद कछु जुगल प्रिया प्रियतम के कंचन कुंवरि संग लिखे सोइ सुनाऊँ मैं॥
प्रेम सिन्धु गहरि लहरि भाव की उमंग बढ़ी जुगल नाम के रहस्य पूर्ण अनुपम गुण गाऊँ मैं॥

श्री सज्जन वृन्द तथा श्री संत महात्माओं के समक्ष मैं अपनी श्री १०८ सवाई महारानी श्रीमती देवी भारत धर्म भक्ति चन्द्रिका श्री कंचन कुंवरि देवी बिजावर के हृदय प्रेम अनुराग से भरे हुए नवीन पद जो उनकी भक्ति भाव रस के परिपूर्णता से जिनकी रचना उन्होंने अपने मानस सर से चुन चुन कर निज श्रीमुख व कर कमलों से स्वयम बिकसित की है जो बड़भागी भगवत जन जीव इस संसार में आते हैं उनकी स्वभाविक पद्धति रहन सहन शुरू से सर्वकाल से ही उनकी भक्ति परायनता का परचय देते हैं। श्रीमती महारानी कंचन कुंवरि जू जब छोटी ही थीं तभी से इनकी रुचि भगवत गुणानुवाद करने संत संगत में बैठ कर कथा इत्यादि सुनने तथा लीला सरूपादि की झांकी व चरित्रों का चितवन करने ही में रहती थी अब श्रीमती जी की जीवनी का चरित्र की लेखनी जो लिखती हूँ कि इनके ऊपर भगवत कृपा के भरे भाव व परिचय जो प्रत्यक्ष देखे व जाने हैं वह बर्णन करती हूँ।

बिनीता—

श्यामा बाई दतिया राज्य

संक्षिप्त जीवन चरित्र

हमारी श्रीमती देवी जी के पिता ग्वालियर के जागीरदार करइया ग्राम के पमार क्षत्री वंश के थे इनके पूर्वजों की रिश्तेदारियां बुन्देल वंसी राजा महाराजों से ही होती आई हैं राजधानी दतिया में इनके परदादा रियासत के दीवान थे और बैकुन्ठ वासी दतिया महाराजा भवानी सिंह जू इन महारानी जू श्री कंचन कुवरि जू के मामा थे आपका जन्म भी दतिया का है संवत् १९५१ बैसाख सुदी तीज के दिन हुआ है। एक बार अपने माता पिता के साथ जब यह बालिका थीं तब अपनी जागीर करइया ग्राम देखने गई वहां एक विशाल परवत मकरध्वज प्राचीन स्थान पवित्र तीर्थ है वहां विचरते हुये एक महान जोगीराज के दर्शन इनको हुये- तथा कुछ संकेत से बात भी दिव्य मूर्ति जोगीराज ने श्रीमती जी से की ज्योंही श्रीमती ने मस्तक नवाकर दण्डवत की वैसे हीं वह मूर्ति महान जोगीराज की ध्यान से गायब हो गई।

दूसरी घटना

जबकि श्रीमती देवी की शादी श्रीमान विजावर नरेश से हो चुकी थी- श्रीमती का नित्य नेम था कि श्री मन्दिर जानकी निवास तथा श्री राम निवास में श्री युगल सरकार के दर्शनार्थ सायंकाल में जाया करतीं थीं। एक दिन श्री जानकी निवास की बाटिका में विचरते हुये एक गुलाब का अनुपम सुन्दर फूल श्रीमती जी की दृष्टि में आया अथवा उसको अपने हाथ से तोड़कर मन्दिर जाकर फूल श्री पुजारी रामलाल जी को दिया व ये कहा कि श्री सरकार के हस्त कमल में धारण करा दो। पुजारी जी ने श्रीमती जी से कहा कि मैं सेवा पूजा करके सर्व अंग में फूल मालादि तथा पुष्पों की सेवा करके आया हूँ। श्री अंग में कोई जगह पुष्पों से खाली नहीं है आप दर्शन कर देखिये व ये पुष्प कहां पर समर्पण करूं। श्रीमती ने करुण दृष्टि से विलोका कि श्री राम जी के हस्त से फूल खिसका व नीचे गिर पड़ा श्रीमती ने तुरन्त पुजारी जी से कहा कि मेरी सेवा पुष्प श्री सरकार ने स्वीकार करलीं देखिये हस्त का फूल अपना त्याग कर पुष्प की सेवा सरकार चाहते हैं। इससे जो फूल सरकार ने छोड़ा वह मुझे परसादी में दे दो व यह फूल सेवा में धारण करा दो- यहां पर श्री गौरी पूजन समय का भाव स्पष्ट मालूम हुआ जैसे चौपाई में कहा है— 'खसी माल मूरति मुसकानी'। तात्पर्य ये है कि प्रेम अनुराग के भाव बस हीं सरकार प्रेम बन्धन की डोरी में बँधे हैं। श्री पुजारी जी चित्त भंग हो अवाक से रह गये। व जितनी परिकर श्रीमती के साथ में थीं उन्होंने सब ने जै जै कार की। धन्य है भक्त वत्सल भगवान अपने भक्तों की भावना सदा पूर्ण करते हैं।

श्री राम निवास मन्दिर के भीतर एक छोटा सा मन्दिर श्री हनुमान जी का है वहां श्री हनुमान जी की विशाल सुन्दर प्राचीन मूर्ती है श्रीमती जी की उनमें बड़ी श्रद्धा भक्ति है तथा श्रीमती देवी पर यह बड़ी कृपालुता रखते हैं। एक बार श्रीमती जी टीकम गढ़ में थीं वहां आधी रात्री के समय कुछ स्वप्न अवस्था कुछ जागृत अवस्था में श्रीमती को अचानक दर्शन दिये- श्रीमती जी ने देखा कि महलों से कुछ ऊंचा एक बड़ा सुन्दर परवत है उसमें शिखर पर हनुमान जी खड़े हैं। श्रीमती जिस महल में थीं टीकम गढ़ में उसी जगह श्रीमती के देखते ही श्री हनुमान जी ने एक छलाँग यानी उछाल लगाकर महलों में जो अनुपम सुन्दर कोठी है उस पर आ गये कोठी के कोने में जोर से मुष्टिका मारी तो बहुत ही उज्वल स्वेत वर्ण का चांवल की तरह पका हुआ सा तमाम निकला वहां पर और भी दो चार महारानी खड़ी थीं उन सब को

थोड़ा-२ दिया प्रसाद रूप में वहीं पर हमारी भी श्रीमती खड़ीं थीं इनकी तरफ इशारा करके एक लड्डू सा बांध कर श्रीमती देवी कंचन कुंवरि जू को दिया तो श्रीमती ने उसको तोड़ा उसके अन्दर राई के दाने के बराबर दाने से निकले हर दाने में श्री सीताराम नाम अंकित था उसमें ऐसी सुवास खुशबू थी कि श्रीमती का मन हर्षित होगया मुख में डालने पर ऐसा स्वाद पाया कि जिसका स्वाद मानो कभी नहीं पाया था श्री-हनुमानजी श्री मती की तरफ देख २ मुसकाते थे बस ज्योंही श्री मती ने मस्तक रख माथा चरणों पर नंवाया कि न जाने कहां अन्तरध्यान हो गये।

प्रिय सज्जन वृन्द अभी आप यह नहीं जानते कि श्री मती कंचन कुँवरि महारानी की सासु जी श्रीमती महेन्द्र महारानी टीकमगढ़ ने जो श्रीकनकभवन अयोध्या जी में प्रसिद्ध मन्दिर बनवाया है। कनक भवन में जो प्राचीन महल बिहारी सरकार आज रहे जो मणि पर्वत की गुप्त गुफा में से श्री एक तपस्वी द्वारा श्री वीर विक्रमादित्य ने प्राप्त करके श्री अयोध्या निर्माण करा कर श्री कनक महल तैयार करा कर पधारे थे वे इस समय कहां पर हैं अथवा कौन उनकी सेवा करता है जरा ध्यान देकर सुनिये श्री महारानी वृषभान कुंवरि जी अपने गुरु जी से सेवा प्राप्त करके श्री वीर विक्रमादित्य के पधारे श्री महल बिहारी को प्राप्त करके श्री कनक भवन नया बनवाया जो इस समय है वहां श्री महल बिहारी पधराये अथवा कुछ समय बाद अपने साथ श्री मती महेन्द्र महारानी वृषभान कुँवरि जी टीकमगढ़ राज्य लाईं अथवा अपने जीवन काल में बड़े बड़े प्रेम भावना अनुरागता सहित सेवा करती रही जब उनकी यात्रा साकेत गामी हुई उसके पश्चात श्री महेन्द्र महाराज सर प्रताप सिंह अपने ससुर से प्रार्थना करके श्री महल बिहारी सरकार की सेवा श्रीमती कंचन कुंवरि महारानी बिजावर ने प्राप्त की पहले बिजावर में सेवा करती रहीं अपने हाथ से बाद को श्रीकांचन भवन बन गया तो यहां लाकर पधारे यह देख श्रीमती के गुरुदेव तथा अवध के सभी भावुक सन्त गद्गद् हो गये। मन्दिर कांचन भवन को अपूर्व घटना है जो मैं वर्णन करती हूं।

जब से टीकम गढ़ से श्री महल बिहारी जी की सेवा हमारी श्रीमती ने की उसी समय से इनके मनमें यह भावना प्रगट हुई कि श्री महल बिहारी सरकार श्री अयोध्या से टीकमगढ़ पधारे थे अथवा टीकमगढ़ से बिजावर पधारे। किसी समय ऐसा सुभाग्य हो कि फिर श्री अयोध्या जी पधारें इस विचार से श्रीमती देवी ग्रंथ रचता ने श्री कांचन भवन बन जाने का दृढ़ संकल्प किया।

अथवा अपनी जेब खर्च निजी रुपया में से रुपया बचा बचा कर रखना शुरू कर दिया कुछ दिन के बाद अपने पतिदेव श्री महाराजा बिजावर नरेश से एकान्त में श्रीमती जी ने यह अपना शुभ विचार संकल्प दृढ़ता का अटल प्रगट कर दिया श्रीमान् बिजावर नरेश ने सहर्ष अपनी सम्मति देदी तब श्रीमान् टीकमगढ़ नरेश जी श्रीमती के ससुर थे उनसे इजाजत हासिल कर श्री अवध धाम श्रीमती जी मन्दिर को जमीन तलासने आईं अथवा जहां जमीन बिकाऊ सुनी वहां पर गईं परन्तु कोई जगह पसंद ना आई क्योंकि श्रीमती जी के हृदय में कहीं श्री सरयू किनारे का भाव भरा था जैसा की श्रीमती देवी ने बहुत पहिले अपनी कविता में श्री कांचन कुसुमाञ्जलि में एक पद में लिखा है। पद में मन्दिर बनवाने की भावना स्पष्ट प्रगट की है। अथवा अपने इष्टदेव प्रिया प्रियतम से प्रार्थना करते हुए यही मांगा है कि मन्दिर श्री सरयू किनारे बनजाय व श्री कांचन भवन पद में नाम प्रगट कर दिया-पद का एक अंतरा यह है कि-'बनजाय कोई तरह से कांचन महल अवध में सरजू के तीर सुन्दर यही लालसा हमारी' देखिये कितना सुन्दर हृदय का भाव भरा अनुराग झलकता है

अब मैं जमीन के विषय में कह रही हूं कि जब श्रीमती आखिरी में रिणमोचन पर मोटर लेकर पधारी अथवा जमीन देखी श्री सरयू जी के दरशन किये श्रीमती जी के भाई का नाम कुंवर बरजोर सिंह है व बिजावर नरेश ने इनको बहादुरी का खिताब दिया था अथवा जमीन तलाशने की सेवा इनकी ही रही व अपने भाई से कहा यह जमीन मिल सकती है भाई ने तलास कर कहा मिल सकती उसी दिन जमीन खरीदी व मन्दिर बनने का महूर्त सोधन कराने को काशी जी से पंडित आये अथवा गोविन्द दास दतिया के पंडित दीक्षित जी आये व श्री अयोध्या जी के पंडित वा बिजावर के पंडित सब मिलकर सोधन किया परन्तु कोई मुहूर्त शुद्ध नहीं बताये श्रीमती जी को सुनकर बड़ा दुःख हुआ कि दो साल तक

शुद्ध मुहूर्त नहीं बनता है। नींव डालने यानी बुनयाद का मुहूर्त यह सुनकर श्रीमती देवी को बड़ा कष्ट हुआ उस दिन भोजन भी नहीं पान किया रात्री में इसी विचार अथवा सोचनीय दशा में श्रीयुगल सरकार से प्रार्थना करती रही नींद भी नहीं आई सुबह के टाइम ४ बजे के पहिले किंचित थोड़े से नेत्र झपे ही थे कि उनके सामने स्वेत बस्त्र धारण किये एक बड़ा लम्बा चौड़ा पञ्चांग लिये दिखाई दिये वह दिव्य मूर्ती मानो ब्रह्मा के ही रूपवत थी श्रीमती से वह दिव्य गौराङ्ग मूर्ती ने कहा कि कौन कहता है कि मुहूर्त नहीं बनता देखो पञ्चांग खोलकर लम्बा फैलाकर बताया कि फागुन सुदी दोज को दिन के ग्यारह बजकर पेंतिस मिनट पर मुहूर्त शुभ बनता है। श्रीमती सुनकर एकदम हर्ष के साथ उठी और मस्तक नवाकर दण्डवत की ज्यों ही सर ऊंचा उठा कर देखा तो पंडित आलोप हो गये सबेरा था ही कि बिजावर में श्री माधुरी कुंज वाले महात्मा श्री मैथिली शरण जी को बुलाया श्रीमती जी ने रात्री का सब हाल बतलाया व सब पंडितों को बुलवाया, फागुन सुदी दोज का मुहूर्त देखो कैसा बनता है तब सब पंडितों ने देखा व देखकर बड़े अचम्भा में पड़ गये, सबों ने कहा मुहूर्त बहुत ही उत्तम बनता है हम लोगों को तो पहले दिखाई ही नहीं पड़ा न विशेष इस तरफ ध्यान ही दिया यह तो श्री भगवान की ही कृपा का मूल कारण है अथवा श्रीमती के अनुराग व भाव का कि भगवान स्वयं यह मुहूर्त आपके हृदयमें धारण कराकर प्रगट कराया है।

फिर क्या था तुरन्त श्री अवध की तैयारी रही श्रीमान बिजावर नरेश के साथ श्रीमती देवी अयोध्या में आकर श्री मन्दिर कांचन भवन की नींव डाली, थोड़े ही काल में यह सुन्दर मन्दिर बनकर तैयार हो गया अथवा युगल सरकार की नवीन मूर्ती अपनी भावना उपासना के अनुकूल तैयार करवाई व बड़ी धूम धाम से प्राण प्रतिष्ठा हुई अथवा श्री महल बिहारी सरकार को मन्दिर में पधरायें प्राचीन महल बिहारी की सेवा अब भी श्रीमती जी अपने कर कमलों द्वारा ही करती हैं एक बार श्री कांचन भवन रिएसोंधन में रात्री के चौथे पहर के समय श्री हनुमान जी की जो मूर्ती श्रीराम निवास में है उन्होंने ही श्रीमती जी को सोते में दर्शन दिया और श्रीमती से कहा कि आप यहां आकर साकेत धाम में आनन्द उठा रही हैं तथा आत्म सुख में मग्न हैं बिजावर में मन्दिर राम निवास में आज भगवान की सेवा नहीं हुई तथा नौ बजे दिन तक कपाट बंद है सुनो जानकी निवास मन्दिर में आरती हो रही है महारानी ने अपने कानसे झालरों का शब्द सुना तो जाग पड़ी तब वहां कोई दिखाई नहीं दिया बड़े सबेरे तार बिजावर से आया कि राम निवास मन्दिर के पुजारी रात्री में गिर पड़े व बहुत चोट आई है सेवा नहीं कर सकते उनके पिता धर्मदास को भेज दीजिये।

पाठक गण आप सत्य मानिये श्रीमती देवी पर पूर्ण कृपा हनुमान जी की है जो श्री अवध धाम तथा संतो का दर्शन व सत संग का लाभ उठा रही हैं। श्रीमती देवी परम पूज्यनीय १००८ मधुकुरिया महाराज साकेत निवासी थे जिनकी भक्ति भावना के परम रसिक शिरोमणि श्रीअवध में प्रशंसनीय महात्मा थे हमारी श्रीमती देवी जी श्री कांचन कुंवर श्री गुरु १००८ मधुकुरिया जी महाराज की शिष्या थीं इनका उपासना का नाम गुरु जी ने सिया पिया सहचरी रक्खा था।

विशेष क्या विनय करूं श्रीमती की भक्ति भावना तथा श्रीयुगल सरकार के चरनों में प्रेम तथा अटल अनुराग का यदि मैं बरनन करूं तो मैं इतनी सामर्थ तथा बुद्धि नहीं अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार जितना भी लिख सकी वह सब सज्जनों के सामने समर्पित करती हूँ। हमारी श्रीमती देवी के सिर्फ एक भाई दीवान बहादुर बरजोर सिंह, एक बहिन है वह भी परम भक्त है अथवा इस मन्दिर में एक पैसा स्टेट का नहीं लगा न किसी से पैसा बावत कोई सहायता रुपया बावत ली न मांगी श्री किशोरी जू की अनुकम्पा से श्रीमती ने स्वयं सब किया अथवा सर्व संपति जिसको तन मन धन से अर्पण करना कहते हैं वह हमारी श्रीमती देवी ने स्पष्ट दिखलाया—इस मन्दिर पर श्रीमती ने रजिस्टर्ड में लेख जरिये रजिस्ट्री दिया है कि इस मन्दिर में बिजावर राज्य का कोई हक नहीं न उनका कोई सगा संबन्धी है ना बिजावर में उनको कोई सहारा मिला। भगवान जानकी रमण को संपति अर्पण करने पर अब तो किसी की संपति नहीं कही जाती न मन्दिर पर हक है ना किसी संपति पर होगा।

विनीता—श्यामाबाई।

सर सावन्त सिंह जू देव के० सी० आई० ई० बिजावराधीश्वर

॥ श्री सीताराम जी ॥

ध्यान

❀ चौपाई ❀
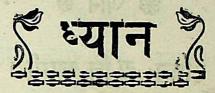
सजल नील घन तन छबि छाई ।
मन मोहन मूरत मन भाई ॥

क्रीट मुकुट शिर सोहत नीको ।
जाहि देखि रबि लागत फीको ॥

भाल तिलक केशर छबि छाजै ।
भृकुटि बंक धनु रूप बिराजै ॥

मद रस भरे नयन रतनारे ।
गोल कपोल मदन मनहारे ॥

मकराकृत कुण्डल श्रुत झूमें ।
झुक झुक युगल कपोलन चूमें ॥

तिन ढिंग कछु कुंचित रंग कारे ।
छिटक रहे कच घूंघर वारे ॥

नाशा मणि बुलाक छबि धारे ।
मृदु मुसक्यान अधर अरुणारे ॥

दिव्य दशन दीपत द्युति खासी ।
मनहु मदन मुक्तावलि गांसी ॥

कन्ठा कन्ठ मणिन गण जाला ।
हिये हार मुक्तन की माला ॥

वृषभ कंध लम्बित भुज नीके ।
अंगद तहँ बड़ मोल मणी के ॥

कर कंकण लखि ललित लुनाई ।
अंगुरित मणि मुंदरिन छबि छाई ॥

धनुष कन्ध अति द्युति दरसावत ।
लिय सायक कर कमल फिरावत ॥

पीत बसन तन घन मन भायो ।
जनु, अनंग रुचि रंग चढ़ायो ॥

सो बिचरत चमकत अति तन में ।
जनु दामिनि दमकत बिच घन में ॥

जिहि रंग कर बिचार मैं सोई ।
सो रंग राम दिखायो मोई ॥

❀ ध्यान ❀

नाभि गँभीर छटा उर खटकी।
अटकी मति निरखत छबि कटकी॥

कदलि जंघ पिंडुरिन छबि धारी।
जनु बिरंचि निज हाथ सँवारी॥

किंकिण कनक झनक सुन आली।
कोपित मदन महा रस जाली॥

पग भूषण तोड़र मणि सोहैं।
पैजनि पैज ठान मन मोहैं॥

चरण अरुण अंगुरिन छबि छावै।
तहँ नख द्युति अति रूप बढ़ावै॥

कमल पांखुरिन पै मन भाये।
मनहु ओस कण विधि बिथराये॥

को बरणै शिष नख की शोभा।
जेहि लखि अमित मदन मन छोभा॥

इमि लखि बहुर लखी उन सोहैं।
भजे कछुक हँस तकि तिरछोहैं॥

❀ श्री सीताराम जी ❀

卐 छबि 卐

❀ चौपाई ❀

सजल नील घन तन छबि सोहै।
मन मोहन मूरत मन मोहै॥

क्रीट मुकुट सिर सोह सुहावै।
जिहि विलोक रवि लज्जा पावै॥

भाल तिलक केशर छबि देई।
भृकुटि बंक मन कहँ हर लेई॥

अमिय भरे लोचन अनियारे।
नासा रुचिर अधर अरुनारे॥

गोल कपोल मनोज लजावन।
श्रवन चिबुक सुन्दर मन भावन॥

हेरन हँसन महा सुखकारी।
कंचन कुँवर देखि बलिहारी॥

❀ श्री १००८ श्री स्वामिनी जू की ❀

जन्म स्तुति

जय जयति श्री मिथलेश नंदिनि अखिल श्री भव कारणी।
सतचित आनंद रूप जय त्रैलोक्य स्ववस बिहारिणी॥
जिहि आदि शक्ति अनंत प्रकृती कहहिं वेद प्रमाण की।
सोइ जन्म ले नृप जनक के भइ जनकपुर में जानकी॥
वैसाख शुदी तिथी नौमि शुभ ग्रह देव सुर सुख पावहीं
धर मोद मन कर पुलकि तन नभ सुमन गन बरसावहीं।
ब्रम्हादि शिव सनकादि नारद आदि शारद गुन घरे
अरु आय निज पद पाय शिर नाय बहु स्तुति करे
तव भृकुटि मात्र विलास से लय होय वासर यामिनी
जय जयति श्री जग जननि जय जयजयत त्रिभुवन स्वामिनी
इमि निरख कंचन कुँवर छबि कर जोर कह सुन लीजिये
निज चरण प्रीति अपार सिय सरकार मोकहँ दीजिये

❀ स्तुति ❀

जै जै जै सिय स्वामिनी,
जै रघुबर छबि धाम ।
जयति चारुशीला सखिन,
पुनि पुनि करत प्रनाम ॥

❀ हनुमान जी की स्तुति ❀

क्षमा करहु मेरी बिनय,
सुनि लीजे हनुमन्त ।
ब्रह्मचारी व्रत धारि कै,
तुम हो पूरे सन्त ॥

कंचन कुँवरि जू देवी बिजावराधीश्वरी

❀ श्री सीतारामचन्द्राभ्यां नमः ❀ ❀ श्री गणेशाय नमः ❀ ❀ श्री गुरुवे नमः ❀

श्री काँचन कुँज विनोद लता

❀ श्रीगणेशजी की बन्दना ❀

॥ भजन ॥

जय जय गिरजा सुवन गणेश ।
विघ्न विनाशन बुद्धि प्रकाशन काटन सकल कलेश ।
तुव यश बिमल पार नहिं पावत थकित शारदा शेष ॥
मैं अबला किमि गाय बखानौं नहीं बुद्धि बल लेश ।
काँचन कुँवरि बुद्धि बर याचत ध्यावत तुमहिं हमेश ॥

❀ श्री शारदाजी की बन्दना ❀

॥ भजन प्रभाती ॥

शारद पद कमल युगल सेवौं चितलाई ।
जन मन दुख हरन करन मंगल सुखदाई ॥ रतन जड़ित सिंहासन तेहि पर शुचि कमलासन ब्राजीं जगदम्ब अम्ब अतुलित छबि छाई ॥ देव बाम आन आन नित प्रति सुख

मान मान निज निज रुचि ठान करत सेवा हर्षाई ॥ शची किये छत्र छाँह रंभा कर चौंर ढुरैं रति पान दान लिये सन्मुख दर्साई ॥ अपर देव वधू जौन जिहिकर अधिकार तौन सेवत नित आय पाँय आयसु सिरनाई ॥ इन्द्रादिक आदि देव करत सकल चरण सेव हरि हर विधि कृपा कोर हेरत टक लाई ॥ जापर तू हो दयाल ताकर दुख द्वंद जाल छिन में कर दूर देत सम्पति सुख छाई ॥ रसना पर करौ वास बुद्धि ज्ञान हो विकास पूरण हो मोर आस दीजे बर माई ॥ चरन शरण आन पड़ी कँचन कर जोर खड़ी सियवर यश भनत मात हूजिये सहाई ॥

❀ बन्दना श्री गुरु देव जू की ❀

॥ चौपाई ॥

श्री गुरु पद पंकज सिर नाऊँ। बहुरि हर्ष सियपिय गुन गाऊँ ॥

❀ बन्दना श्री युगल सरकार की ❀

॥ छंद ॥

जय जय आनंद कंद सच्चिदानंद राम घन श्यामा ।
दुष्ट निकन्दन भव भय भंजन जन रंजन सुख धामा ॥
कौशल पति रघुपति सीता पति सकल भुवन पति रामा ।

ब्रज पति गोपी पति कमला पति खगपति पति पति श्यामा ॥
असरण शरण हरण कलि मल जय मंगल प्रद अभिरामा ।
रामचन्द्र रघुनन्द सुवन जय श्री बृजचन्द्र ललामा ॥
जय भगवंत अनंत ब्रह्म जय अखिल लोक विश्रामा ।
नारायण जग नाथ विश्वंभर अमित रूप गुण ग्रामा ॥
जय श्री वामन कपिल देव जय भृगु नायक श्री रामा ।
विश्व मोहनी रूप जयति जय शंकर पूरण कामा ॥
दीन दयाल दीन दुख टारन हरन कठिन मद कामा ।
जोर युगल कर जनक लड़ैती जपत निरंतर नामा ॥

॥ छंद ॥

जय श्री दशरथ राज लड़ैते राम भक्त हितकारी ।
दीन दयाल कृपाल जयति जय करुणा सिन्धु खरारी ॥
जय प्रमोदवन कुञ्ज सुखद शुचि रघुबर शर धनुधारी ।
जय महेश मानस मयंक जय गौतम नारि उधारी ॥
हनि ताड़का सुबाहु आदि जय कौसिक यज्ञ सुधारी ।
जय शिव धनु खंडन मंडन महि भृगुपति गर्व निवारी ॥
रावणारि त्रिशिरादि बिनाशन जय पृथ्वी भयहारी ।
रघुकुल कमल प्रकाशक दिनकर अज अनंद असुरारी ॥
भूप किशोर रूप गुन आगर जय साकेत बिहारी ।

भरताग्रज रघुवंश मनि राघव सूर्य वंश अवतारी ॥
सीता नयन चकोर चंद मिथिलेश हृदय सर बारी ।
जय जग जीवन जनक लडै़ती चरण कमल बलिहारी ॥

❀ श्री युगल अवतार स्तुति ❀

जय जय श्री अवधेश जानकी रमन जयति रघुनाथा ।
राधावर जय बासुदेव श्री वृज नायक यदुनाथा ॥
क्रीट मुकुट मकराकृत छबि इत लसत कंज कर माथा ।
उत बनमाल विशाल अधर धर मुरलि लकुट लिये हाथा ॥
उत विहरत सरजू तट कुन्जन अनुज लखन लिये साथा ।
इत गोपाल ग्वाल अति प्रमुदित गावत हरि गुन गाथा ॥
युगल सरूप अनेक रूप हो भक्तन करत सनाथा ।
जपहिं नाम नित जनक लडै़ती चरन कमल धरि माथा ॥

❀ अथ श्री रामजन्म बधाई ❀

॥ बधाई ॥

राज गृह बजत बधाई आज ॥
श्री अवधेश सुकृत फल प्रगटे त्रिभुवन के सिरताज ।
नभ अरु व्योम बाजने बाजत हर्षित सकल समाज ॥
यूथ यूथ मिल नारि नवेली सज सज मंगल साज ।
भूप महल में देन बधाई आईं तज गृह काज ॥

बंदी जन जाचक जुरि आये जहँ नृप राज विराज ।
वेद पढ़ैं महिसुर मंत्रन सह ज्यों सावन घन गाज ॥
देत दान भूपाल हेम मणि भूषन गो गज बाज ।
कँचन कुंवर उमंगि उर आशिष देंहि सकल द्विजराज ॥

॥ बधाई ॥

अवधराज की मैं ढाढ़िनियां देन बधाई आई हो ॥
कौशल्या सुन्दर सुत जाये हो अबही सुन पाई हो ।
मेरे मन की आस पुजानी नाचत गावत धाई हो ॥
नृप रानी से झगरो ठाने मानत नाहि मनाई हो ।
राम लला की आज निछावर लैहों मैं मन भाई हो ॥
महरानी हिय हार चीर निज सनमानी पहराई हो ।
चली असीसत जनक लड़ैती मन वाँछित फल पाई हो ॥

॥ बधाई ॥

महल में आज बधाई हो ॥

कौशल्या जाये सुन्दर सुत श्री रघुराई हो । राजद्वार पर नौबत बाजे मैं सुन आई हो ॥ चलौ चलौ मिलि वेग अली कस देर लगाई हो । देत बुलौवा नगर नवेली नाइन धाई हो ॥ बांधत बन्दनवार द्वार प्रति मालिन ल्याई हो । दधि दूर्बा अच्छत कुंकुम फल थार सजाई हो ॥ गृह गृह

ते बनिता सज सज नृप धाम सिधाई हो। महरानी सन्मान सबन को ढिंग बैठाई हो॥ रामलला मुखचंद चन्द्र लखि हिय हुलसाई हो। कंचन कुंवर श्याम सुन्दर छबि लखि बलि जाई हो॥

॥ बधाई॥

बधाई घनी बाजै नृप के द्वार बधाई घनी बाजै॥
प्रगटे चार सुवन सुखदानी श्याम गौर सुकुमार।
पूरब पुण्य उदय भयो आली जनु पाये फल चार॥
बिधिवत जातकर्म नृप कीने दीने दान अपार।
गुरु बशिष्ट शुभ लग्न सोध तब राखे नाम बिचार॥
राम लखन श्री भरत शत्रुहन रूप शील आगार।
कँचन कुंवर निरखि सुत सुन्दर बार बार बलिहार॥

❀ बाल लीला के पद ❀

मैया गोद खिलावै ललना॥
लै उछंग कबहूँ दुलरावै कबहुँ झुलावै पलना।
कबहुँ उमँग हिय कर गहि निज कर चलन सिखावैं अँगना॥
कबहूं जात द्वार लौ लालन आवत धाय घुटरना।
जननी झपट लेत कनियाँ तब मचल जात सुख भरना॥
विविध भाँति तब मातु मनावत कहि कहि मधुरे बचना।

कंचन कुंवर विहँसि अंचल गहि लगे पान पय करना ॥

❀ अथ श्रीजानकी जन्म बधाई ❀

बधाई

बधाई राज महल में बाजत मैं सुन आई ॥
जनक राज की रानी सुनैना सुन्दर बेटी जाई ।
कंचन कलश धरे दरवाजे बन्दनवार बँधाई ॥
धरत सातिया सखी सुवासिन सोने सींक लगाई ।
द्विजवर वेद पढ़ैं आंगन में मोतिन चौक पुराई ॥
जात कर्म नृप करत सुता को जस वेदन बिधि गाई ।
सकल सुलक्षण सोच सतानंद सीता नाम धराई ॥
मिथिला नगर नारि सज सज सब भूप भवन जुरि आई ।
परमानंद सुता मुख लख सब बार बार बलि जाई ॥
महरानी सनमान सबन को पहिरावन पहिराई ।
मंगल गावैं मोद बढ़ावैं नाचैं नवल बधाई ॥
परमानन्द भूप तब दीने विप्रन दान बुलाई ।
गो गज हेम रतन आभूषण जो जेहि के मन भाई ॥
जाचक सकल अयाचक कीन्हे जैजैकार सुनाई ।
कंचन कुंवर बिमान चढ़े सुर गगन सुमन झरलाई ॥

—:o:—

॥ बधाई ॥

बधाई बाजै राज दुवार ॥

हों अबही मैं सुन कर आई सजनी भाग्य हमार ।
मिथिला पति गृह प्रगट भई है ललित सुता सुकुमार ॥
परमानन्द राज मंदिर में घर घर मंगलचार ।
नाचत गावत हर्षत आवत सुन सुन पुर नर नार ॥
यूथ यूथ मिलि सुमुखि सुनयनी सज सज कंचन थार ।
देतीं जाय बधाई नृप कों गावतं रस की गार ॥
कँचन कुँवर बिलोक लली छबि बार बार बलिहार ॥

॥ बधाई ॥

बजत बधाई जनक महल में आज सखी सुखकारी हो ।
निमिकुल विमल सुयश सुख छावन जन्मी राजदुलारी हो ॥
विश्व भरनि पोषन लय कारनि जग तारनि अवतारी हो ।
शची शारदा उमा रमा लखि सिय मुख छबि बलिहारी हो ॥
महरानी श्री मातु सुनैना निमि कुल की उजियारी हो ।
पूरब पुण्य फलो सुन सजनी भाग्य उदय भयो भारी हो ॥
पोढ़ी सेज सुता मुख निरखैं हरषैं तन धन वारी हो ।
सुन सजनी बड़ भागन पायौ सुदिन सुमंगल कारी हो ॥
घुमड़त गगन निशान होत धुन त्रिभुवन जै जै कारी हो ।

परम प्रमोद विनोद भरे उर सुन सब पुर नर नारी हो ॥
साजत मंगल साज राज गृह आवत हर्ष अपारी हो ।
मिथिलापति सनमान सकल जन बोले दान भंडारी हो ॥
जाचक किये अयाचक छन में पुजी कामना सारी हो ।
बंदी सूत बखानत जहँ तहँ निमि कुल यश विस्तारी हो ।
कंचन कुंवरि बरषि कुसुमाञ्जलि सुर किन्नर मुनि भारी हो ॥

❀ अथ श्रीसिया बाल बिनोद के पद ❀

॥ भजन ॥

पालने झूलत राज कुमारी ॥
मातु झुलावैं मोद बढ़ावैं लखि मुख छबि बलिहारी ।
हँस मुख चूम चूम पुनि गावैं बाल चरित सुखकारी ॥
कबहुँ उछंग लेंय हुलरावैं दुलरावैं पुचकारी ।
कबहूँ गहि कर चलन सिखावैं महलन अजिर मँझारी ॥
कबहुँक खेलैं खेल लड़ैती अपनी रुचि अनुसारी ।
कबहूँ रूठि चलैं जननी ते ठुमुक चाल सिय प्यारी ॥
धाय मातु तब तुरत मनावै हँस हँस दै करतारी ।
कंचन कुंवर डिठौना देतीं राई नोन उतारी ॥

❀ अथ विश्वामित्रजी की यज्ञ रचना के पद ❀

॥ भजन ॥

जज्ञ करन मुनि हृदय बिचारे ।
आन भांति नहिं बनत बनाये करहिं निशाचर विघ्न अपारे ।
तब यह सोच चले कौशलपुर ल्यावैं दशरथराज दुलारे ॥
सुन अवधेश लाय निज मंदिर दै आसन दोउ चरण पखारे ।
पूज बहुर बहु भांति जोरि कर भूप मनोहर बचन उचारे ॥
कीजे नाथ रजायसु मोकहँ कारण कौन यहाँ पगुधारे ।
मुनि कह नृप जाचन हम आये राम लषन रघुवंश उजारे ॥
सुनि मुनि बैन विकल भये भूपति गुरु समुझाय सुनीत निवारे ॥
कंचन कुंवर सकुच सौंपे सुत लै मुनिराज सुभौन सिधारे ॥

॥ भजन ॥

करत जज्ञ कौशिक मुनि ज्ञानी ॥
रखवारी दोउ बंधु करैं तहँ धनुष बान लिये सारंग पानी ।
धाये खल मारीच सुवाहू बिन फर राम हने सर तानी ॥
जैजैकार करैं सुर नर मुनि आशिष देंइ परम सुखमानी ।
कंचन कुंवर जज्ञ पूरण कर मुनि पुन मिथिला गमन सुठानी ॥

❀ मिथिला गमन के पद ❀

मुनि संग जात चले दोउ भाई ॥

गौतम नारि उधारि मार्ग महँ श्री मिथिलेश नगर नियराई ।
ठैरन ठौर खोज मुनिवर तब देख सुपास एक अमराई ॥
कंचन कुंवर कह्यो कौशिक तब मोमन मान यहां रघुराई ।

॥ दोहा ॥

रिषि आवन सुनि जनक नृप, आये सहित समाज ।
नाय शीश करि बिनय पुनि, पुर लाये मुनिराज ॥

॥ चौपाई ॥

दीन वास भल ठाम बिचारी । गवने भवन भूप सुखकारी ॥

❀ नगर विलोकन के पद ❀

लषन हिय ललक लखी रघुराई ॥
जनक नगर देखन चित चाहत कहि न सकत सकुचाई ।
प्रभु दिशि देखि नयन नीचे करि मनही मन मुसकाई ॥
लख हिय हर्ष जोरि कर गुरु सन कहत राम सिरनाई ।
नाथ लषन पुर लखन चहत जो राउर होय रजाई ॥
तौ ल्यावहुँ दिखराय आय पुनि सेवहुँ पद सुखदाई ।
धर्म सेतु पालक हंस कह मुनि कस न कहौ रघुराई ॥
करहु सुफल पुर वासिन के दृग सुन्दर बदन दिखाई ।
कंचन कुंवर पाय गुरु आयसु हर्ष चले दोउ भाई ॥

॥ पद ॥

विहरत जनक नगर रघुराई ॥
कीट मुकुट माथे पर राजै केशर खौर सुहाई ।
मकराकृत कुंडल कानन लखि दामिन द्युतिहि लजाई ॥
रतनारे नैनन में अंजन चितवन चितहिं चुराई ।
घुंघरारी जुल्फैं अति प्यारी गोल कपोलन छाई ॥
भृकुटी वंक विलोक सकुच लखि इन्द्र धनुष शरमाई ।
पीताम्बर पट जरकस जामा श्याम गात छबि छाई ॥
भुज अमोल अंगद छबि पावै कर कंकन दरशाई ।
उर मणि माल विशाल हृदय बिच भृगु पद चिन्ह सुहाई ॥
गज गति चलत वजत पद नूपुर हेरत मृदु मुसकाई ।
मिथिलापुर वीथिन आये सुनि चले नारि नर धाई ॥
कंचन कुंवरि निरखि छबि सुन्दर हर्षे हिय सुखपाई ।

॥ दादरा ॥

जुवतीं ललक झरोखन लागीं ॥
राजकिशोर विलोकहिं हर्षहिं बर्षहिं सुमन सभागी ।
निज निज मन अभिलाष करहिं सब परम प्रेम रस पागी ॥
कोउ सखि निरखि राम छबि सुन्दर कह निज रुचि अनुरागी ।
ये सिय जोग्य श्याम वर सजनी तिहुँ पुर कीरति जागी ॥

कंचन कुंवर सुवन दशरथ के मुनि ल्याये इन माँगी ॥

❀ पुष्प वाटिका के समय के पद ❀

गुरु पूजा हित सुमन नवीने ॥
लेन चले सह बंधु हर्षि हिय जनक बाग रघुराज प्रवीने ।
बाग तड़ाग निरखि सुख पायो चुनत प्रसून प्रेम रस भीने ॥
तेहि अवसर श्रीजनक नंदिनी आईं सुघर सखी संग लीने ।
कर स्नान जाय गौरी ढिग कर पूजा पग वंदन कीने ॥
सिय विहाय एक सखी सयानी विहरत बाग कुंवर दोउ चीन्हे ।
कंचन कुंवरि कुंवर दशरथ के निरखत कोटि मदन छवि छीने ॥

॥ पद ॥

सखी सो वरवस सिय पहँ आई ॥
विह्वल गात बात अटपट कह तन मन सुध विसराई ।
गहि कर पूंछत नवल अली सब काह भयो तुहि माई ॥
तब धरि धीर कहत इत आये श्याम गौर दोउ भाई ।
जिनहिं बिलोक विवस भईं सजनी रूप राशि सुखदाई ॥
जिह्वा नैन नहीं जो देखै नैनन गिरा न पाई ।
कंचन कुंवरि थकित गति मति भई कहौं कौन विधि गाई ॥

॥ पद ॥

सखि बचन सुनत सिय अनुरागी ॥

हिय प्रीति पुरातन अति जागी। रिषि नारद बैन सुरत आई॥ पिय दरस हेतु अति अकुलाई। सोई सखी अग्र कर चली धाय रघुराज प्रेम रस में पागी॥ कोई कहे सखी मैं सुने काल॥ ये रघुबंशी अवधेश लाल आये मुनि के संग में आली॥ मिथिलापुर मोहनियां डाली। इनकी कीरति जग रही छाय॥ जे लहहिं दर्स ते बड़भागी॥ यहि विधि तब राम जाय देखे॥ मन मोहन श्याम गौर पेखे। अल लोचन थकित भये सिय के रस लंपट मुख पंकज पिय के॥ दृग कंचन कुंवर अचल ह्वैगे निमिराज सों दीन पलक त्यागी॥

॥ पद ॥

सुनत पग नूपुर की झनकार॥
मानहु रतिपति दीन दुंदुभी लागे करन विचार॥
कहत लषन सन औचक तेहि दिशि चितये राज कुमार।
सिय मुख शशि लख दृग चकोर भयें चितवत पलक विसार। कंचन कुंवर परस्पर दुहु दिशि बाढ़ी प्रीति अपार॥

॥ गजल ॥

हिय में छबीली श्यामली सूरत को धारिके। दृग मूंद रहीं जानकी अस मन विचारि के॥ जावै न निकस

प्रीतम नैनों की राह से । हेरैं नहीं लडै़ती पलकैं उघारि के ॥ लख प्रेम रंग माती कर गहि जगा रहीं । सिय को सखी रसीली वानी उचारि के ॥ गिरजा को ध्यान त्याग करौ क्यों न लाड़ली । जीवन सुफल सलोनी मूरत निहारि के ॥ वहु वेर हो गई है कीजै गवन भवन । पुनि काल यही वेला ऐबी सिधारि के ॥ खोले नयन किशोरी सुनकर सखी बचन । कंचन कुंवर पधारी गृह मन को मारि के ॥

॥ पद ॥

लखी जब जात जानकी प्यारे ॥
टोर सुमन मन सिय संग पठयो गुरु ढिग राम पधारे ।
कुसुमांजलि कर मुनिहिं समरपण पुनि सब हाल उचारे ॥
करि पूजा आशिष रिषि दीनी पुजहिं मनोर्थ तिहारे ।
कंचन कुंवर पाय रिषि आशिष भे रघुराज सुखारे ॥

॥ गजल ॥

रचाया है स्वयंबर नृप जनक ने जानकीजी का ।
करै जो शिव धनुष खंडन सो हो वर जानकीजी का ॥
हजारों भूप सुन सुन कर जुरे हैं देश देशन के ।
सजी क्या रंग मख शाला धरा जहँ धनुष शिव जी का ॥

सुनत प्रण जनक का सब ही उठे कटि फेंक कसकस के ।
चढ़ाना है तो क्या धनु से छुटा नाहिं छोर पृथ्वी का ॥
नवा कर शीश सब बैठे मनो संपति गवांई है ।
धनुष तब राम ने तोड़ा रखा प्रन नृप जनक जी का ॥
कहैं कंचन कुंवर जयमाल गल श्रीराम के डाली ।
निरखि छबि प्रेम से पूरन पुलक तन मन सिया जी का ॥

॥ गजल ॥

परसुधर क्रोध कर भारी सुनत धनु भंग धुन धाये ।
चाप खंडन हुवा शिव का पड़ा तिहि ठाम चलि आये ॥
निहारे खंड दुइ धनु के जली उर ज्वाल मुनिवर के ।
कहा किसने इसे तोड़ा काल केहि शीश पर छाये ॥
सुनत इमि भूप सब जाके छिपे जहँ तहँ सो डर पाके ।
समय लखि राम तब मुनिराज के पद आय सिरनाये ॥
क्रोध भो दूर सब छिन में खुले हिय नैन पट मुनि के ।
मनोहर बैन कह श्रीराम ने जब उनको समझाये ॥
कहै कंचन कुंवर पद वंद श्रीरघुनंद गुन गाके ।
गये मुनिवर विपिन मंगल सकल पुर नारि मिलि गाये ॥

॥ पद ॥

तब मुनि ढिग निमिराज सिधारे ।

वंदि चरण कर जोर हर्षि हिय मृदुल मनोहर वैन उचारे ॥
व्याह भयो धनु टूटत शिव को तदपि एक अभिलाष हमारे ।
कौशलपति समधी सज आवहिं व्याहन चारिहु राजदुलारे ॥
कौशिक कहेउ नीक मोहिं भावै जनकराज भल मंत्र विचारे ।
कंचन कुंवर पत्र लिख भेजो अवध नगर नृप होत सकारे ॥

॥ दादरा ॥

पतियाँ लैके दूत अवध आये ॥
दशरथ राज सुनत अति आतुर राज सभा विच बुलवाये ।
देकर पत्र जुहार जोर कर दूतन चरन शीश नाये ॥
लै पाती छाती नृप लावत बांचत तन मन पुलकाये ।
खेलत रहे भरत रिपुसूदन यह सुधि पाय तुरत धाये ॥
पूंछत तात दूत यह काके कौन देश ते हैं आये ।
राम लखन प्रिय बंधु हमारे कँचन कुँवर कहां छाये ॥

॥ पद ॥

अवध नगर मंगल सखि साजत ।
व्याहन जात सुतन दशरथ नृप घुमड़ निसान बधावन बाजत ॥ नाचत नट बंदी गुन गावत नभ ते देव सुमन झर लावत । कँचन कुँवर पूजि गुरु द्विज सुर चढ़ गजराज राज छवि छावत ॥

❀ श्रीराम जी के बनरा ❀

॥ बनरा ॥

बना अवधेश राज बांका बना री ।
सिर सोने को सेहरा सोहै कलगी लाल जड़ा री ॥ बना०
भाल विशाल तिलक केशर के अंजन दृगन लगा री ।
गोल कपोलन अलकें छलकें कुंडल श्रवन सजा री ॥
नासा मोती अति छबि छावै अधर तम्बूल रचा री ।
उर मनि माल हार मोतिन के कंठा कंठ खुला री॥
भुज बाजूबंद जोशन चूरा कंकन करन लसा री ।
श्याम गात जरकस को जामा कटि पट फेंट कसा री ॥
पग नूपुर मेंहदी छबि देवे तोड़ा फबन फबा री ।
कंचन कुंवर तुरंग नचावत चितवत चितहिं ठगा री ॥

॥ बनरा ॥

चल देख सखी बना प्यारा लगे ।
सिर सोने को सेहरा सोहै कलगी लाल सितारा जडे ॥
भाल विशाल तिलक केशर के कानन कुंडल जोति जगे ।
घुंघरारी जुल्फैं अति कारी नागिन सी मुखचंद्र लसे ॥
दृग खंजन अंजन की कोरैं हँस हेरन मम प्रान ठगे ।
कंठी गोफ सुमोहन माला गज मोतिन के हार गले ॥

भुज बाजू उंगरिन मुंदरिन छवि काँचन कंकन रतन कड़े।
केशरिया बागा कटि किंकिण पट पीताम्बर फेंट कसे॥
नूपुर युत पग लसत महावर जात सखन संग तुरंग चढ़े।
कंचन कुंवर जनक महलन को वेगि चलौ सखि दरस लहे॥

॥ बनरा ॥

छवि देखी झांक झरोखन से क्या शानदार सिय को बनरा॥
इक शोर हुवा मिथिलापुर में जब निकसे गैल छैल बनरा।
सिर मौर मनोहर मनिन जड़े चहुँ ओर लगे मोतिन फुन्दरा॥
केशर के तिलक विशाल भाल द्दग खंजन बीच लसे कजरा।
मणि माल सुचौकी चार हिये छबि देत सखी फूलन गजरा॥
भुज अंगद जोशन रतन जड़े कर कंकन कंचन के गजरा।
जरकस जामा कटि फेंट कसे पनरथ छविदार रही छहरा॥
नूपुर युत अति प्रिय लागत री जावक पदकंज लगौ गहरा।
कहैं कंचन कुंवर चबाय पान हँस सैन चलाय हरौ जियरा॥

॥ बनरा ॥

सखी नीको लागै सिया को बनरा सखी प्यारो लगे।
व्याह विभूषन सुभग श्याम तन चन्दन खौर शीश सेहरा॥
नासा मोती हलन दसन द्युति अधर अरुण नैनन कजरा।
कुंडल श्रवन जुल्फ घुंघरारी हिय छबि देत सुमन गजरा॥

कंचन कुंवर कंज कर शायक फेरत हेर हरत मनरा ।
सखी नीको लगै सिया को बनरा ॥

॥ बनरा ॥

बनो री बना कौशलराज किशोर ।
सिर सेहरा गल फूलन गजरा दृग कजरा की कोर ॥
तिरछी सैन हिये तक मारत हेर हेर मुख मोर ।
घायल करत नवल नवलन सखि मिथिलापुर भयो सोर ॥
बाँके रूप जाल में फँसकर विवस भयो मन मोर ।
कंचन कुंवर छकाय प्रेमरस लै गयो री चित चोर ॥

॥ बनरी रेखता ॥

लखौ क्या सानदार सजनी सिया बनरी बनी प्यारी ॥
शीश सेहरा दृगन कजरा अलक छबि देत घुंघरारी ।
भाल विच आड़ सेंती की दसन दुति पान अरुणारी ॥
जड़ाऊ चंद्रिका सिर पै दमक बेंदी की छबि न्यारी ।
नाक वेसर श्रवन कुंडल हिये मणि हार अति भारी ॥
भुजन बाजू करन कंकन रजी मेंहदी लगे प्यारी ।
जड़ित मणि किंकिणी कटि में पगन नूपुर की झनकारी ॥
घांघरा घेर झालर में जड़े मोती दमक कारी ।
जड़ित सलमा सितारा है बनी सारी जो जरतारी ॥

कंचुकी में लगे हीरा जगामग जोति उजियारी ।
रँगे पद कंज महावर से निरख कंचन कुंवर वारी ॥

॥ बनरी ॥

बनी सखी बनरी जनक दुलारी ॥
अंग अंग रुचि सखिन सजाये भूषन वसन सँभारी ।
चारु चंद्रिका मौर शीश पर बेंदी भाल सुधारी ॥
शशि मुख पर अलखैं घुंघरारी जनु अहिनी मतवारी ।
रतनारे नैनन में कजरा भृकुटी धनु अनुहारी ॥
हार हमेल हिये बिच सोहे मुक्त माल छबिकारी ।
भुज बाजूबंद कंचन चूरी उंगरिन मुंदरी न्यारी ॥
जड़ित जवाहर कंकन कर में लखि दामिन दुति हारी ।
पग नूपुर पायल अरु बिछिया चलत मधुर झनकारी ॥
कंचुकि नील हरित लहँगा कटि सोह सुरंगी सारी ।
कंचन कुंवर सिया बनरी पर तन मन धन बलिहारी ॥

॥ बनरा ॥

मिथिलापति के दुआर राम बना बन आये ॥
तुरंग चढ़े दरवाजे ठाड़े दशरथ राज कुमार ।
रानी सुनैना करत आरती कर लिये कंचन थार ॥
दूलह देखि देह सुधि भूली कर को मंगलाचार ।

पुनि धरि धीर विलोकि राम छबि तोरत तृन महि डार ॥
कंचन कुंवर सुवस सियवर कर रूप मोहनी डार ।
राम बना बन आये मिथिलापति के द्वार ॥

॥ गारी चढ़ाव समय की ॥

आज सखी मिथिलेश महल में सिय के चढ़त चढ़ाये हैं।
जड़ित जवाहर जगमग जेवर कंचन थार भराये हैं ॥
वेंदा वीज वंदया वेसर श्रवन फूल छबि छाये हैं ।
दुलारी तिलरी मोहन माला हार हमेल सजाये हैं ॥
बाहन बाजू बस्ला पोंची ककना करन सुहाये हैं ।
छल्ला छाप अंगूठी उंगरिन हीरन जोत जगाये हैं ॥
कटि किंकिणी पीताम्बर साड़ी मोतिन कोर लगाये हैं ।
अनवट विछिया पायल नूपुर पद पंकज मन भाये हैं ॥
पहिनत सिय दूनी द्युति लखि जिय राकापति सकुचाये हैं।
कंचन कुंवर निरखि स्वामिन छबि निज नयनन फल पाये हैं॥

॥ भांवर के समय की गारी ॥

मन भौंरा रे श्री निमिराज भवन मंडप तर राजै सीताराम।
दामिन सी श्री जनक नन्दिनी रघुवर सुन्दर श्याम ॥
मिथिलापति श्री मातु सुनैना जानि घड़ी सुख धाम ।
कन्यादान कियो सीता को भये सुफल मन काम ॥

तब कुल गुरु गँठ जोरी कीन्हीं लखि शोभा अभिराम ।
कंचन कुंवर सप्रेम भांवरी दीनी सीताराम ॥

॥ गारी कोहवर की ॥

जहँ रघुवंशी सजन मिल आईं जनकपुर नारियां थारन मंगल साज सजाये । चोवा चन्दन अगर मिलाये ॥ सबके माथे तिलक लगाये भर भर रंग अबीर उड़ाये हँस दीनी अवधपति को गारियाँ । सबको हँस हँस नृप सनमानी ॥ नेगिन नेग दिये मन मानी कोहवर लाय चलीं हर्षानी । कंचन कुंवर प्रेम रस सानी अलबेली नवल सुकुमारियाँ ॥

॥ गारी कलेऊ की ॥

छबि देखौं दृगन भर गुइयां री ॥ छबि देखौं०
करन कलेऊ जनक महल में आये अवध के रसिया री ।
दो गोरे दो श्याम सलोने चारिउ छैल चिकनियां री ॥
रानी सुनैना थार परोसें जेवें रघुकुल मनियां री ।
आओ सखी मिल गारी गावो रीझैं सजन मन बसिया री ॥
कँचन कुँवर डुलावैं बिजना निरखहिं छबि सुख दनियां री ।
छबि देखौं० ॥

॥ गारी ॥

इक गारी हमारी नवीन हो सुनौ रघुवंशी लाला ॥

तुमरी मैया सुघर सयानी । सुन्दर रूप राशि सुखदानी ॥ रति रंभा छबि निरखि लजानी । रह नित नव जोवन मद सानी ॥ महराजा भये बल हीन हो । सुनौ० । निस दिन सोच सोच रहि जावे ॥ कासे जिय की बात सुनावे । उनके मन अति मदन सतावे ॥ कैसे हिय की तपन सिरावै । याही दुख से वे रहती मलीन हो ॥ सुनौ० ॥ कंचन कुंवर बिनय सुन लीजे । प्यारे कही हमारी कीजे ॥ इतनी अर्ज चित्त में दीजे । उनको मिथिलापति को दीजे ॥ विधि जोड़ी भली यह कीन हो । सुनो रघुवंशी लला० ॥

॥ गारी ॥

मेरी भँवर कली जनक नगर की नारि नवेली हँस हँस गारी गावैं ॥ हँस मुख मोर मोर रघुनन्दन रुच रुच भोजन पावैं । सिद्धि कुंवर कमला विमला अलि अटपट बैन सुनावैं ॥ सांता बहिनी के गुण लालन तुमको कहा जतावैं । मदमाती विहरें वे निस दिन कोउ अस पुरुष न पावैं ॥ जो उनको सनमान प्रेम से मन की साध पुरावैं । एक बात हम कहें लाड़ले जो तुमरे हिय भावे ॥ श्रीनिधि को निज भगिनी दीजे उनहू को मन चावे । कंचन कुंवर ऋषिहि जो दीन्हीं जग सब तुमहिं हँसावे ॥

॥ गारी ॥

सुन सुन गारी अति हर्षाने कर भोजन रघुराई जू ॥
कर अचवन तब बैठे सुखनिधि सरहज पान पवाई जू ।
कोउ सखी अतर लगाय कपोलन चूमत हर्ष बढ़ाई जू ॥
कोइ लगि कान प्रान जीवन से निज हिय साध जनाई जू ।
सिद्धि कुंवर गहि पानि लाल को बोली अति अकुलाई जू ॥
नेह बढ़ाय अवधपुर जैहो हम अवला विसराई जू ।
कैसे प्रान रहै रघुनन्दन बिन देखे सुखदाई जू ॥
तब हँस राम सिद्धि सरहज को गहिकर कर समझाई जू ।
प्रीति पुरातन तुम्हरी हमते कैसे छुटत छुटाई जू ॥
लौकिक लाज बचाय भामिनी कीजे प्रीति निभाई जू ।
अस कहि कंचन कुंवर चले पुन जनवासे हर्षाई जू ॥

॥ गारी ज्योनार की ॥

अवधराज जेवन को आये मिथिलापति गृह ज्योनारी । देख सखी शोभा भारी ॥ निज कर जनकराय पग धोये मनिमय चौकिन बैठारी । अति शीतल निर्मल कमला जल भर लाये कंचन झारी ॥ रुचि रुचि व्यंजन रचे सँवारन लगे परोसन पनवारी । बैंगन सेमै अरवी आलू लौकी छौंकी रुचिकारी ॥ कासी फल को करो रायतो

अरु गोभी की तरकारी। मटर टमाटर कटर करेला भाजी भूभी बनी न्यारी॥ निबुआ आम अचार अनोखे चटनी खटमीठी प्यारी। पापर पूरी कचौरी खुरमी सोहन हलुवा सुखकारी॥ मालपुवा तस्मई अरु मोदक बनी इमरती रसवारी। खस्ता गूभा घेवर फेनी रस भीने रसगुल्ला री॥ जेंवत जान सजन सखियां सब गावत प्रेम भरी गारी। कंचन कुंवर व्यंग बैनन सुनि हँस हँस जेवें ज्योनारी॥

॥ गारी ॥

हम गावैं रस की गारी साजन सुन कर बिलग न मानै॥
रावरि कुल की रीति अनोखी हौं केहि भाँति बखानौं।
बिन पति नारि सुतन उपजावै कौन उपाय सुठानै॥
औरो एक बात नृप सुनिये भाषत हिय सकुचानै।
वृद्ध वैस तुम नवल नारि गृह कैसे उन मन मानै॥
ताते भेज देहु उनको इत जनक राज सन मानै।
कंचन कुंवर गारि रस भीनी सुन दशरथ मुसक्याने॥

॥ गारी ॥

रुचि जेंय उठे ज्योनार हो हँस हँस साजनवां॥
सुन सुन गारी गान नवीने प्रमुदित भये प्रेम रस भीने।
पुनि कर धोय सुअंचवन कीन्हे॥ बीरा जनकराय तब दीने।

हिय प्रेमानन्द अपार हो॥ अस पुन बोले कौशलराई। राजन दीजे हमें रजाई॥ तो अब हम जनवासे जाई। सुन कर जोर जनक सिरनाई॥ करि बिनती समय अनुहार हो॥ दोऊ मिल भरे प्रेम रस साने कंचन कुंवर हिये हर्षाने दशरथ प्रीति रीति भल जाने॥ कहि मृदु बैन जनक सनमाने। जनवासे चले पगधार हो॥ हँस हंस नाजनगाँ॥

❀ पद विदा के समय के ❀

॥ दादरा ॥

अवधराज सखी चलन चहत हैं॥
हुइहै आज विदा सिया जू की घर घर पुर नर नारि कहत हैं। हेम रतन भूषन गो गज रथ दासी दास समाज सजत हैं॥ घुमड़ निसान ध्वजा फहरत लखि धुन धुन डंका चोब बजत हैं। कंचन कुंवर बरात जात सुन व्याकुल जिय नहिं धीर धरत हैं॥

॥ पद ॥

बिदा होन हित रघुवर आये।
निरखि निरखि छबि सासु सुनयना प्रेम उमँगि दृग नीर बहायें॥ पुन धरि धीर पानि गहि सिय को समय सुहावन बचन सुनाये। तुम सुखधाम राम परिपूरण भूरि सुयश

त्रिभुवन बिच छाये ॥ सिय निज किंकरि जानि लाड़ले पालहु प्रीति सनेह सुभाये कंचन कुँवरि सासु बानी सुन सकुच राम हँस शीश नवाये ॥

॥ पद ॥

हिलमिल सिय सखियन हिय लाई ।
प्रेमाकुल द्दग नीर बहावत जाय जननि उर पुनि लपटाई ॥
तेहि अवसर सुनि सोर महल में आये जनकराज अकुलाई ।
निरखि सुतामुख धीर तजी नृप प्रेमातुर उर तुरत लगाई ॥
पुन सिख देइ समय शुभ जानी धरि धीरज सुखपाल चढ़ाई ।
कंचन कुँवर चले मिथिला ते मुदित अवधपति संख बजाई ॥

❀ बरात श्री अवधपुर पहुँचने के समय के पद ❀

॥ पद ॥

सजनी सुदिन आज शुभ पाये ॥
चारहुँ कुंवर ब्याह मिथिला तें दुलहिन सहित अवधपुर आये । कौशल्या केकई सुमित्रा हर्षित मंगल थार सजाये ॥
चौकें चार पूरि दरवाजे सुन्दर बन्दनवार बँधाये ।
कंचन कलश कामिनी शिर धरि तापर जगमग दीप जलाये ॥
कंचन कुँवरि परख दुलहिन मुख हीरन हार हिये पहिराये ॥

॥ रेखता गजल ॥

अवधपुर में पधारी हैं सुता मिथिलेश की प्यारी ।
राज परिवार में छायो अमित आनन्द सुखकारी ॥
निरखि छबि जानकी की सासु मनि भूषन बसन धारी ।
हेम मंदिर दिये सिय को निरखि सुख राम महतारी ॥
कनक मनि भौन मन भावन जहाँ सियराम नित बिहरें ।
रहस रस प्रेम मद माते युगल सरकार बलिहारी ॥
सुभग कमला चारुशीला मुख्य अलियां जो सिय केरी ।
करैं सब सौज्य सेवा की मिली जेहिका जो अधिकारी ॥
कृपा कंचन कुंवर पर भी हुई श्रीस्वामिनी जू की ।
जुगल पद कंज नित चापैं हर्ष हिय लाय उर धारी ॥

❀ प्रातः समय की ❀

॥ प्रभाती ॥

प्रातकाल सिय पियहि जगावैं जागहु राज दुलारे ।
पीताम्बर पट मुख से टारहु जीवन प्रान हमारे ॥
चंद्रकला छबि छीन भई है उडुगन गगन छिपाने ।
दीपक जोति मलीन भई पिय सेज कुसुम कुम्हलाने ॥
रजनी बीत गई मन भावन दिनकर किरण पसारे ।
बंदीजन विरदावलि गावत ब्राह्मण वेद उचारे ॥

चारुशीलादिक अली भली विधि सेवा सौज्य सुधारे ।
दरसन हेतु आय अति आतुर परसत चरण तुम्हारे ॥
भरत शत्रुहन लषन सखन युत ठाढ़े राज दुआरे ।
श्रीसरजू स्नान करन हित तुमहि बुलावत प्यारे ॥
सुनि सिय वचन जगे रघुनन्दन नयन पलक पट टारे ।
कंचन कुंवर सुमंगल आरति कर तन मन बलिहारे ॥

॥ पद ॥

किशोरी जू हेरती बाट महल में ।
भई अवसेर न आये रघुवर उलझे कौन चुहल में ॥
कै रसकेल करत वगियन में कै श्री सरजू जल में ।
कै नृप राज सभा विच राजैं कै श्री अंब भवन में ॥
भूँखे हुइहैं प्रान नाथ सखि यही सोच सिय मन में ।
कंचन कुंवर जोर कर कहती आये प्रभु तेहि छिन में ॥

❀ भोजन समय के पद ❀

युगल मिलि जेंवत हैं ज्योनार ॥
षटरस व्यंजन सरस सलोने, रुच रुच सखिन सँवार ।
चटकीले तीखे मधु मीठे परसे कंचन थार ॥
मनिमय चौकी सिय पिय सोहैं अलिगन करत वयार ।

प्रीतम कौर देत प्यारी मुख हँस गल बँहियाँ डार ॥
जेंवत मन सकुचात लाड़ली लाल करत बलिहार ।
कंचन कुँवर जेंय कर अँचवन राजत दोउ सुकुमार ॥

॥ पद ॥

महल बिच राजत युगल किशोर ।
चन्द्रकला तन अतर लगावै अधर पवाय तमोर ।
सुभगा सुभग हार सुमनन के पहिरावत कर जोर ॥
चारुशीला अलि चरन दवावै हेरत टुक मुख ओर ।
कंचन कुँवर लिये कर विजना निरखत छबि चितचोर ॥

॥ पद ॥

खेलत चौपर रसिक बिहारी ॥
दांव लगाय होड़ बद खेलैं रघुनन्दन श्री जनक दुलारी ।
पिय हारहिं तो कुंवरि सांता हुइहैं श्रीनिधि प्यारी ॥
जो सिय हार जाहिं तो प्रीतम मन भाई कर होहिं सुखारी ।
कहत सखी सब स्वामिनि जीती हारे चौसर चतुर खिलारी ॥
कंचन कुँवर कहै सिय पिय से अब दीजे पिय नन्द हमारी ।

॥ पद ॥

चौथो पहर दिवस जिय जानी
श्रीरघुराज साज तन भूषन राज दुआर जात सुखमानी ।

भरत लषन रिपुदवन सखन सह बन्दे चरन जोर जुगपानी ॥
हुइ सवार सरजू तट आये विहरत सखन सहित सुखदानी ।
उदित मयंक निरख नभ सुन्दर बोले अनुज सखन सनमानी ।
कंचन कुंवर भवन अब चलिये लखहु तात रजनी नियरानी ॥

॥ पद ॥

आये भवन भक्त सुखदाई ॥
बन्दन कीन चरन युग पितु के पुनि जननी पद शीश नवाई ।
मेवा पान पाय लै आयसु पुनि निज भवन चले हर्षाई ॥
कंचन कुंवर सुरति हिय लागी कब सिय बदन विलोकहिं जाई ॥

॥ पद ॥

सिय मुखचन्द्र चकोर पिया नैना ॥
देखत दौर दूर ते आतुर जाय लगे दृग पलक लगैना ।
बिछुरन बिहरन छन सहि जावै नीर छीर ज्यों विलग रहैना ॥
पीवत रूप सुधा रस निस दिन प्रेम पियासे तृप्ति लहैना ।
कंचन कुंवर फन्द अलकन के उलझ रहौ चित सुलझि सकैना ॥

॥ पद ॥

आवत लखि पिय रसिक शिरोमन ॥
हर्ष हृदय मिथिलेश कुमारी लागी श्याम सरूप विलोकन ।
इकटक भरत टरत पल नाहीं रूप सुधारस नैन पियूषन ॥

पुनि कछु सुरत संभार लाड़ली व्याकुलता निज समभ्ह मनहिं मन। तब कछु सकुच विहँस कर गहि सिय लाई श्री रघुवंश विभूषन ॥ कंचन कुंवर रतन सिंहासन व्राजे युगल भक्त भय भंजन।

॥ आरती ॥

आरति सखिन सजोये धरी है॥
प्रेम के पुष्प नेम की बाती भक्ति भाव के घृतन भरी है।
ज्ञान को संख धर्म को घंटा ध्यान की धुन सुन श्रवन परी है॥
शांति शील की धूप सुवासित कोह काम की कलख जरी है।
कंचन कुंवर युगल पद वंदत सरन स्वामिनी आन हरी है॥

॥ पद ॥

कर आरती जन मन सुखकारी।
पुनि सखि थार सजाय सुचौकिन विनय करत कीजै प्रभु व्यारी॥ रुख लखि धोय चरन दै आसन भर लाई जल कंचन भारी। रुच रुच व्यंजन मधुर सलोने मिलि जेंवत दोउ प्रीतम प्यारी॥ व्यारी करत करत अलसाने तब अलियन रचि सेज सँवारी। कंचन कुंवर धोय मुख कर पद व्राजे पलँग युगल बलिहारी॥

—❧—

॥ पद ॥

ये दोउ जीवन प्रान हमारे ॥
राका शशि मिथिलेश नन्दिनी दिपत दिवाकर राज दुलारे।
सैन कुंज सुख सेज विराजत अरस परस असन भुज धारे ॥
पिया अंक सिय सोहत कैसी दामिनि जिमि घन श्याम मझारे।
कंचन कुंवर नींद मदमाते झुक झुक जात नैन रतनारे ॥

॥ पद ॥

किशोरी जू अंक में सोय गईं पिय गल बहियां डार ।
निरख सखी कर जोर कहत सब सुनिये राज कुमार ॥
दीजे अब पौढ़ाय सेज पर मानिय बिनय हमार ।
पुनि धीरे प्रभु आप पौढ़िये जागैं ना सुकुमार ॥
सुनि सखि बचन लाय हिय सिय को सोये प्रान अधार।
कंचन कुंवर युगल पद चापै निरखत छबि बलिहार ॥

॥ राग गौरी ॥

सोये सिया रघुराई महल्ल बिच सोये सिय रघुराई ॥
नृत्य गान अब बंद करहु सखि धरिये साज उठाई ।
झरफैं डार देहु चहुँ दिशि ते पवन चलत पुरवाई ॥
खबरदार कर राख पहरुवा अर्ध निशा नियराई ।
नूपुर धुन नहिं होय री आली चलिये चरन दबाई ॥

कंचन कुँवर जुगल पद पंकज चापत हिय हर्षाई ।
महल में सोये सिय रघुराई ॥

❀ पद मंगल आरती को ❀

चलौ सखि मंगल आरति गावैं ॥
रजनी बीत गई सब सजनी सिय पिय जाय जगावैं ।
मंजन कर मुख चन्द्र धुवावैं पुन असनान करावैं ॥
सुन्दर तन आभूषन साजैं लै दरपन दरसावैं ।
सुमन हार रच रच पहिरावैं अतर सुगन्ध लगावैं ॥
मंगल आरति साज उतारैं घंटा संख बजावैं ।
बहु मेवा पकवान मिठाई मंगल थार सजावैं ॥
भोग लगाय करावैं अँचवन रच पुनि पान पवावैं ।
कंचन कुँवर निहार युगल छबि निज नैनन फल पावैं ॥

❀ होली पद बसंत ❀

कहत सिय पिय से मोद भरी ॥
अब रितु राज सुहावन आवत चहुँ दिशि धूम परी ।
साज समाज बसंत खेलिये मो हिय चाह खरी ॥
अतर अबीर गुलाल अरगजा केशर घोर धरी ।
कंचन कुँवर लाल सुन हर्षैं हँस बलिहार करी ॥

॥ राग बसंत ॥

खेलैं बसंत सरजू के तीर। मिथिलेश लली रघुवंश वीर॥ रचि रंग कमूरिन घोर धरे। किस्ती अरु थार गुलाल भरे॥ दोउ खेलत फाग उमंग भरे। तन सोह सुरंगी कुसुम चीर॥ इत सोह लली संग नवल बाल। उत अनुज सखन युत अवध लाल॥ कर हो हो होरी देंय ताल। भर झोरिन डारें रंग अबीर॥ सुन खेलत होरी लाल लली। पुर नार सकल सज धाय चलीं॥ मिल अपनी अपनी यूथ भली। कर गान बजावैं डफ मंजीर॥ लखि आगे ठाड़े रोक गैल। निज गोल बांध अवधेश छैल॥ भर बाल गुलालन मूठ मेल। सब भाज गईं सिय जू के तीर॥ निमिराज कुँवरि सनमान सबै। हिय लाय कहे मृदु बैन तबै॥ मिलि खेलिय कंचन कुंवरि अबै। तुम भले समय आईं जु बीर॥

॥ रसिया ॥

रसिया रस फैल करैं बांके।
घेरत नवल नारि इकली कर डारत नव योवन डांके॥
पिचकारिन रंग मार भिजावत कर हो हो मद रस छाके।
बर बस लाय हिये सुख पावैं घूंघट खोल वदन ताके॥
लख यह हाल सकल सखियन ते पुनि पुनि सिय स्वामिनि

भाखैं। है कोइ बीर अली मम दल में गहि लावै रघुवर जाके॥ बोली चंद्रकला तेहि अवसर सिय पद कमल सीस नाके। कंचन कुंवर जो आयसु पाऊँ पल में पेश करूं लाके॥

॥ रसिया ॥

गहि ल्यावो बीर चपल रसिया॥
सिय आयसु लहि चंद्रकला तब पकड़े जाय अवध बसिया।
बंधु सखा सब निरखत ठाढ़े दै कर ताल हँसैं सखिया॥
लै आई निज गोल नवेली भेष बनायो नागरिया।
बैठारे गहि बाँह जाय पुन ब्राजीं जहँ सुकुमार सिया॥
बिहँसि लाड़ली पान दियो मुख सकुच लाल मुख मोर लिया।
कंचन कुंवर विनय कर पुनि पुनि तब छूटे अवधेश पिया॥

॥ होरी ॥

बहुत होरी खेलत बेर भई।
कहत प्रिया हँस अवध छैल से रजनी आय गई॥
बंद करहु पिचकारी प्रीतम हौं बहु बार कई।
भवन चलहु अब छैल छबीले गह सिय बांह लई॥
बहुर खेलवी लाल सबेरैं होरी रंग नई।
कंचन कुंवर बिहँसि रघुनन्दन आयसु सखिन दई॥

—❧—

॥ होरी ॥

चलो अब वेग भवन सब गोरी ।
प्रान प्रिया आयसु मुहिं दीनी बंद करहु रंग होरी ॥
कर असनान सरित सरजू जल सुरंग चीर पलटो री ।
कंचन कुंवर महल दोउ आये परमानन्द लहोरी ॥

॥ होरी ॥

उठे पिया भोर मधुर मुसक्यात ॥
अपने होरी खेली प्रीतम जनक लली जू के साथ ।
सब सखियन मिल नाच नचायो पकर पकर पिय हाथ ॥
गाल गुलाल लगो दृग अंजन पोंछ तजिय सकुचात ।
कंचन कुंवर हँसी सिया प्यारी लख पिय नैन लजात ॥

॥ कहरवा ॥

सखी सज ले साज होरी को लागो महिनवां ॥
धरले री भर रंग अली डफ बाजै आज दुआरे पै ठाढ़ो सजनवां । काहे न होरी खेलै अरी तज कै अब लाज क्यों दूर बैठी भवनवां ॥ भागन से फागुन मिस पाये श्री रघुराज प्यारे अवध ललनवां । कंचन कुंवर पौर लौं आनि के खोल किंवार देखे री मन के हरनवां ॥

—❀—

॥ होरी धुन कहरवा ॥

मिथिलापुर बिथिन बीर खेलें रंगीले होरी ॥
जनक नगर में धूम मची ठाड़े रघुबीर भरे गुलालन झोरी। गल फूलन गजरा दृग कजरा माथे मंदीर गोल कपोलन रोरी॥ नवल बाल मग निकस सकै ना भर डारे अबीर रंग केशर पुन घोरी। कंचन कुंवर सिद्धि सरहज सुनि आई युही तीर संग सखी ले गोरी॥

॥ कहरवा ॥

सरहज से लाल खेलो सम्हर अब होरी॥
जे न अवध की जानो पिया मिथिला की बाल श्री निमिराज किशोरी। कहि ऐसे झपटी सब इक संग दैकर ताल ले ले रंग कमोरी॥ रूप जाल उलझाय लाल औचक तिहि काल आय मली मुख रोरी। कंचन कुंवर भवन गहि लाईं हारे रघुराज जीती श्री राज किशोरी॥

❀ होरी कहरवा ❀

मिथिला की बाल खेलैं लाल से होरी।
सरहज सारी प्यारी प्यारी गावैं रस की मीठी गार झपट मलैं मुख रोरी॥ नारी वेष बनाय लगावैं वेंदी भाल देख हँसै मुख मोरी। निज मन भाये नाच नचावैं हँस भाखैं

कहिये सरकार जै जै जनक किशोरी ॥ हार मान हिय हरष कहत हँस जय जय प्यारी प्रान अधार जय जय जीवन मोरी । जनक सुता सुन मृदु मुस्कानी कंचन कुंवर कहै बलिहार अचल रहे यह जोरी ॥

॥ लेद ॥

ननदोई रँगीले छैल समर पिचकारी गहौ कर श्यामले । अरे हां हो छबीले ॥ आज हमारो दांव है । नित करत रहे तुम फैल ॥ समर पिचकारी गहौ कर श्यामले । होरी के खिलवार हो ॥ हम धूम सुनी पुर गैल । समर० ॥ जान परै अब लाड़ले । को काहि भिजावै पैल ॥ समर० । हौं हारौं तो संग चलौं ॥ जीतो अंसन भुज मेल । समर० ॥ कंचन जान न हौं दऊँ । रचि रंग महल रसकेल ॥ समर० ॥

॥ लेद ॥

होरी खेलैं सियां के संग अवध पिया प्यारे कमला तीर री । अरे हां हो लली संग इत मिथिलापुर नागरी उत संग सखा रघुवीर ॥ अवध पिया० । अरे हां हो लिये कर केशर रंग पिचकारियां ॥ झोरिन में भरे अबीर । अवध० । अरे हां हो भये सखारे नवल दोऊ रंग से तन भीजे कुसुम्मी चीर ॥ अवध० । अरे हां हो बदरवा लाल गुलालन छा रहे ॥

रंग वरसे ज्यों घन नीर ॥ अवध० ॥ अरे हां हो होरी कंचन कुंवर सु गावही डफ बाजै ताल मजीर ॥ अवध० ॥

॥ होली नई तर्ज धुन दादरा ॥

रची रंग होरी हो श्यामलिया ।

जनक नगर में धूम भई है वरस गुलाल रहौरी लखौ चहुँ ओरी हो श्यामलिया ॥ हाट बाट कोऊ निकस न पावत ॥ छैल करै वारा जोरी मलै मुख रोरी हो श्यामलिया । औचक आज मिले मारग में भरे अवीरन झोरी करत हो होरी हो श्यामलिया ॥ झट पट धाय आय हँस बोले गह कर वहियां मोरी ॥ कौन तू गोरी हो श्यामलिया ॥ हौं सखी सकुच भरी नहिं बोली उन भर मोह अंकोरी ॥ हार हिय टोरी हो श्यामलिया ॥ वरबस लाल गुलाल मलो मुख केशर के रंग बोरी चुनर नई मोरी हो श्यामलिया ॥ चूम कपोल खोल चोली बंद हँस हँस कर चित चोरी ॥ लाज हरी मोरी हो श्यामलिया ॥ कंचन कुंवर भवन भज पैठी ॥ बाल लाल डर भोरी दिनन की थोरी हो श्यामलिया ॥

॥ धुन नई तर्ज कहरवा॥

मिथिला में आज मची होरी । मिल खेलैं छैल नवल गोरी ॥ कोऊ सखी कर पकर लाल को चूम कपोल मलै रोरी ।

कोऊ बेंदी भाल लगावे अंजन आंजे दृग कोरी ॥ मिथि० ॥
कोऊ पीताम्बर लै भागी कोउ सखि सारी लै दौरी ॥ मिथि० ॥
जनकलली ढिग लाय कहैं सब जै अवधेश नृपति छोरी ॥
कंचन कुंवर निरखि पिय मुख छबि मुसकानी सिया मुख मोरी ॥ मिथिला में आज० ॥

॥ कहरवा ॥

मिलि खेलैं होरी लाल लली ॥
उड़े गुलाल लाल भये बादर केशर रंग पिचकारी चली ।
दोऊ दिस कुमकुम मार मची है तक तक अपनी दांव भली ॥
घेर लियो अवधेश छैल को चहुँ दिशि ते मिलि धाय अली ।
वेंदी भाल लगाय दृगन दै अंजन गाल गुलाल मली ॥
कंचन कुंवर कहत दरपन लै निज मुख निरखो छैल छली ।
मिलि खेलैं होरी लाल लली ॥

॥ रसिया ॥

रसिया ने लाज हरी मोरी ॥
मैं अपनी मग चली जात ती धायो कह हो हो होरी ॥
हौं सकुचाय चली मैं आतुर आन गही कर वरजोरी ॥
घूंघट खोल गुलाल लगायो रंग केशर चूनर बोरी ॥
कंचन कुंवर छैल रघुनन्दन उर मणि माल झटक तोरी ॥

॥ रसिया ॥

कौशल राजकुंवर अलबेलो नेह लगाय गयो ॥ गयोरी आली नेह लगाय गयो ॥ नेह लगाय गयो प्यारो रसिया नेह लगाय गयो ॥ जब से गयो मोरी सुधहु न लीनी ॥ ऐसो निठुर भयो ॥ भयो री छैला० ॥ फागुन में पिया अवध गवन कियो मुंहि दुख दुसह दयो ॥ दयोरी छैला० ॥ कंचन कुंवर जुलुफ जालों में। जुलुफ जालों में मन मृग फांस लयो ॥ लयोरी सखि नेह लगाय गयो ॥

॥ रसिया ॥

आज अवध में होरी रे रसिया, आज अवध में होरी हो ॥ जुर आईं सब नवल नागरी कहि जै जनक किशोरी ॥ केशर रंग भरे मटकिन में भरे मटकिन में ॥ अबीर गुलालन झोरी रे रसिया ॥ आज० ॥ उत से धाये अवध छैल सज बंधु सखा संग जोरी हो रसिया ॥ आज० ॥ कंचन कुंवर ताल दै दै कर। ताल दै दै कर खेलैं परसपर होरी रे रसिया ॥ आज अवध में होरी रे रसिया ॥ होरी हो रसिया बराजोरी हो रसिया ॥ आज अवध में होरी रे रसिया ॥

॥ रसिया ॥

बन आयो छैल अवध प्यारो बन आयो ॥

शीश मुकुट श्रवनन में कुण्डल घुंघरारी जुलफन वारो।
दृग कजरा की कोर कटीली तिरछी सैन वान मारो॥
कंचन कुंवर घेरि मुहिं इकली रंग केशर भर भर डारो।

॥ होरी ॥

सखीरी कैसे खेलौं लाल संग होरी, वो तो छैल करै बरजोरी।
जबसे फागुन मास लगोरी मो हिय सोच बड़ोरी॥
बहुत दिनन से जोर जोर रंग मटकन घोर धरो री।
अब डफ ढोल बजन सखि लागे चहुँ दिशि हो रही होरी॥
लाज भरी मैं निकस सकोंना छैल खड़े मो पौरी।
जो खेलूं पुर लोग हँसें सब दै दै ताल हथौरी॥
नहिं जाऊं तो विरह ज्वाल में यह जिय जात जरोरी।
कंचन कुंवर कहत चल खेलो लाज पै गाज परो री॥

॥ होरी ॥

सखी डफ वीथिन बाज रहो री, देख निकस चल पौरी।
अवध छैल सज संग सखा लै खेलत आवत होरी॥
वे देखौ उत कनक भवन ते आईं राज किशोरी।
सकल अली सिर धर भर ल्याईं केशर रंग कमोरी॥
कर कमलन कंचन पिचकारी भरी गुलालन भोरी।
कंचन कुंवर निकर जब आईं लाल कहैं हँस होरी॥

॥ फाग ॥

हँस कहत लाल रँग होरी है, अब होरी है बरजोरी है ॥
सुन सिय कहैं पिया आज फँसे जू रोज करत चितचोरी है ॥
मारी तक पुनि रँग पिचकारी बिहँसि लली मुख मोरी है ॥
कंचन कुँवर धाय कर गहि पुनि मली कपोलन रोरी है ॥

॥ फाग ॥

इन नैनन श्याम लगो गुइयां, बिन देखे नेक रहत नैयां ॥
जब से फागुन मास लगौरी तब से चैन लहत नैयां ॥
सुन सुन श्रवन ढोल डफ की धुनि जियरा धीर धरत नैयां ॥
धूम मचावत अवध छैल नित डारत रंग डरत नैयां ॥
घरै करत पुर लोग चवाई अब सखि लाज बचत नैयां ॥
कंचन कुँवर न मानत बर्जी हो हारी पर पर पैयां ॥

॥ फाग ॥

होरी में लाज रहे कैसे, रंग डारत राम सहैं कैसे ॥
बाजत डफ द्वारे सुनि श्रवनन अब सखि चैन परै कैसे ॥
संग की सखी सब होरी खेलैं ये जिय धीर धरे कैसे ॥
अवध छैल लै नाम हमारो पुन पुन बीर कहै ऐसे ॥
निकस वेग किन होरी खेलै गोरी धाम दुरी कैसे ॥

अब बदनाम होन चाहत री लागौ नेह छिपे कैसे ॥
कंचन कुंवर सरन प्रभु आई राखौ नाथ रुचे जैसे ॥

॥ फाग ॥

सखि उठ किन होरी खेलैरी ॥ भर झोरी गुलाल की लैलेरी ॥
सज आभूषन वसन नवल तन नैनन सुर्मा दैलेरी ॥
यह अवसर फिर काल न पैहै बैठ भवन पछतैहै री ॥
कबको तोहि बुलावत रसिया फेर कहीं चल जैहै री ॥
मान सखि चल वेग द्वार तू जीवन को फल पैहै री ॥
लाज भरी जो तू नहिं खेलै उर अभिलाषा रैहै री ॥
कंचन कुंवर लगी बहु दिन की आसा आज पुजैहै री ॥

॥ फाग ॥

सुन हो हो दौर चली द्वारे, तज लाज काज ग्रह के सारे ॥
केसर रंग कमोरी भर भर झांक झरोखन से डारे ॥
खोल किवार धसे तब रसिया राज कुंवर मद मतवारे ॥
घूंघट खोल गुलाल मलो मुख चूम कपोल हँसे प्यारे ॥
कंचन कुंवर भई मन भाई निरखत छबि तन धन वारे ॥

॥ फाग ॥

मुंहि छांड़ौ छैल परौं पइयां जिन डारो लाल गले बइयां ॥
डगर बगर के लोग चवाई सास ननद घर में नइयां ॥

राजकुँवर तुम निपट निडर हो तुमको लाज लगत नइयां ॥
मोतिन माल हिये की टोरी झकझोरी कोमल बइयां ॥
केशर रंग चूनर रंग डारी अबीर मलौ मुख के मइयां ॥
कंचन कुँवर लखै जो यह गत सतरेहै प्यारो सइयां ॥

॥ फाग ॥

हिलमिल खेलै होरी सखिन संग हिलमिल खेलै होरी लाल
रघुवर राजकिशोरी सखिन संग हिलमिल खेलै होरी लाल
केशर रंग अबीर अरगजा वीथिन फैल रहोरी लाल
लाल गुलाल भरे झोरिन में घालत कह हो होरी लाल
इत आयसु लै जनकलली की भर भर रंग कमोरी लाल
नवल बाल सब गोल बाँधकर लाल गहन को दौरी लाल
धाय धरे अवधेश छैल को देकर ताल हथौरी लाल
कंचन कुँवर लाय सिय पिय ढिग हर्ष गाँठ गह जोरी लाल

॥ फाग ॥

होरी खेलत सजनी साम भई, हँस लाल लली निसि हेर कही ॥ सुनि पिय बैन लली मुसकानी उर अन्तर की जान लई ॥ आयसु बोलि सखिन सिया दीनी होरी बंद कराय दई ॥ कंचन कुँवर पधार सु आसन छबि लखि आरति साज लई ॥

॥ आरती धुन फाग ॥

होरी–आरति आली होन लगी, सुन जैजै जै धुनि होन लगी ॥
ब्राजे युगल तीर सरजू के सलिल छटा छहरान लगी ॥
अबीर गुलाल भरे थारन में मध्य सो दीपक जोति जगी ॥
देव विमान चढ़े छबि निरखैं गगन सुमन झर होन लगी ॥
कंचन कुँवर निरखि छबि तन मन वार निछावर होन लगी ॥

॥ फाग ॥

दोऊ होरी के छाके रसिया, मिलि भवन चले मनके बसिया ॥
आस पास नव बाल रंगीली मध्य युगल छबि मुख ससिया ॥
रंग महल बिच आप पधारे अवध छैल सुकुमार सिया ॥
कंचन कुंवर नहाय बिमल जल सुन्दर तन शृंगार किया ॥

॥ पद ॥

रतन सिंहासन सिया पिया ब्राजै ॥
आस पास कमला बिमलादिक चारुशीला सखि सन्मुख राजै ॥ कोऊ सखि चमर छत्र व्यंजन लिये कोऊ सखि पानदान कर साजै ॥ कोऊ सखि सुमनहार पहिरावहिं कोऊ सखि दरपन लिये छबि छाजै ॥ कंचन कुँवर चरन युग चापत कोऊ लखि शोभा रति पति मन लाजै ॥

❀ पद ग्रीष्म समय के ❀

॥ धुन दादरा ॥

सहूँ कैसे ग्रीषम की ज्वाला करारी।
दया कर के दरसन देना बिहारी॥
सुहावे न खसखस न सौरभ सुगंधी।
जुड़ावै न तन को ये सीतल ब्यारी॥
दसा दीन विरहन की आके निहारो।
श्रवन दै सुनौ वेग बिनती हमारी॥
नई हैं न मेरी लगन छैल तुम से।
ये पूरब जन्म की पुरातन है यारी॥
सुवस प्रेमियों के सदा ही सियावर।
मिले सुन के कंचन कुँवर पुकारी॥

॥ धुन दादरा ॥

सखी ग्रीष्म रितु सीतमई है॥
तपन तन मन की दूर भई है॥
अवध पिया आये भये मन भाये
हर्ष हिय प्रीतम लाय लई है॥
सजादे सिजरिया झले न विजनिया
पवन लगे छतियां कम्प रई है॥
हैं कंचन कुँवर ये आनंद की घड़ियां
वियोग्य की रतिया बीत गई है॥

॥ धुन दादरा ॥

अब साजौरी ग्रीष्म में खसखाने ॥
अवध छैल घर आये सजनी सुख पाये निज मन माने ॥ चुन चुन कुसम सिंगार श्याम तन लख छबि लोचन ललचाने ॥ ज़ुल्फ़ जाल में चंचल द्रिग दोउ तरफरात अति उलझाने ॥ कंचन कुँवर मधुप इम निसदिन रूप सुधा रस मसताने ॥

॥ धुन दादरा ॥

ग्रीष्म की तपन तन सुख सरसै ॥
जब अवध छैल छतिया परसै ॥ अगर उसीर हमें ना चहिये पिय छबि रूप सुधा बरसै ॥ सर सरिता की है न जरूरत प्रेम सिंधु उमड़ौ उरसे ॥ कंचन कुँवर वियोग विष्मता दूर भई ससि मुख निरखै ॥

॥ ठुमरी ॥

सखि ग्रीष्म रितु आवत लख अब रच खस खाने साजे री ॥ सरजू तट शुभ सुमन कुंज बिच लाल लली छबि छाजे री ॥ सुमन शृंगार किये पिया प्यारी सुमन सेज सखि भ्राजे री ॥ कंचन कुँवर सुमन पंखा लिये ढोरत सनमुख राजै री ॥

॥ पद ॥

सखी सिया प्यारे सुरत बिसराई ॥
सिद्धि कुँवर कहैं रोय सखिन ते कैसे धीर धरौं जिय माई ॥ सुन्दर श्याम कमल दल लोचन यह छबि निस दिन दृगन समाई ॥ सुनियत राम दीन दुख भंजन कैसी हाय धरी निठुराई ॥ ना लिख पत्र सन्देश दिये उन जब से अवध गये रघुराई ॥ कैसे दिवस कटै सजनी जे ग्रीष्म ऋतु आई दुखदाई ॥ कंचन कुँवर मिलहिं जब रघुवर तब मम हिय की तपन सिराई ॥

॥ पद ॥

प्रीतम प्रीत रीत नहिं जाने ॥
जब से प्रीत करी रघुवर से चित नहिं रहत ठिकाने ॥
हम तन मन धन उन पर वारौं वे निर्मोही अंत लुभाने ॥
निसदिन सुमरत रहत उने हम वे सजनी मम सुरत भुलाने ॥
बरबस ज़ुल्फ़ जाल में उलझौ मन मधुर वर्जो नहि माने ॥
पिय मुख चंद विलोकन के हित नैन चकोर रहत अकुलाने ॥
तलफत विकल मीन ज्यों पल छिन ये जिय हाय मिलन के लाने ॥ कंचन कुँवर प्रेम पिंजरा में प्रान पखेरू जाय समाने ॥

॥ पद ॥

बेदरदी अवधेश ललनवां ॥
प्रेम फांस गल डाल सखी री रस बस कर कित कीन गवनवां
जब तो पल पल प्रीत बढ़ाई अब भये री अति कठिन
मिलनवां ॥ रस लोभी कित जाय रमे री किन सौतन
बिलमाये सजनवां ॥ तलफ तलफ मुहि दिवस जात सब
निस में तारे गिनत गगनवां ॥ खान पान कछु नीक न
लागे नहीं भावै सुख चैन भवनवां ॥ कंचन कुँवर जतन
कर हारी मिलहिं कौन विधि मन के हरनवां ॥

॥ दादरा ॥

निर्मोही हमारे साजनवां ॥
नेह लगाय छिपे कित जाके निपट छली मन भावनवां ॥
अवध छैल रस रीति न जाने विरहिन जिय तरसावनवां ॥
सजनी कपट किये उन हम से हो जानी सुख छावनवां ॥
कंचन कुँवर सुने करुनानिध मोहिं भये दुख दावनवां ॥

॥ दादरा ॥

रस रीति प्रीति की तोड़ दई ॥
विरह सिंधु में बही जात हौं बांह पकर के छोड़ दई ॥
हाथ जोड़ विनती कर हारी उन नहिं एकहु कान दई ॥

ना जाने कित गवन कियो उन कौन दिशा की बाट लई ॥
प्रेमलता जड़ मूल उखारी बिषम दुसह दुख बेलि बई ॥
कंचन कुँवर लाल दशरथ के निपट निठुर मैं जान गई ॥

॥ दादरा ॥

पिया आये न रतिया बीत गई ॥ सांझई ते जिया आस लगाई ॥ बाट निहारत रैन गई ॥ बिलमै जाय धाम सखि किनके कौन सोहागिन सौत भई ॥ श्रीरघुराज स्ववश किन कीने कासे लागी प्रीति नई ॥ निपट निरास भई सुनि श्रवनन भोर ही तिमिचर टेर दई ॥ कंचन कुँवर सुधा रस सींचे नेह लता मुरझाय गई ॥

॥ बिनय पद गजल ॥

भगवान घर हमारे एक बार रोज आना ।
दरसन मुझे दिखाना मत भूल नाथ जाना ॥
मुझ सी अनेक दासी आसा लगा रही हैं ।
सन्मान कर सबन को मुझ पर भी दया लाना ॥
निस दिन में दो घड़ी का मौका निकाल मोहन ।
सबकी नजर बचा कर घर मेरे भी हो जाना ॥
तज लोक लाज हमने तुम से लगन लगाई ।
रस रीति प्रीति प्रीतम तुम भी सदा निभाना ॥

यह प्रेम वेलि बोई कंचन कुँवर जतन से ।
तुम नेह सुधा सींच सींच कर इसे बढ़ाना ॥

भजन (तर्ज भगवान भक्त के बश में होते आये)

भगवान मेरे घर आना इकबार तो दर्स दिखाना ॥
हौं अति दीन चरन की दासी रूप सुधा रस प्रेम पियासी
सुरत न मोर भुलाना ॥ इक बार तो दर्स दिखाना ॥
अर्ज सुनो रघुनन्दन प्यारे जाऊँ कहां तजि चरण तिहारे ॥
दूसर कौन ठिकाना ॥ इक बार तो दर्स दिखाना ॥
भवसागर में नाव पड़ी है, भँवर अगाध गंभीर बड़ी है ॥
खेकर पार लगाना ॥ इक बार तो दर्स दिखाना ॥
विरदावलि निज नाथ संभारी सरन गहे की लाज विहारी ॥
कंचन कुँवर निभाना ॥ इक बार तो दर्स दिखाना ॥

॥ गजल ॥

मम धाम दया करके करुना निधान आना ।
आंखें तरस रही हैं दरसन इन्हें दिखाना ॥
तुम को बिना निहारे चित कौन चैन पावै ।
मुश्किल हुवा दृगों को पल पलक भी लगाना ॥
दिन रैन तड़पती हूँ एक छिन भी कभी आके ।
हँस हँस गले लगा के हिय की तपन बुझाना ॥

कंचन कुँवर कृपानिध दुखसिंधु में पड़ी हूँ।
मुझ डूबती हुई को कर गह किनारे लाना ॥

॥ दादरा तर्ज शैर ॥

रघुनन्दन हमारे ग्रह आया करो ।
अपनी श्यामली सुरतिया दिखाया करो ॥ शैर–
तुम्हारी मोहनी सूरत ने दिल लुभाया है ।
मृदु मुस्कान जाल डाल के फंसाया है ॥
मोहनी मंत्र मधुरता रसाल वयनों में ।
भरा है समव सुधा मधु विशाल नयनों में ॥
दृग सैन अनी ना घुमाया करो ॥ शैर–
तुम्हारे नैन की पैनी अनी चुभी हिय में ।
तड़प रही हूं विकल पल न कल पड़े जिय में ॥
मिले जो आप तो दिल की तपन बुझाऊं मैं ।
झपट के जल्द गले से पिया लगाऊं मैं ॥
कभी हँस के तो अंक लगाया करो ॥ शैर–
तिहारे प्रेम की प्यासी ये दीन दासी है ।
जुगुल किशोर कृपा कोर की उपासी है ॥
कहैं कंचन कुंवर विनय सुजान सुन लीजे ।
श्री साकेत राज महल की टहल दीजे ॥
पान प्यारे हमारे कर खाया करो ॥

॥ दादार तर्ज शैर ॥

नहीं आये सखी री हमारे सजन।
कहां छाय रहे पिया प्यारे सजन ॥ शैर–
सलोने श्याम ने कैसी सुरत विसारी है।
गये वे जब से खबर ली नहीं हमारी है॥
अगर मैं जानती छलिया अवध विहारी हैं।
न करती भूल के आली जो उनसे यारी है॥
निर्मोही बड़े वे हमारे सजन ॥ शैर–
लगा के नेह वो नैनों के बन गये तारे।
रफ्ते रफ्ते जो मेरे दिल में जा बसे प्यारे॥
फँसाया दिल को फेर जाल जुल्फ के डारे॥
चढ़ा के नैन बान तान हिये हनमारे।
कर घायल हम को सिधारे सजन ॥ शैर–
तभी से हाय बड़ी दिल को बेकरारी है।
तड़फती मैं हूँ पड़ी नैन नीर जारी है॥
अगम अथाह विरह सिंधु माह डारी है।
लबों पै जान बीर धीर छुटी सारी है॥
कहैं कंचन कुँवर कहां पाऊं सजन।

॥ पावस विरहनी ॥

अब सखी घन घहरान लगे री॥

जान परी पावस ऋतु आई विरहिन जिय तरसान लगे री ॥
कारे कारे बादल छाये बुन्दवार बरसान लगे री ॥
कोकल मोर पपीहा बागन मधुरे शब्द सुनान लगे री ॥
सूनी सेज विदेश सजनवां रति पति जोर जनान लगे री ॥
कैसे धीर धरौं अब सजनी हिय बिच विरहा बान लगे री ॥
कंचन कुँवर सब ही सुख दावन सावन मोहिं दुख देन लगे री

॥ राग देश ॥

प्रीतम सावन में घर आये ॥
सुन हर्षाय धाय द्वारइ ते विरहिन आतुर अंक लगाये ॥
कह हँस हँस पिय बैन मनोहर विषम विरह दुख दूर हटाये ॥
कंचन कुँवर अवध नृप नंदन पुनि हिल मिल झूलन सुख पाये

❀ झूलन के पद ❀

देखौ सखी नभ घन घिर आये ॥
अब पावस ऋतु आवत री सखि सुन पपिहा पिया बोल सुहाये ॥ कबहुँक बुन्दनवार वरष री कबहूँ दामिनि अति दरसाये ॥ कंचन कुँवर भूमि हरियाली ललित लता द्रुम बेलिन छाये ॥

॥ सावन ॥

सुन्दर सावन ऋतु लख आई ॥

जनकलली पिया कर गह मंजुल कहत बचान अति हिय हर्षाई
सरजू तीर हिंडोल रचहु पिय झूलिय सखिन सहित सुखदाई
कर बलिहार लाल हँस बोले कही भली प्रिय मम मन भाई ॥
कंचन कुँवर पाय अनुशासन सुन्दर झूलन साज सजाई ॥

॥ कजली ॥

आई पावस ऋतु सुखदाई बरसत उमड़ घुमड़ घन नीर ॥
हरित भूमि द्रुम लता कुंज बन छवि छाई लख बीर ॥
नाचत मोर घटा घन लख सखि बोलत कोकिल कीर ॥
पिउ पिउ बोल पपीहा के सुन जियरा धरत न धीर ॥
घले हिंडोरा बन प्रमोद में सरि सरजू के तीर ॥
सखिन सहित हिल मिलि तँह झूलैं झूला सिय रघुबीर ॥
कंचन कुँवर चली सुन झूलन पहिर कुसुम रंग चीर ॥

॥ मलार ॥

ए री घन उमड़ घुमड़ घिर आये घन श्याम विदेशै छाये ॥
जब से गये मोरी सुधहु न लीनी ना लिख पत्र पठाये ॥
सूनी सेज अँधेरी रतियां लखि लखि जिया अकुलाये री ॥
पिउ पिउ टेर सुनत पपिहा की विरहा जोर जनाये री ॥
दामिन द्युति लख हूक उठत हिय को जिय धीर बँधाये री ॥
कंचन कुँवर छैल रघुनन्दन किन सौतन बिलमाये री ॥

॥ पूर्वी ॥

ये री सखी लख गगन घटा घन छाई बरसन हार री ॥
पावस रैन अंधेरी कारी रिमझिम परत फुहार री ॥
चपला चमक दुरत घन पुन पुन पिउ पिउ पपिहा पुकार री ॥
सावन सबहि सुहावन सजनी झूलन ललित बहार री ॥
नवल बाल सज झूले हिंडोले गावत राग मलार री ॥
हम तलफे रघुराज दर्श बिन बहत दृगन जल धार री ॥
कंचन कुंवर निपट निर्मोही दशरथ राज कुमार री ॥

॥ पावस ॥

कारे कारे गगन घन छाये ॥
गर्ज तर्ज अति उमड़ घुमड़ कर देख सखी चहुँ दिशि घिरि आये ॥ दामिनि दमक रही घन मंडल बड़ी बड़ी बूंद वारि बरषाये ॥ नाचत मोर हर्ष बागन बिच पिउ पिउ पपीहा बोल सुनाये ॥ कमला सरित तीर सुख छावन मनि मय रुचिर हिंडोल घलाये ॥ झूलत नवल नारि मिथिला की पिय संग परमानन्द मनाये ॥ कंचन कूँवर भुलाय सुरत मम राज किशोर अवधपुर छाये ॥

॥ पावस ॥

देख सखी सावन घन गरजे ॥

बरसत बादल जोर सोर सौ दामिन दमक लखत हिय लरजै ॥
बहत समीर त्रिविध पुरवाई प्रबल झकोर जोर कर तरजै ॥
कंचन कुँवर पपीहा पी पी करत पुकार ताहि तू बरजै ॥

॥ पावस ॥

सखी घिर आये बरसन हारे ॥
देख अटा पर सघन घटा घन छाये कारे कारे ॥
गरजत बदला चमकत चपला रिम झिम परत फुहारे ॥
ये री नाचत मोर पपीहा सजनी पी पी बोल उचारे ॥
सुन सुन हूक उठत हिय आली पिय परदेश हमारे ॥
घन सन होड़ लगाय दिवस निसि बरसत नैन हमारे ॥
सावन समय सुहावन आवन कह गये राज दुलारे ॥
कंचन कुँवर अजहुँ नहिं आये निपट निठुर पिया प्यारे ॥

॥ पद ॥

हो सखि आज भयो मन भावन ॥
अब ही बात इक कह जो गई री राम लला को आवन ॥
अब पहिरो तन सुरंग चूनरी हर्ष मनावो सावन ॥
झूलूंगी हिल मिल सिय पिय सँग कमला तट सुख छावन ॥
रसिक राय तेहि छिन तहँ प्रकटे प्रेम वारि बरसावन ॥
औचक निरखि श्याम सुन्दर छबि रति पति मान लजावन ॥

इक टक रही निहार विवस भई मुरछ पड़ी पिय पावन ॥
कंचन कुंवर विरह व्याकुल लखि लाल लगे हिय लावन ॥

॥ झूला ॥

सखी सावन घन घुमड़ रहे री ॥
रिमझिम रिमझिम वारि वरस रहे सर सरितन जल भर उमहे री ॥ वागन मोर कोकला कुहकत पपिहा पिउ पिउ बोल कहे री ॥ सुमन कुंज बिच घले हिंडोला प्रिय प्रीतम दोउ झूल रहे री ॥ कंचन कुंवर झुलावै गावै छवि लखि लोचन लाहु लहे री ॥

॥ झूला ॥

अवध छैल झुक झूकन झूलत ॥
सिय अकुलात डरप हिय लागत लख छबि लाल ललक हिय फूलत ॥ पिय हिय बिच सिय सोहत कैसी घन मध जिमि दामिन द्युति खूलत ॥ कंचन कुँवर युगुल छवि लख लख कर वलिहार देह सुधि भूलत ॥

॥ झूला ॥

यह झूलन छवि द्वगन बसी री ॥
पिया घन श्याम सिया द्युति दामिनि अरस परस गल बांह लसी री ॥ बाढ़त पैंग समारत प्रीतम सिया सिर सारी

जात खसी री ॥ फहरत पीताम्बर पट छोरन नथ वेसर की गूंज फसी री ॥ गह करकमल कमलमुख तव पिय सुलझावत सिय हेरि हँसी री ॥ कंचन कुँवर छटा तिह छिन अस उदित भये जनु युगल शशी री ॥

॥ झूला ॥

यह दिन सावन के मन भाये ॥
आज हम लोचन के फल पाये ॥
श्रीजानकी निवास सु मंदिर युगुल रूप दरसाये ॥
श्याम सखी रस रूप माधुरी हिय सरिता न समाये ॥
उमंग दृग प्रेम वारि बरसाये ॥
अतुलित छवि सुख धाम काम रति कोटिन लखि सरमाये ॥
कह विहारिणी अली भली विधि पूरन प्रेम लखाये ॥
निरखि मम चित चकोर चंदमाये ॥
कंचन कुँवर लुभाय रही हो जब से दरस दिखाये ॥
नभ मंडल वास विहा कर आज यहाँ कहां छाये ॥
धरनि पै युगुल सुधाकर आये ॥

❀ शरद के पद ❀

महल विच विहरत दोउ सुकुमार ॥
श्री अवधेश राज नृप नंदन श्री मिथिलेश कुमारि ॥

शरद रैन शुचि छिटक चांदनी जग मग जोत अपार ॥
जुही केतकी बेल सुमन रचि सखियन कियो सिंगार ॥
सेत बिछावन सुन्दर झरफै मणिमय झालरदार ॥
नाचत गावत नवल बाल सब बाजत वीन सितार ॥
कंचन कुँवरि निरखि दम्पति छवि तन मन डारति वार ॥

॥ लावनी ॥

शरद ऋतु सुन्दर मन भाई। कहत सिय पिय से समझाई ॥
विनय यह पिय चित में दीजै। रहस रस सरजू तट कीजै ॥
सबै सखियन आज्ञा दीजै। साज सज गवन वेग कीजै ॥
सुनत तब हर्षे रघुराई। विहँस प्यारी को हिय लाई ॥
कहेउ भल मेरेहु मन मानी। चलन सरजू तट की ठानी ॥
बाल जे गुन आगर जानी ॥ कहीं हँस उनसे अस बानी ॥
रहस अब कीजे सुखदाई। सुहावन शरद रैन आई ॥
साज सज हर्ष चलीं मन में। नवेली प्रिय प्रीतम संग में ॥
तीर सब सरजू के जाके। मगन मन रहस केल छाके ॥
नृत्य रस कला सु दरसाई। सकल तन मन सुध विसराई ॥
बांध मंडल सब नृत्य करैं। भांवरै प्रीतम संग भरैं ॥
मध्य दोउ अंसन वांह धरे। लली लालन रस केलि करैं ॥
रहौ रस सिंधु सु उमगाई। तबहि सिय पिय मन अस भाई ॥

सखाकर मोद भरे उर में भये अन्तरहित तेहि छिन में ॥
न देखे जब दोउ मंडल में भई व्याकुल सखियाँ पल में ॥
एक से एक कहै धाई। गये कित जीवन धन माई ॥
कहैं सब इत ही पेखो री। कुँजवन सब मिल देखौ री ॥
सरित सरजू तट खोजो री। कदम चढ़ उनको हेरो री ॥
मिलेंगे करुनानिधि आई। सखा यह सब मिल ठहराई ॥
ढूँढ जब थकित भई नारी। बैठ गईं सरजू तट सारी ॥
विरह व्याकुल अति सुकुमारी। भयो दृग नेह नीर जारी ॥
बहुर दृग मूंद ध्यान लाईं। परी महि मूर्छि सकल जाई ॥
दुरे दोउ देखत सब हाला। जानकी जीवन जन पाला ॥
लखी निज प्रेम बिवस बाला। प्रगट भये दोउ तहँ ततकाला ॥
कमल कर परसत सुखदाई ॥ मिली सब प्रेमाकुल धाई ॥
निरंतर प्रेम मई चीन्ही। प्रिया प्रीतम निज रस भीनी ॥
सबन पर दया दृष्टि कीनी। अंक भर लाय हृदय लीनी ॥
बहुर रस रँग उमँग आई। मदन मद छाके रघुराई ॥
नचत दोऊ सिय पिय हिल मिल के। छिटक रहीं ससि मुख पर अलखैं ॥ लली मुख श्रम सीकर झलकैं। अधर नासा मोती हलकैं ॥ छटा प्यारी पिय मन भाई। निरखि कंचन मन बलि जाई ॥

॥ धुन कार्तिक के पद ॥

नाचत राज किशोर सिया संग नाचत राज किशोर ॥
आस पास सब नवल नागरी नाचत मंडिल जोर।
कबहुँ नचत ताथेई गति लै लै कबहुँ हँसत मुख मोर ॥
बाजत ताल सितार मजीरा पग पाइल की घनघोर।
रस भीनी मृदु बीन बजावत अधर धरे चित चोर ॥
छिटकी शरद रैन नभ चांदनी शीतल पवन झकोर।
कञ्चन कुँवर सलिल छवि छहरत सरजू लेत हिलोर ॥

॥ पद ॥

नैनन युगुल किशोर बसे इन नैनन युगुल किशोर ॥
जब से देखे सरजू तट पै नाचत री चितचोर।
तब से जुल्फ जाल के फन्दन उलझ रहो चित मोर ॥
सुलझाये सुलझे नहीं सजनी बँधौ प्रेम की डोर।
रैन दिवस मोहि चैन न आवत हिय में उठत हिलोर ॥
चित चाहत उतही चल जइये रहस कुंज की ओर।
कंचन कुँवर मधुर बीना की श्रवन भरी घनघोर ॥

॥ पद ॥

सिया संग विहरत राज किशोर ॥
विहरत राज किशोर सिया संग विहरत राज किशोर।

आज अचानक मोहि मिले री अवध नगर की खोर ॥
मृदु मुसकात बतात जात कछु हेरत मेरी ओर ।
पवन लगे फहरै छवि छहरै पट पीताम्बर छोर ॥
जुल्फ जाल के फन्द फांस कर ले गये री मन मोर ।
कंचन कुँवर जतन कर आली आय मिले चित चोर ॥

॥ पद ॥

राजत श्री रघुवीर सिया संग राजत श्री रघुवीर ।
सुमन कुंज बिच सुमन सिंहासन भ्राजे सरजू तीर ॥
सुमन शृङ्गार किये नखसिखते श्यामल गौर शरीर ।
निर्मल शशि खिल रही चाँदनी विमल सरित वह नीर ॥
मोद भरी अली नृत्य गान करैं बाजत सितार मजीर ।
कंचन कुँवर निरखि छवि मन यह उलझयो जुलुफ जंजीर ॥

॥ पद ॥

वा मुख की मुसकान लखी जिन वा मुख की मुसकान ॥
तिन के मन मानस सर प्रफुल्लित फूले कमल समान ।
जीवन धन श्री रसिकबिहारी जन मन पंकज भान ॥
उदित भए जिन के मन मन्दिर मोह तिमिर बिनसान ।
जे जन दास खास सिय पिय के तिन की यह पहिचान ॥
प्रेम सिंधु में बिहरत निस दिन त्याग सकल कुलकान ।

कंचन कुँवर नाम रस लीला निस दिन करत बखान॥

॥ पद ॥

लगन लागी जिन टोरो सियावर॥
प्रीत लगाय निठुर होइ मोहन काहे कमल मुख मोरो।
दीनानाथ दीन दुख भञ्जन बिरदावलि जिन छोरो॥
बाँह गहे की लाज निवाहो हा हा मान निहोरो।
चरण शरण ते विलग न कीजे बार २ कर जोरो॥
रसिक सिरोमन ग्यान राय हो रस में विष नहिं घोरो।
कंचनकुँवर दगा दै निकसे हिय बस के चित चोरो॥

॥ पद ॥

वे देखो वे देखो राज दुलारे सो कुंज गलिन की ओर सिधारे॥
कीट मुकुट माथे पर सोहै सो भाल तिलक नैना रतनारे।
श्यामगात जरकस को री जामा सो पीताम्बर कटि फेंट समारे॥
गज मोतिन के हार हिये में सो कर कमलन धनुशायक धारे।
कंचन कुँवर बिहँस कछु लैगये सो लैगये री चित छीन हमारे॥

॥ पद श्री कंचन भवन बिहारी जी को ॥

इन नैनन छवि जाल परो री।
कंचन भवन लखी हम जब से राम सिया की सुन्दर जोरी॥

सिंहासन पर सोहत सजनी छबि निधि रूप सुधा इक ठौरी ॥
श्याम वरण अवधेश दुलारे गौर वरण मिथिलेश किशोरी।
मणि मय भूषण बसन सुभग तन नीलाम्बर पट पीत पिछौरी॥
चन्द्रिका चारु सिया सिर सोहे पिया सिर मुकुट अमोल लसोरी।
अति अभिराम अलौकिक शोभा लख रतिपति मद मान हरोरी॥
अवध नगर सरजू तट नूतन रचि मंदिर निरमान करोरी।
कंचन कुँवर युगल झाँकी तहँ देखत उर अनुराग भरोरी॥

॥ पद ॥

डगर चलो सखि अवध नगर की।
सरजू शीतल नीर न्हान को उर में उठत उमंग लहर की॥
सिय पिय दरस पाय सुख लहवी तबहिं सिरैहै जलन जिगर की॥
कंचनकुँवर अवधपुर वीथिन ललक लगी हिय संत मिलन की॥

॥ पद ॥

उठीं सिय भोर ही ते अनखानी।
नहिं चितवत बिहँसत नहिं तनकहुँ नहिं बोलत मुख बानी॥
कर धर चिबुक रही सुकमारी ससिमुख दुति कुमलानी।
सपने अपर बाल संग देखे करत केल सुखदानी॥
ताते मान ठान जिय बैठीं अति ही सुघर सयानी।
कंचन कुँवर जाय तेहि अवसर पिय सन कहत बखानी॥

॥ पद ॥

किशोरी जू बैठी मान करे ॥
बहुत ढिठाई करत रहे पिय सो सब जान परे।
कहत सखी किन मान छुडावहु अस कस काज सरे॥
सुनि प्रिय मान लाल भये व्याकुल नैनन नीर भरे।
कंचन कुँवर लली ढिग आतुर आये निपट डरे॥

॥ पद ॥

मनावैत कर कर अति मनुहार।
कर जोरे सिर नाय निहोरैं गहि पद बारहिं बार॥
कारन कौन मौन गहि बैठी कौन चूक उरधार।
टुक हेरो तेरो मैं चेरो श्री मिथिलेश कुमार॥
सत्य सपथ तुव पद गहि भाखौं हे प्रिय प्रान अधार।
तेरे बिन त्रिभुवन में मोकहँ कितहुँ नहीं सुख सार॥
तो तजि सपनेहूँ मैं प्यारी तकौं न पर को द्वार।
सुन प्रिय बैन लली मुसकानी निज भ्रम मनहिं विचार॥
तुरत मान तज आन मिली तब हँस गल बहियाँ डार।
कंचन कुँवर प्रेम आली गन देख कहत बलिहार॥

॥ पद ॥

बिहँस दोउ आपुस में बतरावैं॥
बैठे रतन सिंहासन हिलमिल प्रेम भरे हुलसावैं।

॥ पद ॥

जो भ्रम सपने भयो प्रिया को सो सब पियहि सुनावैं ॥
सुन सुन भोली मधुर सुबतियां रघुनन्दन सुख पावैं ।
कबहूँ चूम कपोल कहत बलि कबहुँ ललक हिय लावैं ॥
कबहूँ सिय मुख ससि छबि नरखैं हिय की तपन सिरावैं ।
कञ्चन कुँवर उतार आरती बार बार बलि जावैं ॥

॥ दादरा ॥

लखी हमने बाँकी अदा सिया पी की ।
रंगीली छबीली छटा लालजी की ॥
सघन घन में जैसे दिये दामिनी है ।
लगे त्यों ही गौर श्याम छबि नीकी ॥
ग्रसे चन्द्र को ज्यों चहूँ दिशि ते काले ।
शशि मुख पै छलकैं जुल्फ नागिनीसी ॥
मधुर मुसकाय कहै मृदु बैन ।
चुभी हिय नैन सैन क्या तीखी ॥
कृपा दृग कोर लखै मम ओर ।
बसी हिय हेर हसन सिय जी की ॥
यह संसार रैन का सपना ।
यहाँ की प्रीत रीत सब फीकी ॥
कंचन कुँवर जगत चहे रूठे ।
लगन न छूटे लाल लली की ॥

॥ गजल ॥

जहां में आके जरा प्रेम की पहिचान करो।
धर्म के काज दिलो जान को कुर्बान करो॥
प्रीति भगवान के चरनों में लगाना सीखो।
सलोनी श्यामली सूरत को सदा ध्यान धरो॥
नाम सियराम को रसना से निरंतर सुमरो।
भक्तजन जो कहीं मिलजांय तो सनमान करो॥
मन तो माया में फँसा खाक लगा के तन में।
मुँडा के मूंड नया मौका ये सामान करो॥
सच्चे दिल से जो एक बार तू भजे उनको।
दया दयाल करेंगे न जी हैरान करो॥
वो अलि नील कमल हृदय में बसे तेरे।
मिलेंगे तुमको जो रस प्रेम सुधा छान करो॥
त्याग सब आस दासि बन के तू कंचन रह जा।
भक्ति अनपायनी पावोगी ना गलान करो॥

॥ गजल ॥

जहां में आके जरा होश सँभालो गाफिल।
अपनी हालत पै नजर गौर से डालो गाफिल॥
क्या तेरी हस्ती है क्या सान है क्या रुतवा।

बुरी संगत में फँसा कर न बिगाड़ो गाफिल ॥
गांठ में थी जो पुँजी मुफ्त में बरबाद हुई ।
अब भी जो कुछ भी बची है वो बचालो गाफिल ॥
उम्र् जाती है जरा नाम करो नेकी में ।
हौसले दिल में छुपे हैं वो निकालो गाफिल ॥
वक्त अनमोल है फिर से न इसे पावोगे ।
अपनी सोती हुई किस्मत को जगालो गाफिल ॥
देश यह छोड़ के परदेश तुझे जाना है ।
वहाँ के वास्ते कुछ धन तो कमालो गाफिल ॥
नाम सियाराम का ले कुँद तू बे खौफ खतर ।
पार बेड़ा हो हरी ध्यान लगालो गाफिल ॥
कहै कंचन कुँवर उस पार तुझे जाना है ।
मन की कालिख को इसी पार बहालो गाफिल ॥

॥ गजल ॥

जहाँ में आय के श्री जानकी जीवन को भजो ।
काम मद कोह मोह लोभ को नादान तजो ॥
संत संगत को करो नीति के उपदेश लहो ।
पाप से दूर रहो दुष्ट की सँगत से लजो ॥
प्रीति सियाराम के चरणों में लगावो निस दिन ।

भक्ति रस रङ्ग रँगो प्रेम के सब साज सजौ।
नेह के नीर से तन मन जिगर को साफ करौ।
श्यामली झलक नजर आयगी गर दिल होयजो॥
धर्म की नाव चढ़ो सत्य की गहौ बल्ली।
पार भवसिंधु के हो जायगी कंचन ये कहौ॥

॥ गजल ॥

जहाँ में ये दिलका लगाना बुरा है।
ये माया में जां का फँसाना बुरा है॥
बिछा दाम उल्फत का देखौ यहां पर।
लगा मोह का ये निशाना बुरा है॥
पड़े मोह फन्दे गँसी नेह गाँसी।
कठिन काम का क्या कँटीला छुरा है॥
गँवावेगा जां जो लगावेगा दिल को।
यहां की रसम का निभाना बुरा है॥
चलौ ह्याँ से हट के न देखो पलट के।
झपट के धरेंगा जमाना बुरा है॥
भजौ राम सीता पढ़ौ ज्ञान गीता।
बृथा खाली जीहा चलाना बुरा है॥
ये कंचन कुँवर वक्त थोड़ा रहा है।
समय का सनेही भुलाना बुरा है॥

॥ दादरा धुन नई तर्ज ॥

जहाँ में दिल न लगाना रे।

हे मन मूँढ विषय रस चसके जान गवाना रे ॥
लोभ मोह की हाट लगी है काम क्रोह का मेला ।
माया का सब जाल बिछा है भूल न जाना रे॥
यह संसार रैन का सपना झूठा कुल व्योहार ।
सुत दारा परवार कुटुम सब माल खजाना रे ॥
जिने कहत तू हितू हमारा सो कोइ तेरा नाह ।
अब लो तूने परम सनेही नहिं पहिचाना रे ॥
कंचन कुँवर चेत मन मूरख भज श्री सीताराम ।
जीवन धन श्रीजानकी जीवन तिनहि भुलाना रे ॥

॥ पद ॥

अरे मन जग से नाता टोर ॥

झूठे तेरे जगत सनेही जिने कहत तू मोर ।
हैं इक साथी अन्त समय के सांचे युगुल किशोर ॥
कर पहिचान प्रेम से उनकी हिय से नाता जोर ।
कंचन कुँवर लगाले निसदिन चरन कमल से डोर ॥

॥ पद ॥

प्रीति की रीति कठिन प्यारी ।

जाना सहज नहीं यहि मारग प्रेम पंथ भारी ॥
बड़ भागिन कोइ चलत सुथा मग उनकी गति न्यारी।
प्रेमामृत पी पी अति निर्भय हो मन मतवारी ॥
जिनके मन मन्दिर सिय पिय दोऊ विहरत सुखकारी।
कंचन कुँवर सोहागिन सोई मैं तिन पर वारी ॥

॥ पद ॥

निस दिन प्रेम सिंधु में बिहरो।
युगुल माधुरी छबि रस भीजों तन मन श्याम रंग रंगो गहरो ॥
मैल न होय परै नहिं फीको नीको नील निचोल सु पहरो।
श्रवनन नित्य बिहार कथा रस नैनन गौर श्याम छबि छहरो ॥
निर्मल नेह नीर सर हिय बिच उमंग सुप्रेम हिलोरन लहरो।
कंचन कुँवर अथाह थाह नहिं पावत पेठ थको जिय हमरो ॥

॥ गजल ॥

लगा इश्क जिसको सियाबर से होगा।
लगा जिसका दिल नेह नागर से होगा ॥
बसा जिसके दिलमें वो प्यारा समलिया।
उसे प्रेम फिर कोई बसर से न होगा ॥
लखी जिसने प्यारी झलक श्याम तन की।
ये जल्वा जहां का नजर में न होगा ॥

पिया प्रेम प्याला बना मस्त डोले।
उसे दीन दुनियां से मतलब न होगा॥
दया जिस पै श्री जानकी नाथ की है।
जहां उसकी सानी का कोई नर न होगा॥
कृपा कोर कंचन कुँवर ओर हो जो।
तो भव निधि से मेरा बेड़ा पार होगा॥

॥ गजल ॥

दिल जिसका माइल हो गया महबूब के दीदार पर।
उसको जहां में फिर कोई आता नहीं जलवा नजर॥
जिसका सकल तन मन जिगर उस श्यामले रंग में रँगा।
दुनियां का फीका रंग फिर करता नहीं उस पर असर॥
जो मीन मन नित प्रेम सागर में रमैं सुख चैन से।
निस दिन मगन रहता है वो छबि माधुरी रस पान कर॥
सूरत सलोने शयम की जिसने लखी इक बार भी।
तज धाम धन मस्तान बन बन बन फिरे मल खाक सर॥
माशूक सुन्दर श्याम ने जिसको शरण में लै लिया।
कंचन कुँवर बड़ भाग वो मम प्राण से प्यारा बसर॥

॥ पद ॥

मन मधुकर बिरह न मानौ, रस प्रेम सुधा ललचानो॥

पिय मुख छवि मकरंद पान हित फिरत सदा मँडरानो ॥
रस लंपट लखि रूप माधुरी मधु बस होय लपटानो ।
नेह सलिल लखि उमंग रहो सर जाय परो अतुरानो ॥
अगम अथाह थाह हल थाको तैर न सकत अयानो ।
कंचन कुँवर श्याम सुन्दर छबि निरखत भूमर लुभानो ॥
सुरझायो सुरझै नहिं सजनी जुल्फ जाल उलझानो ॥

॥ गजल ॥

जक्त में जानकी जीवन को रिझाया जिसने ।
श्याम सुन्दर को सदा दिल में बसाया जिसने ॥
उसको धन माल की जग में न कछु चाह रही ।
रतन अनमोल राम नाम का पाया जिसने ॥
उसका सौभाग्य सुजस संत जन बखान करैं ।
श्यामले रंग में तन मन है रँगाया जिसने ॥
कहै कंचन कूँवर मुझे भी सोइ प्यारा है ।
लगा के नेह सियावर से निभाया जिसने ॥

॥ गजल ॥

हमारे प्रान जीवन धन कुँवर अवधेश के प्यारे ।
सलोने श्यामले सुन्दर छबीले छैल छबि वारे ॥
लगे दिल को अदा प्यारी छिटक मुख जुल्फ घुघरारी ।
श्रवन कुंडल झलक आवति जड़ित मनि क्रीट सिरधारे ॥

भाल केशर तिलक राजै भृकुटि लखि इन्द्र धनु लाजै ।
लगा अंजन सुछबि छाजै रसीले नैन रतनारे ॥
हिये बिच माल मोतिन की दिये भुज जोति जोशन की ।
जड़े हीरन कड़े कर में पड़े छबि जक्त उजियारे ॥
मनोहर पीत पट तन में लसै धनु सर कमल कर में ।
ललित मेंहदी रची पग में चले गज चाल मतवारे ॥
कहे कंचन कुँवर प्यारे मेरे दोउ नैन के तारे ।
बिहँस हिय हाय हन मारे दृगों के बान अनियारे ॥

॥ पद ॥

मो मन मोहन हाथ बिको री ॥
रूप माधुरी लख ललचानो प्रेम पिंजरिया धाय धँसो री ।
बिवस भयो अब निकस न पावत नेह लगन की कसन कसो री ॥
पिय मुख कमल अमल रस छायो जुल्फ जाल के फन्द फँसो री ।
कंचन कुँवर लाल दशरथ के हँस मोहनियां डार गँसो री ॥

॥ गजल ॥

नजर श्यामले से लड़ी जिसकी होगी ।
लगन सच्चे दिल से लगी जिसकी होगी ॥
सिया के पिया से किया नेह जिसने ।
मुहब्बत जहाँ से न फिर उसकी होगी ॥

जिसे जानकी वर ने देखा कृपा कर।
सही प्रेमियों में डरी उसकी होगी॥
जगत में जिसे रत्न सागर मिला है।
हजूरी में कमला खड़ी उसकी होगी॥
उसे फिर जरूरत कहां माल जर की।
हिये प्रेम दौलत गड़ी जिसकी होगी॥
सियाबर ने जिसको शरण में लिया है।
सन्तों में इज्जत बड़ी उसकी होगी॥
लगे पार कंचन कुँवर पल में भव से।
किनारे पै नइया पड़ी उसकी होगी॥

॥ गजल ॥

मजा पा चुके हम लगनियाँ लगा कर।
सामलियां से पाया मजा दिल लगा कर॥
भरोसा था उनका जो हमने किया री।
न न्यारा करेंगे वो अपना बना कर॥
हमेशा हमें चैन देवेंगे मोहन।
मिलेंगे सदा श्याम दिल को मिला कर॥
अमानत में ख्यानत करेंगे न दिलवर।
ये दिल मेरा रक्खेंगे दिल में छिपा कर॥
लगा हाथ उनके तो बरबाद कीना।

सताया तपाया विरह में जला कर ॥
हसर दिल में मेरे रही एक बाकी ।
मिलें मोहि सियावर निराले में आकर ॥
कृपा मुझ पै ऐसी जो होती तो लेती ।
झपट श्याम मूरत हिये से लगाकर ॥
भली या बुरी नाथ चेरी तुम्हारी ।
कहैं लोग मुझ को जहाँ में उजागर ॥
इसी में है संतोष कंचन कुँवर को ।
दया सिंधु दासी तुम्हारी कहा कर ॥

॥ दादरा ॥

कौशल्या का प्यारा ललन ना मिला री ।
हमें वह हमारा सजन ना मिला री ॥
ये बुलबुल सा दिल श्याम दरसन को तड़पे ।
खिला गुल हजारा चमन ना मिला री ॥
लगी एक मुद्दत से कंचन कुँवर को ।
लगन जिसकी है वो सनम ना मिला री ॥

॥ गजल

जिसे रघुराज प्रीतम ने शरण अपनी बसाया है ।
सनेही सो हमारा है वही मो मन को भाया है ॥

ये झूठे जक्त के नाते मेरे दिल को नहीं भाते ॥
कुटुम परिवार धन दौलत सकल सपने की माया है ॥
बिछी है जाल की जेजम लगा परपंच का मेला ॥
मोह मय खेल हैं सारे लखा जिसने भुलाया है ॥
यहां आई हूँ मैं जब से हजारों ठोकरें खाकर ॥
जहां को छान डाला है नहीं कुछ सार पाया है ॥
हुई हैरान जब दिल में लगाकर ध्यान जो बैठी ॥
तो देखा नूर फिर उसका जिसे सतगुरु लखाया है ॥
झलक जब श्यामली झलकी कली एक खिल गई दिल की ॥
गई बलिहार मैं उसकी जो मन मेरे समाया है ॥
रही अब चाह क्या बांकी लखी महबूब की झांकी ॥
उसी के प्रेम रस छाकी वही तन मन रमाया है ॥
कहै कँचन कुँवर मेरा न मतलब अब किसी से है ॥
तजा संसार को हम जानकी जीवन को पाया है ॥

॥ गजल ॥

तमन्ना श्याम सुन्दर के दरस की मेरे दिल में है ॥
लगन इक उनसे मिलने की लगी बस मेरे दिल में है ॥
बसा मेरे दृगों में है मनोहर रूप प्रीतम का ॥
सुधा रस प्रेम की लहरें उठे नित मेरे दिल में है ॥
मिले जो आन मन मोहन करूँ कुरबान मैं तन मन ॥

झपट के धाय सीने से लगालूँ मेरे दिल में है ॥
न छिन न्यारा करूँ हिय से रमाऊँगी रिझाऊँगी ॥
विरह ज्वाला सिराऊंगी तपै जो मेरे दिल में है ॥
छली वो छैल रघुनन्दन बहुत छल हमसे कीना है ॥
चुकाऊंगी मैं बदला उनसे सारा मेरे दिल में है ॥
हिये में कैदकर कंचन कुँवर उनको मैं राखूंगी ॥
निकस जावै तो वो चित चोर फिर जो मेरे दिल में है ॥

॥ गजल ॥

ख्वाहिसें दिल में भरी हैं यार के दीदार की ॥
बस रही नयनों में छवि उस श्यामले दिलदार की ॥
हर घड़ी उठती हिलोरें प्रेम की मेरे जिगर ॥
हालतें तेजी पै हैं अब दिन व दिन आजार की ॥
अब मसीहा ले खवर जल्दी से दे दरसन दवा ॥
गर जो देरी की तो रुखसत हो तेरे बीमार की ॥
नाम श्री रघुवीर प्यारे का रटै कंचन कुँवर ॥
प्रेम दीवानी हुई तज लाज कुल संसार की ॥

॥ गजल ॥

जिसे रघुराज प्रीतम की लगी दिल चाह होती है ॥
उसे फिर दीन दुनियां की कहां परवाह होती है ॥
नगरिया नेह की न्यारी बसे जहँ प्रान जीवन धन ॥

पहुँच किस भांति हो जिनकी न जानी राह होती है ॥
सुहागिन सोइ सखी प्यारी सियावर जिसको अपनाई ॥
प्रेम पथ को जो पहिचाने वही हमराह होती है ॥
कोई विरला जहां में जानकी जीवन को पहिचाने ॥
किसी बड़भाग पै उनकी मिरह नागाह होती है ॥
करूं पहचान लाखों में मैं अपने श्याम सुन्दर की ॥
परख करने में नेही की नजर आगाह होती है ॥
मैं अपना मीन मन आली फँसाया प्रेम सागर में ॥
अगम कंचन कुँवर वो है न जिसकी थाह होती है ॥

॥ गजल ॥

छबीले लाल दशरथ के मिले जहँ काल कुंजन में ॥
चलौ तहँ आज देखैं री बसा जो श्याम मो मन में ॥
न भोजन पान भावै री न चित को चैन आवै री ॥
बिना वह रूप अवलोके न कल पड़ती है नैनन में ॥
बलायें लूं सखी तेरी सदा चेरी कहाऊँगी ॥
मेरा चितचोर जो आली मिला देवे तू या छिन में ॥
जो पाऊँ आज उनको लाय हिय से मैं सिराऊँगी ॥
कहै कंचन कुँवर निस दिन जले विरह ज्वाल या तनमें ॥

॥ गजल ॥

हमें श्याम सुन्दर सताना न होगा ॥

मिलन का सनम अब बहाना न होगा ॥
सदा छल किया तुमने हमसे छबीले ॥
छली छल कला वो दिखाना न होगा ॥
ये दिल जान मन जक्त से जल चुका है ॥
जलाये हुये को जलाना न होगा ॥
दिलो जान से जान कुरवान तुम पर ॥
मुझे और अब आजमाना न होगा ॥
रखो लाज मेरी शरन में पड़े की ॥
गहा कर से कर जो छुड़ाना न होगा ॥
मुझे इस जहां में सुनो जानकी बर ॥
तेरे दर सिवा कोई ठिकाना न होगा ॥
कभी तो मिहर की नजर नाथ होगी ॥
सदा एक सा ये जमाना न होगा ॥
ये कंचन कुंवर को करो पार भव से ॥
भमर में इसे अब फँसाना न होगा ॥

॥ गजल ॥

न अब नाथ देरी लगाना पड़ेगी ॥
दया निधि दया वो दिखाना पड़ेगी ॥
डरी बीच संसार सागर में मेरी ॥

ये नैया किनारे पै लाना पड़ेगी ॥
ये माया के जालों ने घेरा है मुझको ॥
लगी मोह फाँसी छुड़ाना पड़ेगी ॥
कृपा कोर कर हेर कंचन कुँवर को ॥
सरन अपने स्वामी बुलाना पड़ेगी ॥

॥ गजल ॥

अरे नृप लाल सांमलिया खता क्या मेरे दिल की है ॥
हुई गल्ती तुझे चाहा बता क्या मेरे दिल की है ॥
तेरे इस नूर का जल्वा जहां में जग मगाता है ॥
जो देखे हो न दीवाना ये ताकत किसके दिल की है ॥
हुये लाखों जिगर जख्मी तड़पते नीम विसमिल से ॥
मुझे भी इश्क है तेरा कयामत मेरे दिल की है ॥
सनम एक बार भी जिसने लखी बांकी अदा तेरी ॥
हुआ पल में वो मस्ताना सिफत क्या मेरे दिल की है ॥
कभी कंचन कुँवर उस सोष दिल पर हो असर मुमकिन ॥
न खाली जाय वो निकली जो आहें मेरे दिल की है ॥

॥ गजल ॥

कब देखूं तमन्ना दिल में है छवि राम प्यारे की ॥
अदा बांकी बसी मन में मेरे नैनों के तारे की ॥

मिले मोहि तीर सरजू के सखी इक रोज मन मोहन ॥
न भूले वह छटा छिन भी मुझे दशरथ दुलारे की ॥
सजे भूषन बसन सुन्दर सखन संग मौज से बहरे ॥
लखी क्या सान अलबेली वो काली जुल्फ वारे की ॥
चुभी कंचन कुँवर हिय में न निकसे जतन कर हारी ॥
मेरी दिस वो तकन तिरछी बिहँस हेरन इसारे की ॥

॥ गजल ॥

निठुरता यार रघुनन्दन हिये एती न धरने थी ॥
सताना था मुझे प्यारे तो फिर उल्फत न करने थी ॥
मजा रस प्रेम का पाते सितम जाहद नगर ढाते ॥
घटाते जो न तुम नेहा परेशानी न बढ़ने थी ॥
तेरी इस वे वफाई की खबर पहिले से गर होती ॥
न देती दिल तुझे दिलवर तो कुछ मुश्किल न पड़ने थी॥
रसम रस प्रीत की प्रीतम जरा कुछ दिन निभा लेते ॥
सुयश जग में उठा लेते इती तेजी न करने थी ॥
किया जो तुमको करना था मुझे सन्तोष है अब भी ॥
मगर दासी बना कर खुद की रुसवाई न करने थी ॥
बुराई में भलाई भी मुझे कंचन कुँवर होगी ॥
सरन में आ पड़ी नैया मेरी भव पार करने थी ॥

॥ गजल ॥

तेरी सनम वो श्यामली सूरत हिये में बस गई ॥
तन मन में प्यारे समा गई नैनों में धँस गई ॥
भौंहें कमान तान के मारी घुमाके नैन की ॥
सैन कटीली तीर सी जख्मी जिगर में चुभ गई ॥
देखी कभी न गौर कर हालत दिले बेताब की ॥
फिर क्या दवा करैगा वो हिज्र में जां गुजर गई ॥
कौशल किशोर श्यामला मौके पै जो तू न मिला ॥
अरमां ये दिल में जायगा जो ये घड़ी निकर गई ॥
कंचन कुँवर तुझे भी फिर कल ना पड़ैगी रैन दिन ॥
मेरी आखीर आह वो तुझपै असर जो कर गई ॥

॥ गजल ॥

सनम फिर दिखादो अदा कल्ह वाली ॥
बसी मेरे दिल में छटा वो निराली ॥
वो शामली सूरत वो मोहनी मूरत ॥
कपोलन पै झलकैं जुलुफ काली काली ॥
मुकुट सर पै सुन्दर श्रवण बीच कुंडल ॥
तिलक भाल सोहे अधर पान लाली ॥
गले फूल गजरा लसे नैन कजरा ॥

बिहँस हेर हम पै मुहनियां है डाली ॥
तजा देख कंचन कुँवर छवि सुधाकर ॥
कला अपनी तारागनो में छुपाली ॥

॥ गजल ॥

सिया बर छबीला सजन कब मिलेगा ॥
मेरा प्रान प्यारा ललन कब मिलेगा ॥
ये दिल उसकी उल्फत में बुलबुल सा तड़पै ॥
इसे गुल हजारा चमन कब मिलेगा ॥
बिना दर्स उसके न है चैन चित को ॥
सखी वो मेरा मन हरन कब मिलेगा ॥
मेरा परम धन प्रान जीवन जहां में ॥
मेरी लाज का आवरण कब मिलेगा ॥
हिये हार में जगमगाता रहै जो ॥
वो कंचन कुँवर नौरतन कब मिलेगा ॥

॥ ठुमरी ॥

सखि सिया वर श्याम नगीना री ॥
मेरे मन में बसा रस भीना री ॥
मोहि आज अचानक आन मिला ॥
मग में वह छैल छबीला री ॥

मैं लाज भरी सकुचाय रही ॥
नृप छैल अंक भर लीना री ॥
हिय लाय कपोलन चूम कछु ॥
मुसकाय मंत्र पढ़ दीना री ॥
तिरछी दृग सैनन हाय दिया ॥
हँस हँस तक घाइल कीना री ॥
तब से चित चैन न आवत री ॥
अति लागौ नेह नवीना री ॥
सुध कंचन कुँवर न फेर लई ॥
वेदर्द उन्हें हम चीन्हा री ॥

॥ ठुमरी ॥

मोसे करत छैल छल बार बार ॥
सखी प्रेम जाल गल डार ललचाय चपल ॥
अतुराय धँसो मन मीन फँसो छवि निधि अपार ॥
पिय जुल्फ के फंद परो सजनी ॥
सुलझे न गई मैं हार हार ॥
जख़्मी तेहि हाय कियो तक री ॥
रघुराज नैन सर मार मार ॥
चित चोर छली कित जाय छिपे ॥
मैं खोज थकी पुर द्वार द्वार ॥

दे कंचन कुँवर मिलाय मुझे ॥
वह जानकी जीवन जग अधार ॥

॥ भजन ॥

नाथ मेरी नैया को पार लगावो ।
नइया पार जबही प्रभु लगि है जग से मोहि छुड़ावो ॥
जग से मोह छुटे तब स्वामी जब सत संग करावो ॥
संत संग जब होय कृपा निधि हित कर तुम अपनावो ॥
अपने हौ रघुवंश बिभूषन जब निज रूप दिखावो ॥
श्यामल छवि दरसाय मनोहर प्रेम सुधा बरसावो ॥
कंचन कुँवर चरन किंकरि कर मोहिं साकेत बसावो ॥

॥ भजन ॥

श्याम नई लागी लगन नहीं मेरी
प्रेम पुरातन तुमसे मेरो जन्मान्तर की चेरी ॥
जग माया में मैं बौरानी लोभ मोह ने घेरी ॥
अब लौं परवस पहुँच न पाई नेह नगरिया तेरी ॥
अवध किशोर मोर दिस अब दृग कृपा कोर टुक हेरी ॥
चरन सरन में वेग बुलावो काहे लगाई देरी ॥
कंचन कुँवर विरह व्याकुल तुव लीजे खबर सबेरी ॥

॥ भजन ॥

मन हर लीनो नजरिया मिलाय के

रघुनन्दन महबूब छबीलो रस बस कर मुसकाके ॥
मैं सरजू जल जात भरन को मग विच छेकी आके ॥
मैं उनसे कछु कहि न सकीरी सकुच रही भय पाके ॥
भरनैनन छवि निरखि न पाई कूलकी लाज लजाके ॥
मो मन मोह लियो मनमोहन मधुरे बैन सुनाके ॥
मन भाई कर गयो श्यामले हँसहँस हिय लपटाके ॥
कंचन कुँवर करी मतवारी प्रेम सुधा मद प्याके ॥

॥ भजन ॥

इत मेरो चितचोर गयो री ॥
मैं बलि सजनी तनक वतादे अवधछैल किहि खोर गयो री ॥
कै कहुँ कुंजन बीच छिपोरी कै सरजू तट ओर गयो री ॥
श्याम छटा दरसाय छबीलो नेह नवीनो जोर गयो री ॥
हँस हँस सैन चलाय हेर मोहि तिरछी नैनन कोर गयो री ॥
कंचन कुँवर वैन कहे मधुरे प्रेम सुधारस घोर गयो री ॥

॥ भजन ॥

जब से री वह रूप निहारो
श्याम बरन मन हरन रँगीले
घूंघर वारी जुलफन वारो ॥
वसन विभूषन सोह नवल तन
गजगति चलत लगत अति प्यारो ॥

रतनारे नैनन बिच कजरी ॥
हँस हेरत हिय हरत हमारो ॥
छको सुधा रस रूप माधुरी ॥
मो मन वीर भयो मतवारो ॥
कंचन कुँवर प्रेम दीवानी ॥
तज कुल लाज लोक डर मारो ॥

॥ रेखता ॥

मन हर लिया हमारा अवधेश लाल री ॥
लख मोहनी अदा को मैं भई बिहाल री ॥
सरजू के तीर आली वो श्यामला खड़ा ॥
क्या सान है अनोखी छवि दृग विशाल री ॥
कानों में चमक कुंडल नासा बुलाक है ॥
माथे पै मुकुट सोहे घुघरारे बाल री ॥
बेला जुही गुलाब के गजरा सजे हुए ॥
मनि राज हिये सुन्दर राजे विशाल री ॥
जामा जरित जरी का छवि देत श्याम तन ॥
कटि फेंट पीत पट की कर में रुमाल री ॥
धुन होत नूपुरों की मधुर जब चरन धरें ॥
झुक झूम के चले वो गज मस्त चाल री ॥
जब से मैं देख आई तब से न कल पड़े ॥

चित चोर मुझ पै डाला शोभा का जाल री ॥
कंचन कुँवर जिगर को जख्मी बना दिया ॥
दृग सैन सर चलाये क्या कर कमाल री ॥

॥ रेखता ॥

रघुराज लाड़ले ने दिल हर लिया हमारा ॥
घायल किया हिया री सर नैन सैन मारा ॥
सजनी मैं जल सवेरे भरने को गई थी ॥
सरजू के तीर देखा अवधेश का दुलारा ॥
चितवन में श्यामले ने चित चोर लिया री ॥
मुसकान माधुरी में जादू सा पढ़ के डारा ॥
सुध बुध न रही तनकी व्याकुल मैं हूँ पड़ी ॥
पल भर न चैन आवै जब से उसे निहारा ॥
आली जतन बता दे केहि भांति से कहां पै ॥
पाऊँ मैं अब उसे री मेरा जो गुल हजारा ॥
धन धाम काम कुछ भी कंचन कुँवर न भावै ॥
दरसन बिना सनम के जीवन नहीं गवारा ॥

॥ रेखता ॥

अवधेश राज प्यारे मम धाम आज आये ॥
बड़ भाग हैं हमारे सखि श्याम आज आये ॥
तन प्रान बार उन पर बलिहार हो गई हूँ ॥

जीवन अधार दरशन अभिराम आज लाये ॥
पलकों के पांवड़े दै हिय लाय कै पधारे ॥
पूजी सकल जो मन की मम आज कामना ये ॥
छवि देख नैन भरके कंचन कुँवर कही ये ॥
जग रावरी कृपा के गुन ग्राम आज गाये ॥

॥ दादरा ॥

सियावर श्यामला रघुवंशी उजारा री ॥
जात लखा मग आज सखी मैं ।
सखन संग लाड़ला अवधेश दुलारा री ॥
गुन गरवीला छैल छबीला ।
बसी मन बांकी अदा जोवन मतवारा री ॥
सुमन गेंद कर कमल उछाले ।
हेर मो ओर हँसा मनमोहन प्यारा री ॥
कंचन कुंवर विकल भई तब से ।
प्रेम के जाल फँसा मन हाय हमारा री ॥

॥ दादरा ॥

तेरे नैना सितमगर बड़े क़ातिल ॥
तेरे नैनों ने जख्मी किया मेरा दिल ॥
नैन सैन की कटार तक सीने में मारी हाय ।
जालिम जिगर को किया बिस्मिल ॥

चित लीना है चोर अवधेश के किशोर ।
करी छिन में गजब की कला कौशल ॥
उठी विरहा की पीर विन देखे रघुबीर ।
अब कंचन कुँवर है जियन मुश्किल ॥

॥ दादरा ॥

सजन मन वस गये श्याम सलोना
वन प्रमोद की सघन लतन में मिल गये री नृप छौना ।
मृदु बोलन मुसकान माधुरी चितवन में डारो टोना ॥
तन मन विवस कियो उन मेरो प्रीतम प्रान ठगोना ।
कंचन कुँवर जतन कर आली जेहि विधि होय मिलोना ॥

॥ दादरा ॥

सिया प्यारे से सजनी नजर लागी ॥
उनके प्रेम जाल में फँस के कुल की लाज सकल त्यागी ॥
तज धन धाम भई मतवारी रूप सुधा रस में पागी ॥
निसदिन व्याकुल रहत मिलन को विरह ज्वाल उर में जागी ॥
कंचन कुँवर लगन की चोटें सोई जाने जाके लागी ॥

॥ दादरा ॥

दरस कब दैहे री मोरी गुइयां ॥ कि मोरी गुइयां ॥
वा सरयू के तीर मिलन कब होय है री मोरी गुइयां ॥
कि मोरी गुइयां हेर हमारी ओर विहँस कुछ कैहे ॥

री मोरी गुइयां ॥ कि मोरी गुइयां ॥
कंचन कुँवर जे नैना निरख सुख पैहे री मोरी गुइयां ॥

॥ गजल ॥

बांकी अदा से श्यामने दिल मेरा छिना लिया ॥
बैठे बिठाये चैन से नाहक ये दंद मचा दिया ॥
दिल चुरा के चल दिया फिर न हमारी ली खबर ॥
छिप रहे हो जा कहां किसने तुमै छिपा लिया ॥
गफलत में मुझको डाल के काबू से तुम निकल गये ॥
इसका मजा भी पावोगे दिल जो किसी का दुखा दिया ॥
व्याकुल पड़ी तड़फती हूँ कीना हिया तुमने कैसा निठुर ॥
कंचन कुँवर दृग सैन का खंजर कलेजे चुभा दिया ॥

॥ गजल ॥

हो सिया बल्लभ श्यामले क्यों मुझे भुला दिया ॥
किसने तुमें बहका दिया हम से जो दिल हटा लिया ॥
आप तो दीन दयाल हो दीनो पै करते हो दया ॥
बेवफाये मेहरबां किसने तुमें बना दिया ॥
दर पै तुमारे हौं पड़ी दर्द न तुमको है जरा ॥
नाहक में मुझको सता दिया हाय ये दिल जला दिया ॥
सरनागत प्रतिपाल है नाम जहां में नाथ का ॥
कौन कहेगा फिर प्रभू जो न मुझे अपना लिया ॥

कंचन कुँवर की लाड़ले सत्य विनय यह मानिये ॥
कैसे ये प्रान रहैं पिया दर्स जो तुमने ना दिया ॥

॥ गजल ॥

जब से दरसाई मुझे सुन्दर छटा श्री राम ने ॥
कर दिया ज़ख्मी जिगर तब से सखी सुखधाम ने ॥
कल न दिल पड़ता है छिन पल रैन दिन वेताब हूँ ॥
हर घड़ी छाई रहे सूरत दृगों के सामने ॥
चोर दिल कौशल कुँवर फिर न ली मेरी खबर ॥
जाकर अवध इकपत्र भी भेजा न सियवर श्याम ने ॥
तड़पते ज्यों त्यों बमुसकिल ज्वालजालिम जेठकी ॥
जा रही बीती ये फिर छाई घटा मघवान की ॥
किस तरह कंचन कुँवर दिल को तसल्ली दीजिये ॥
ज़ोर दल विरहिन पै की आकर चढ़ाई काम ने ॥

॥ गजल ॥

मौसम बहार पावस आई हुई नई ॥
काली घटा गगन में आली हुई छई ॥
रघुराज प्रिया प्रीतम छाये विदेश में ॥
वेदर्द सखी श्याम ना अब तक खबर लई ॥
सावन में सखी सारी झूलेंगी झूलना ॥
पहिरे सुरंग रंग की चूनर नई नई ॥

गावै मलार पावस लै तान मौज से ॥
गलबांह डाल पिय के मन भावनी भई ॥
कंचन कुँवर पै रघुबर जल्दी कृपा करो ॥
आकर के मिलौ प्यारे जां लब पै आ गई ॥

॥ गजल ॥

बड़भाग से सावन में री साजन मेरे घर आ गये ॥
सज साज झूलन के सखी अब भावते मन के भये ॥
तीर सरयू के हिंडोला घाल रतन जड़ाव के ॥
पहिर चूनर सुरंग तन मनि जड़ित आभूषण नये ॥
झूल हौं श्री जानकी जीवन के संग सखि झूलना ॥
बोल नागर नवल पुर की आज अति आनंद छये ॥
देख री अब घुमड़ आये गगन घन कारी घटा ॥
सुखद अब मोहिं विरह के वे दिवस दुख दावन गये ॥
अब पपीहा जोर से पीपी रटै कह दे सखी ॥
वरज हौं कंचन कुँवर न सुदिन दिन मंगल भये ॥

॥ दादरा ॥

सखी अब देखौ बहार सावन की ॥
उमड़ घुमड़ घन बरसत बदला ।
चमकत छिन छिन चंचल चपला ॥
रिमझिम परत फुहार घटा घन छावन की ॥

लख घन मोर मगन मन डोले ।
पिउ पिउ कह पपिहा बन बोले ॥
बहत सुहावन त्रिविध बयार मोद उपजावन की ।
झूलत नवल कदम्ब की डारी ॥
फहरत पीताम्बर पट सारी ।
गावत सखियां राग मलार मधुर धुन सावन की ॥
लसत हिंडोले युगुल बिहारी ।
कंचन कुँवर झुलावन हारी ॥
तन मन धन लख दीनो वार छटा मन भावन की ॥

॥ दादरा ॥

सखि देखौ हिंडोले नवल झांकी ॥
सैर-बहार आज ये सावन की देखिये चल के ॥
निहार लीजिये सुन्दर छबि जे दिल भर के ॥
करौ न देर फेर ये समय न पावोगी ॥
हिंडोल झूलिये प्रीतम के साथ हिल मिल के ॥
रहै अरमान दिल में अली बांकी ॥
उधर गगन में घटा छाई काली काली है ॥
इधर सलौनी छटा श्याम की निराली है ॥
कुँवर किशोरी मिथिलेश की दुलारी इत ॥
हमारी स्वामिनी दुति दामिनी चुरा ली है ॥
लखि कंचन कुँवर छवि मे छाकी ॥

॥ पावस ॥

विहरत छवि जहँ सिय रघुराई ॥
पावन भूमि सुथल मन भावन चहुँ दिशि हरित लता छवि छाई ॥
उमड़ घुमड़ घन गरजत बरसत लखि वर्षा रितु परम सुहाई ॥
झिरना झिरहिं शिषर श्रृंगन ते भरहिं नीर सर सरितन लाई ॥
चमकहिं चपल दामिनी घन में इन्द्र धनुष नभ देत दिखाई ॥
लखि बन घटा छटा घन नभ में झूलन हित हिय अति हर्षाई ॥
कियो विचार युगुल मिल तेहि छन कंचन कुँवर हिंडोल घलाई ॥

॥ कजली ॥

झूला झूलें प्रीतम प्यारी आली छटा छबीली है ॥
हरित भूमि बन कुंज हरित तरु लता हरीली है ॥
हरित मनिन मय लसत हिंडोला द्युति चटकीली है ॥
हरित युगुल तन बसन विभूषन सजन रंगीली है ॥
गावत राग मलार हरित अलि गुन गरवीली है ॥
कंचन कुँवर हरित तन मन छवि हरित छकीली है ॥

॥ कजली ॥

हिंडोला झूलें सिया रघुराज ॥ सज सब झूलन समाज ॥
सरजू तीर प्रमोद विपिन में बरसत रंग अपार ॥
कुंजन कुंजन घले हिंडोला रतन जटित छवि छाज ॥
सजि आभूषन सुरंग चूनरी जनक लली सुकुमार ॥

झूलत हिल मिल मोद बढ़ावत लै संग सखिन समाज ॥
चपला चमकत बदला गरजत बरसत बूंदन वार ॥
गावत राग मलार अली गन निरखत सुखमा साज ॥
झमक झुलावत हिय हरषावत प्रान करत बलिहार ॥
कंचन कुँवर युगुल छवि निरखत रतिपति पावत लाज ॥

॥ कजली ॥

नैनन बस गई झूलन झांकी ॥
सजनी सावन रहत सदा ही जब से वह छवि ताकी ॥
दे गल बांह सिया संग झूलत झुक झुक रामलला की ॥
कंचन कुँवर हरो मन मेरो हँस हेरन दृग बांकी ॥

॥ गजल ॥

कौशल किशोर सजनी सुन्दर सुभग सलोना ॥
नैनों में बस रहा है त्रैलोक का निरोना ॥
जिसकी अदा ये आली तन प्रान है निछावर ॥
इक दृष्टि में ही प्यारे पढ़ डार दिया टोना ॥
क्या क्रीट मुकुट सानदार सिर सजा हुवा ॥
सिर पेंच जड़ा हीरा छवि दिपत शुभ्र सोना ॥
कुंडल श्रवन दृगन में सुरमा अँजा कटीला ॥
नाशा बुलाक हिय में मनिहार अजब होना ॥

जरकस किनार जामा छवि झलक श्याम तन की ॥
मुक्ता अमोल लागे पट पीत चहूँ कोना ॥
पग धरत बजत नूपुर गज चाल है निराली ॥
हँस हेर हिया मोहे दशरथ नृपति के छौना ॥
उपवन में आज औचक देखी छटा छबीली ॥
कंचन कुँवर सुमन युत कर कंज लिये दोना ॥

॥ गजल

सखी मुख राम की शोभा श्रवन सुन हीय हर्षा के ॥
अपर सखि वैन यों बोली सकल अलियों को समझाके ॥
सुना अस मैं सखी इनको मुनीश्वर कल्ह लाये हैं ॥
छबी वरनन करैं जिनकी सभी नर नारि मिथिला के ॥
यही अवधेश के प्यारे राम लक्ष्मन सुवन दोऊ ॥
सुमन दल लेन आये हैं अवस अवलोकिये जाके ॥
कहै कंचन कुँवर इम सुन सखिन के वैन हिय भाये ॥
उठे अकुलाय दरसन को ललक लोचन जो सीताके ॥

॥ गजल ॥

चली कर सोइ सखि आगे दरस हित जानकी प्यारी ॥
चहूँ दिशि हेरती चंचल चखन दृग चटपटी भारी ॥
लता विच राज सुत सुन्दर सखिन कर गह लखाये हैं ॥

सलोने श्यामले गोरे कुँवर कर कंज धनुधारी ॥
निहारत श्यामली छबि को नयन इक टक भये सियके ॥
सुरत तन मन की बिसराई रहीं दृग मूंद सुकुमारी ॥
कहै सखि हाथ गह सिय को निहारो क्यों न सुखदाई ॥
खोल दृग ध्यान गौरी का बहुर पुनि कीजियो प्यारी ॥
गूढ़ मृदु बैन सुन सिय ने सकुच तब नैन पट खोले ॥
मनोहर मोहनी मूरत निरखि छबि निज हिये धारी ॥
कहै कंचन कुँवर सखि यों कि जो सखि श्याम सुन्दर हैं ॥
यही बर हों सियाजू के फूले मन कामना सारी ॥

॥ गजल ॥

जो देखे श्याम सुन्दर को दिवाना हो हि जाता है ॥
निगाहे तीर कातिल का निशाना हो हि जाता है ॥
नजर एक बार भी जिस पर पड़ी शोखे सितमगर की ॥
उसे मुश्किल जो अपना दिल छिपाना हो हि जाता है ॥
तड़पता रैन दिन बिसमिल फँसा जो जुल्फ फंदे में ॥
वो माही आब के काबिल फिसाना हो हि जाता है ॥
कहै कंचन कुँवर जिसने लगाया नेह रघुबर से ॥
कठिन फिर प्रेम दुनियां से निभाना हो हि जाता है ॥

॥ गजल ॥

लगी है लौ सियाबर से तो फिर जग से लगाना क्या ॥
रंगा दिल श्यामले रंग में तो दूजा रंग चढ़ाना क्या ॥
युगुल छबि माधुरी हरदम दृगन भर भर निहारो तुम ॥
बहारे बाग दुनियां पर भूमर मन का लुभाना क्या ॥
लिया बाना फकीरी का तिलक माला करी धारन ॥
कहा कर दास रघुबर के नेह जग से निभाना क्या ॥
मिले साकेत की सेवा अगर पूरब के पुन्यों से ॥
जोर कर दस्त फिर तुमको बृथा दर दर पै जाना क्या ॥
विभूती भक्ति की पाई कभी जो घट नहीं सकती ॥
सकल संसार की संपत सहन्साही खजाना क्या ॥
कृपा की कोर जो तुम पै करैं कौशल महारानी ॥
मुनासिब राजरानी से भला फिर सर झुकाना क्या ॥
भक्ति रस प्रेम सरिता में मगन मन मीन जो कीना ॥
असत नद विषय संसारी कहै कंचन फँसाना क्या ॥

॥ दादरा ॥

झूलत नैंया ललन की टेरन ॥
सरजू तट ठाढ़े रघुनन्दन गह कर कंज धनुष की फेरन ॥
सखिन संग तैं मोहि बोलाई दै दृग सैन तिरीछे हेरन ॥

हौं सकुचाय रही न गई मैं कुल की लाज भई मोहि बैरन ॥
कंचनकुँवर चले गये तेहिछिन राजकिशोर अवधकी सैरन ॥

॥ दादरा ॥

लगैं प्यारी अवधपुर की गलियां ॥
विहरत जिन गलियन नित सजनी वे मन भावन सामलिया ॥
जिन गलियनमें मिलहिं नवेली जनक लली की प्रिय अलियां ॥
कंचन कुँवर जिया मम ललचै अवलोकन को वे गलियां ॥

॥ दादरा ॥

सखि सिय के सजन से नैना लगे ॥
निशि दिन तलफत श्याम मिलनको जिय ग्रह कारज में न लगे ॥
चित चातक पिय प्रेम पियासे छबि स्वाती मुख लेन लगे ॥
मन मधुकर उलझाय रहे री जुलुफ जाल मृदु बैन ठगे ॥
कंचन कुँवर चकोर भये दृग रूप सुधारस प्रेम पगे ॥

॥ दादरा ॥

मग छांड़ौ जी छैल न करौ मोसे घात ॥
जावो जावो जी लाल ना छुवो मेरो गात ॥
चतुराई करौ न रहो चुपके ॥
नहीं मांनू छबीले तिहारी मैं बात ॥

हम जानी अबध पिया छल बतियां वहीं
वहीं जावो जहां हो जगे सारी रात ॥
क्यों बोलौ ना प्यारे ना दृग जोरो
कहै कंचन कुँवर जिया काहे लजात ॥

॥ दादरा ॥

इन नैनन में श्याम सजन दरसें ॥
सिया प्यारे बिना ये जिया तरसे ॥
तलफौं दिन रैन चित आवै न चैन
हमें तज के कहां वे गये घरसे ॥
मोहि करके बिहाल कहां छाये हैं लाल
नहीं आये री बीत गई बरसे ॥
कोई जाये री लाये मनाय उन्हे
विरह ज्वाल में कंचन कुँवर झरसे ॥

॥ दादरा ॥

हमारी तेरी नाही बने नृप लाल ॥ नाही बने नृप लाल ॥
तुम रस लंपट मदरस छाके तकत पराई बाल ॥
नैन सैन सर वेध हिये में डारत छबि को जाल ॥
चंचल चतुर कपट छल बल के कित सीखे ये चाल ॥
हँस हँस कर रस वस चित चोरत करत नये नित ख्याल ॥
कंचन कुँवर बिरह ब्याकुल मोहि देख हँसत दै ताल ॥

॥ दादरा ॥

सजन बेदरदी हो मुझे सैनों की मारी कटार ॥
भौंह कमान तान हिय मारे नैन बान अनियार ॥
कसकत री अति चुभे कलेजे को अब सकत निकार ॥
हा हा बीर पीर लख मेरी तनक दया चित धार ॥
लाय मिलाव वेग तू प्यारी दशरथ राजकुमार ॥
कंचन कुँवर जोरि कर दोऊ बिनवत बारहिं बार ॥

॥ दादरा ॥

चोर चित लै गयो री परदेशी समलिया यार ॥
हँस हँस के बस कै नैनन में दगा मोहिं
दै गयो री रघुबंशी वो राजकुमार ॥
चलती बेर फेर मुख हमसे मधुर मधुर
कछु कै गयो री तक मारी कलेजे कटार ॥
आवन अवध बीत गई सजनी सजन कित
छाय रह्यो री सुध लीनी न फेर हमार ॥
मिथिला नगर वगर वीथिन में बीज
विरह को बो गयो री रस प्रेम की वेली उखार ॥
कंचन कुँवर दरस अब उनको कठिन
अति हो गयो री निरमोही भयो दिलदार ॥

॥ गजल ॥

मुझे जिस दम ख़्याले श्यामला मस्ताना आता है ॥
बड़ी मुश्किल से काबू में दिले दीवाना आता है ॥
अनोखी सान है प्यारी कटीली सान नैनों की ॥
घुमाके तीर सी तिरछी हिये में जब चुभाता है ॥
हिज्र में रैन दिन उसके मैं बेकल सी तड़फती हूँ ॥
बिना महबूब के देखे न चित में चैन आता है ॥
बिसारे जक्त सुख सारे सकल श्रृँगार तज डारे ॥
न जी लगता है ग्रह वन में न भोजन पान भाता है ॥
दर्स रघुराज प्रीतम का मिले केहि भांति अब सजनी ॥
किये लाखों जतन लेकिन नज़र मेरी न आता है ॥
मिलावे जो सनम मेरा करूँ कुरबान दिल उस पर ॥
वही सच्चा सनेही है उसी से नेह नाता है ॥
कहे कंचन कुँवर उसका जन्म भर गुन न भूलूंगी ॥
मिला दे जो मुझे लाकर सनम जो दिल में भाता है ॥

॥ गजल ॥

लगन श्री जानकी जीवन से दिल से जो लगावेगी ॥
सकल संसार में सोई सोहागिन नाम पावेगी ॥
हमारी सीख ले सजनी निरंतर ध्यान धरकर जो ॥

हृदय मंदिर में निसदिन श्याम सुन्दर को रमावेगी ॥
मिला जिसको परम धन प्रेम श्री रघुराज प्रीतम का ॥
उसे दिन चार की संपति जगत की क्यों सुहावेगी ॥
लगा हो छैल रघुबर के मिलन का जिसके दिल चसका ॥
अगर रति पति भी सन्मुख हो तो कब फिर ख्याल लावेगी ॥
सुधा छबि पान कर जिनने किया मन मस्त मतवाला ॥
उने फिर जक्त की माया कहो कैसे फँसावेगी ॥
कहै कंचन कुँवर जिनको मिली सेवा युगल पद की ॥
जहाँ में यश बिमल छाकर वो पुन साकेत जावेगी ॥

॥ गजल ॥

मेरे दिल ने लगन सीता रमन जी से लगाई है ॥
शहनशाही लगे फीकी फकीरी मन को भाई है ॥
यही आता है बस दिल में रहैं सन्मुख सिया प्यारे ॥
करे बदनाम गर दुनियाँ मुझे इसमें भलाई है ॥
अगर गुरु लोग कुल परिवार भी बरजै न मानूँगी ॥
निभाऊँ नेह रघुबर से यही हिय में समाई है ॥
ठगोरी सिर मेरे डारी दिखाकर श्यामली सूरत ॥
छली नृप छैल रघुनन्दन मुझे बौरी बनाई है ॥
मेरा मन हाथ से मेरे सखी जाता रहा छिन में ॥

फँसा जुल्फों के फंदे में मिले क्यों कर रिहाई है॥
कहै कंचन कुँवर मैं तो बिकी हूँ हाथ प्रीतम के॥
जो चाहे सो कहे कोई नहीं मुझको बुराई है॥

॥ गजल ॥

ऐसा श्याम सुन्दर का असर हो गया॥
दिल मेरा ये उनकी नजर हो गया॥
जब से देखा दरस मैं दिवानी हुई॥
उसी छिन सनम का सफर हो गया॥
वह छैल छली नृप लाल अली॥
मेरे चित को चुराके किधर हो गया॥
कहाँ जाऊँ मैं पाऊँ पता उनका॥
यहाँ मुश्किल मेरा अब गुजर हो गया॥
उनके तीरे नजर का निशाना हुआ॥
पल में मेरा ये जख्मी जिगर हो गया॥
किसी भाँति से वह महबूब मिले॥
दिल को ये ही बड़ा एक जरर हो गया॥
करूँ नैनों का तारा मैं कंचन कुँवर॥
मुझे दर्सन पिया का अगर हो गया॥

॥ दादरा ॥

नैनों की मारी कटार कटार सिया प्यारे ॥
नैन बान तक हाय हने उन हो गये हिये के पार ॥
कि पार मेरे प्यारे नैनों की मारी कटार ॥
गहरो घाव हिये में कसके सैन सिहोरी धार ॥
धार अनियारे नैनों ० ॥
कंचन कुँवर मिलौ करुना कर अब न लगायो बार ॥
बार बलिहारे नैनों ० ॥

॥ दादरा ॥

सिया प्यारे की चितवन चुभी जिय में ॥
रतनारे से नैन तक तिरछी दै सैन
हँस मारी छबीले कसक हिय में ॥
चित आवै न चैन बिन देखे सुख दैन
मन लागौ सखी री अवध पिय में ॥
कित छाये री कंचन कुँवर वे ललन
मन मोहे रसीले कवन तिय में ॥

॥ दादरा ॥

मन मोहन रघुराज दुलारे ॥
चितवत ही चित बस कर राखत

हँस हँस नैन सैन तक मारैं ॥
उनके नैन बान हिय बेधे
कसकत निसदिन हाय हमारे ॥
कंचन कुँवर विरह व्याकुल भई
अब कस प्रान रहें बिन प्यारे ॥

॥ फाग निर्गुण ॥

मन पंछी जग भरमाय रहो माया देख लुभाय रहो ॥
सत संगत रस प्रेम वेलि तज बिषयन लख ललचाय रहो ॥
भक्ति कुसुम फूले हिय उपबन पतभर बन मँडराय रहो ॥
सिंधु तीर नहिं प्यास बुझावे सरतन जल हित धाय रहो ॥
कंचन कुँवर बिवस तृष्णा के रैन दिवस भटकाय रहो ॥

॥ फाग ॥

अब जाग मुसाफिर बेर भई ॥ रजनी सारी बीत गई ॥
आलस त्याग खोल दृग मूरख सुन तमचर ने टेर दई ॥
मंजिल दूर रहो दिन थोरो सकल बटोहिन बाट लई ॥
तेरे शीश बोझ तृष्णा को काल अँधेरी आन छई ॥
कैसे ठाम पहुँच है तू अब श्याम संघातिन छूट गई ॥
भव सागर को तरन कठिन अति तोहि किनारे सांझ भई ॥
कंचन कुँवर अधार एक गहु सिय पिय पद नाव नई ॥

॥ फाग ॥

मग मोहि लुटेरन छेक लई ॥
तुम श्याम सनेही सुध न लई ॥
मैं मग भूल फिरी तोहि खोजत बन में मोहन साँझ भई ॥
जान अकेली घेर चहूँ दिशि लोभ मोह मद मार दई ॥
जन्म जन्म की गाँठ पूँजी जो छिन में सारी छीन लई ॥
बरवस प्रान बचे करुनानिधि भक्ति दिलासा देत रई ॥
कंचन कुँवर मेहर अब कीजे सिय वर प्यारे शरण लई ॥

॥ फाग ॥

चित दै नित सत संगत करिये ॥ हरिनाम सुधा श्रवनन भरिये ॥
हित करिये हरि भक्तिन से मिल जन्म धरे को सुख लहिये ॥
हिय मानस में नेम प्रेम से ध्यान युगुल पद को धरिये ॥
श्री साकेत महल की सेवा जो सखि भागन से पइये ॥
दासिन में निज नाम पायके खास खवासन में रहियें ॥
अलक लड़ैते लाल लली की कोर कृपा की हो चहिये ॥
कंचन कुँवर प्रेम धन पाकर कहा लोक डर से डरिये ॥

॥ फाग ॥

हम श्याम रंग रस मतवाली ॥ भई पीकर प्रेम सुधा प्याली ॥

तज कुल लाज काज ग्रह सारे हौं जिय टेक गही आली ॥
नातो नेह जगत मे टोरो प्रीति अवध पिय से पाली ॥
हँस हँस चोर मोर चित जिनने मंत्र मोहनी पढ़ डाली ॥
अवलोकहु छवि रूप माधुरी रति पति मद हरने वाली ॥
कंचन कुँवर सिया स्वामिन की मिहर नजर चाहत खाली ॥

॥ फाग ॥

मैं प्रेम दिवानी होय रई ॥ कुल लोक लाज सब खोय दई ॥
रति पति कोटि निछावर जेहि पर श्यामल छवि लखि मोह गई ॥
इन नैनन छिन चैन परत नहिं जब से वह छवि जोय लई ॥
कंचन कुँवर नेह नहिं छूटे लाख कहै कोऊ मोय दई ॥

॥ फाग ॥

रसिया अवधेश दुलारो री ॥ चित चोरो छैल हमारो री ॥
हँस हम तन दै सैन तिरीछी बड़ी बड़ी आँखन वारो री ॥
कर संकेत मिलन को मोहन दै गयो मोहि इसारो री ॥
कंचनकुँवर न हौं कछु समझी मिलहिं कौन विधि प्यारो री ॥

॥ फाग ॥

होरी हम नीरस ना खेलैं ॥ को बदनामी झेलै ॥
रसिकन के संग खेलैं मिलके रस को रंग सकेलै ॥
जो कोऊ हमरे सनमुख आवै ताहि भिजावें पैलै ॥

चोखो रंग श्याम भर डारैं अपने गोल मिलै लें ॥
जो भरपूर न भीजैं ताको बौर दूसरो दै लें ॥
कंचन कुँवर न छूटे कबहूँ जग अपयश नहिं फैले ॥

॥ फाग ॥

खेलैं हम होरी रंग भरी ॥ रसिकन से मिल होड़ परी ॥
और रंग परसे नहिं सजनी श्याम रंग रस घोर धरी ॥
अनुरागिन को संग खिलावैं निगुंनियन को दूर करी ॥
जे अलि प्रिय प्रीतम रस छाकी प्रेम रंग में डूब खरी ॥
कंचन कुँवर बिलग हम उनसे कबहुँ न होवें एक घरी ॥

॥ फाग ॥

हर रंग रंगीली होरी है ॥ खेलै सो साथिन मोरी है ॥
जिनके मन मंदिर में बिहरें श्री मिथिलेश किशोरी है ॥
जे रस रूप छकी अलबेली प्रीत श्याम संग जोरी है ॥
उनहीं से होरी हम खेलैं ललित प्रेमरस घोरी है ॥
कंचन कुँवर भक्ति भंगिया रस छान पियत भई बौरी है ॥

॥ रसिया ॥

रसिया सोई रसिकन को प्यारो ॥
युगुल रूप रस प्रेम छको जो डोलत निसदिन मतवारो ॥

जो गुन गान करत सिय पिय को भर अनुराग नचै न्यारो ॥
प्रीतम छवि लखि मन विह्वल होइ नेह नीर नैनन डारो ॥
कंचन कुँवर कहत सोइ प्रिय मोहि मैं तन मन तिहि पर वारो ॥

॥ रसिया ॥

रसिया सोइ श्यामल रंग रंगौ ॥
रूप सुधा की पियत बारुनी मस्त भयो रस प्रेम पगौ ॥
जाकौ मन अनुराग भरौ नित युगुल चरन से ध्यान लगौ ॥
नेह नगर में होरी खेले सोई सखी जेहि भाग जगौ ॥
तन की तनक समार ताहि ना मन प्रीतम छवि जाल ठगौ ॥
कंचन कुँवर धन्य सोइ सजनी परम सनेही मोर सगौ ॥

॥ रसिया ब्रज की धुन में ॥

लालन पिचकारी ना घालौ मेरी चूनर भीजी जाय ॥
यह चूनर मिथला ते आई मोय पठाई माय ॥
बड़े मोल की सुरंग चूनरी मोहि प्रान प्रिय आय ॥
जो कहुँ यापै रंग परेगौ सुनिये श्री रघुराय ॥
पीताम्बर पट छीन लेहुंगी रंग में देहु डुबाय ॥
फिर ना चले चतुरता प्यारे नारी वेष बनाय ॥
कंचन कुँवर सिया स्वामिन ढिग लै जैहौं गह वाय ॥

॥ फाग ॥

छबि रूप सिंधु में धँसके री॥ को जात सनेही बचके री॥
को बदनाम भयो नहिं सजनी नेह नगर में बसके री॥
काको मन मधुकर सुलभो पुन ज़ुल्फ जाल में फँसके री॥
अवध छैल के नैन नुकीले काके हिय नहि कसके री॥
कंचन कुँवर प्रेम की गाँसी तन मन लीनो गसके री॥

॥ फाग ॥

हम रीति प्रीत की पहचानी॥ नेह डगर नीके जानी॥
छबि सागर में बिहरें निशदिन प्रेम सुधारस में सानी॥
राम लला से लगन लगाके मौज करै सखि मनमानी॥
कंचनकुँवर करैं नित हम पर मिहर नजर सिय सुखदानी॥

॥ फाग ॥

सोई संग सहेली मेरी है॥ जो जनक लली की चेरी है॥
रैन दिवस छबि रूप माधुरी जिन निज नैनन हेरी है॥
जिन पर श्री मिथिलेश नन्दिनी करहिं कृपा बहुतेरी है॥
कंचन कुँवर युगुल पद सेवैं बलिहारी तिन केरी है॥

॥ होली धुन कहरवा ॥

रघुनन्दन से लागी लगनियां मोरी॥
होरी में बरजोरी मोहन डारी रूप ठगोरी॥

वह छबि श्याम सुधा रस पी पी भये मतवाले ॥
हटको मन मधुकर नहिं माने जुल्फ जाल उलझयो री ॥
तन मन में रम रहौ सखी री कौशल राज दुलारौ ॥
सुध बुध भूल गई सब सजनी हाय भई मैं बौरी ॥
बिन देखे चित चैन न आवे कौन मंत्र पढ़ डारौ ॥
कंचन कुँवर हेर हँस छिन में छैल करी चित चोरी ॥

॥ कहरवा ॥

नई लागी छैल लगन तोसे नई लागी छैल लगन तोसे ॥
नेह लगौ छूटे नहि रघुबर अब कोई लाख कहै मोसे ॥
मन मेरो उलझौ नहि सुलझे घूघर वाली जुल्फों से ॥
मेरे मन मन्दिर में विहरौ बिलग न हुइयों पलकों से ॥
तज ग्रह काज लाज सब कुल की लगी तुमारे चरनों से ॥
कंचन कुँवर मिलन की मोहन आस लगी थी बरसों से ॥

॥ भजन ॥

सियाबर कैसी मोहनियां डारी ॥ नैन सैन हँस मारी ॥
तुव छबि रूप सुधारस प्याला पीकर भई मतवारी ॥
प्रेम लगन में मगन भई हौं तन मन सुरत बिसारी ॥
अब बदनाम भई सब जग में सुनिये रसिक विहारी ॥
काकी आस करौं मनमोहन दासी कहाय तुम्हारी ॥

कंचन कुँवर निवाहेई बन है अपनी ओर निहारी ॥

॥ भजन ॥

झगरो मोहन मोहि न भावै ॥ प्रेम की बात सुहावै ॥
विहँस मिलौ रघुराज लाड़ले हिय की तपन सिरावै ॥
धाम काम कछु नीक न लागत तुम बिन जिय अकुलावै ॥
निठुराई तजि मिलहु प्रान धन तुम हिय तरस न आवै ॥
बिछुरन पीर बड़ी अति प्यारे निस दिन बिरह सतावै ॥
कंचन कुँवर नेह नागर पिय तुमहि न लाज लजावै ॥

॥ गजल ॥

बिनय सुन जानकी जीवन दया दिल में न लाते हो ॥
निठुरता त्याग रघुनन्दन तरस टुक भी न खाते हो ॥
मैं चेरी जन्म से तेरी भई सब जक्त में जाहिर ॥
प्रनत प्रन पाल बिरदावलि सिया बर क्यों लजाते हो ॥
गहौ कर कंज कर मेरो निहारो कोर करुना की ॥
दरस बिन जान ये जाती गहर काहे लगाते हो ॥
जो दावा दिल में रखते हो जरा कुछ प्रेम का प्यारे ॥
तो फिर निज प्रेमियों को श्याम क्यों इतना सताते हो ॥
कसम तुम को सनम मेरी बतादो सच हमें दिलवर ॥
किसी का दिल दुखाने में मजा क्या यार पाते हो ॥

अगर बेकार ही तुमको जलाना है रवां हरदम ॥
निगाहे तीर का दिल को निशाना क्यों बनाते हो ॥
मुझे मालूम होता है कहै कंचन कुँवर ऐसा ॥
चश्म खंजर दिले बेताब पर तुम आजमाते हो ॥

॥ गजल ॥

हमने अपना दिल सहेली श्याम सुन्दर को दिया ॥
जक्त के सब नेहियों से दिल से नाता तज दिया ॥
हो चुकी मैं उनकी दासी वे हमारे हो चुके ॥
लोक का भय कुछ नहीं अब अभय पद हम पा लिया ॥
सृष्टि की फुलवारियाँ फीकी लगें मोहिं दृष्टि में ॥
हृदय सर में नील सुन्दर कंज श्याम खिला दिया ॥
यह हमारा मन मधुप रहता मगन दिन रैन री ॥
माधुरी मकरन्द छवि रस भरके छैल छका दिया ॥
प्रेम की मधु बारुनी पीकर मैं दीवानी हुई ॥
साज मस्ताना सजा तन श्याम रंग रँगा लिया ॥
दरस दिलबर के सिवा और कोई ख़्वाहिश नहीं ॥
राज धन परिवार से जग से ये दिल जो हटा लिया ॥
है यही साकेत हमको अरु यही बैकुंठ है ॥
वह छटा कंचन कुँवर तन श्याम यह दरसा दिया ॥

॥ पद ॥

सखी मैं पड़ी प्रेम के फन्द ॥
उलझन कठिन जतन कर हारी येसे जकड़े बन्द ॥
बरबस छीन मोर चित चातुर ले गयो री सुख कन्द ॥
जनक लड़ैती फिर न सुध लीनी निठुर कौशला नन्द ॥

॥ पद ॥

कहाँ गये चित चोर मोर श्यामले ॥
ढूढ़त फिरत मिलत नहीं सजनी जाय छिपे केहि ओर मो० ॥
जिन तन मन सब बिवस कियो मम बांको नृपति किशोर मो०॥
करत अहेर नवल अबलन की अवध नगर भयो सोर मो० ॥
कजरारी अनियारी तीखी कसकत हिय दृग कोर मो० ॥
तक मारी तिरछी हिय लागी गई करेजो फोर मो० ॥
जनक लड़ैती परी कहरत हैं बन प्रमोद की खोर मो० ॥

॥ पद ॥

मोहे सखी चित चोर मिल गये री आज ॥
बिपिन सघन कुन्जै घेर लई मो आज ॥
बतियां करत हँस बहियाँ मरोरी मोरी ॥
कंचन कुँवर नहीं मान बरजी आज ॥

॥ पद ॥

मोहि नींद न आवे रतियन में ॥
रघुनन्दन झूलें अँखियन में ॥
सिया प्यारे झूलें अँखियन में ॥
जब मैं जात भरन सरजू जल आय अचानक गलियन में ॥
छैंकलेत मोहि जान अकेली रहस निकुंजन थलियन में ॥
बरबस अंकम भर भर भेंटत मन मोहत मृदु बतियन में ॥
अनियारी दृग सैन मिरोही हँस तक मारत छतियन में ॥
कसकत हिय निकसत न निकासे चित फसगो जुल्फसियन में
कैसे लाज रहै अब सजनी परबस परिकै छलियन में ॥
घर घर घैर होत नित मेरो अवध नगर की अलियन में ॥
कंचन कुँवर भई मतवाली छकी प्रेम रंग रलियन में ॥
रघुनन्दन झूलैं अंखियन में ॥

॥ पद ॥

अब कोइ लगन पीर पहँचानै ॥
बंक बिलोकन सैन कटीली जिहि लागी सोइ जानै ॥
इश्क मिजाजी आशिक बिरले घूमत बिरह दिवानै ॥
नेह सुधारस छके दिवस निस झुक झूमत मस्तानै ॥
अवध छैल दिलदार यार पर बिन ही मोल बिकानै ॥

लोक लाज कुल कान आन तज तन मन सुरत भुलानै ॥
श्याम छटा छबि रूप माधुरी पीवत दृगन अघानै ॥
कंचन कुँवर प्रेम रस बूटी बड़भागी कोइ छानै ॥

॥ पद ॥

अब कोइ बिरहिन बिरह दिवानी ॥
प्रेम सुधारस छकी मगन मन डोलत है मस्तानी ॥
नेह नीर भर भर दृग डारै बोलत अटपट बानी ॥
तज सब लाज समाज साज जग आनँद सिंधु समानी ॥
कंचन कुँवर लाल दशरथ के बेदर्दी हम जानी ॥

॥ पद ॥

अब कोइ सुनियो दर्द कहानी ॥
बेदर्दी महबूब श्याम ने बख्शी दर्द निशानी ॥
तन में मन में दर्द रमो है भई दर्द दीवानी ॥
सोवत जागत दर्दई भावत दर्दई से रतिमानी ॥
कंचन कुँवर दर्द की घातैं दर्दई ने पहँचानी ॥

॥ कहरवा ॥

श्री कौसिल्या के लाल होली खेलत मिथलापुर में ॥
हाँ हाँ खेलत मिथलापुर में ॥

केसर रंग भरे पिचकारी झोरिन भरे गुलाल ॥
इत आये सब सखा राम के उत सिय की सब बाल ॥
मटकिन रंग भरे सब भामिन अतर अबीरन थाल ॥
दुहु दिश मार मची रंग कुम कुम कमला हो गई लाल ॥
सखियन दौर गहे रघुनन्दन गुलचा मारे गाल ॥
नवल नागरी वेष बनायो वैंदी दीनी भाल ॥
श्री निमराज महल में ल्याई हो हो पुर दै ताल ॥
सिद्ध कुंवर कहि फगुआ लेहै मन मानो हम लाल ॥
श्री रघुराज उतार हिये ते दैन लगे मनिमाल ॥
चँद्रकला बोली हँस दीजे ननद हमारी हाल ॥
कंचन कुँवर सुनयना रानी देख हँसी यह ख्याल ॥

॥ रसिया ढफ की धुन ॥

ढफ बाजै छैल छबीले कौ ॥ ढफ बाजै ॥
होरी साज समाज सजो सखि सियाबर गुन गरबीले कौ ॥
उड़त गुलाल अबीर चहूँ दिश बरसत रंग रंगीले कौ ॥
नील जलिध तन पर छबि छहरत पीताम्बर चटकीले कौ ॥
कंचनकुँवर कलेजे कसकै कजरा कोर कटीले कौ ॥ ढफबाजै ॥

* पद ग्रीष्म समय के *

❀ दादरा ❀

सहूं कैसे ग्रीषम की ज्वाला करारी ॥
दया करकै दरसन दैना बिहारी ॥
सुहावे न खस खस न सौरभ सुगंधी
जुड़ावै न तन को ये सीतल बयारी ॥
दसा दीन विरहिन की आके निहारौ
श्रवन दै सुनौ वेग बिनती हमारी ॥
नई है न मेरी लगन छैल तुम से
ये पूरब जनम की पुरातन है यारी ॥
सुबस प्रेमियों के सदा ही सियाबर
मिले सुनके कंचन कुँवर पुकारी ॥

॥ दादरा ॥

सखी ग्रीष्म रितु सीत भई है ॥
तपन तन मन की दूर भई है ॥
अवध पिया आये भये मन भाये
हर्ष हिय प्रीतम लाय लई है ॥
सजा दे सिजरिया झलै न बिजनिया
पवन लगे छतियाँ कम्प रई है ॥

हैं कंचन कुँवर ये आनंद की घड़ियां
बियोग की रतियाँ बीत गई है ॥

❀ दादरा ❀

अब साजौ री ग्रीष्म में खस खाने ॥
अवध छैल घर आये सजनी
सुख पाये मन माने ॥
चुन चुन कुसम सिंगार श्याम तन
लखि छबि लोचन ललचाने ।
जुल्फ जाल में चंचल दृग दोउ
तरफरात अति उलझाने ॥
कंचन कुँवर मधुप इम निस दिन
रूप सुधा रस मसताने ॥

॥ दादरा ॥

ग्रीष्म की तपन तन सुख सरसै ॥
जब अवध छैल छतियां परसै ॥
अगर उसीर हमें ना चहिये
पिय छवि रूप सुधा बरसै ॥
सर सरिता की है न जरूरत
प्रेम सिंधु उमड़ौ उरसे ॥

कंचन कुँवर वियोग विषमता
दूर भई ससि मुख निरखै ॥

॥ बधाई ॥

बाजैं बाजैं बधाई झँझकार- न्रहति गृह द्वार-
रानी सुनैना के सुता प्रगट भई तीन लोक उज्यार ।
जनक नगर में सोर भयो है घर घर मंगलचार ॥
जुथ्थ जुथ्थ सखि चलीं महल कौं सज सज मंगल थार ।
कंचन कुँवर निरख छबि सुन्दर तन मन देत निसार॥

॥ पद ॥

ए ए ए ए ए ए ए नाचत मृदंग
नँद नन्द बिन्दाबन जमुन तट अमित मनमथ मद ।
विमरदन सघन कुन्ज मन्ज अभिनव जलद सुन्दर अंग ना०
संग गोपियन के मध्य थिरकत भूषण मणिनमय ।
किरण झलकत श्रवण कुन्डल मन्डित बसन सुरंग ना० ।
संगीत उघटत मधुर सुगावहीं यस नार अद्भुत
सजत नूपुर किंकिनी कटि बजत सुभग मृदंग नाचत ।
करतार जो मनजीर बनसुर मुजबीन
पखावज डमरू ढूलक उपंग झांझ खँजरी मुरचंग ना० ।
त त ता ता दिक दिक दिमक दिम दिम झांज
गन गन गन गन थेइता थेइ तत तत ता दिद दुद दंद० ना० ।
सुरगन विमानन रुद्र नारद थकित पुलकित सुर
जय जय जयति जय जय जयति नवल त्रभंग नाचत० ।

॥ होली ॥

स्वांति बूँद हित चातकी, रटत प्रेम वस होय ।
ऐसई रघुबर मिलन की, लगी लालसा मोय ॥
एहो सजन कब मिलहौ सुख देना हो ॥

॥ श्री ॥

अथ श्री युगल बिरह लीला रहस्य

के पद लिख्यते

कव्वाली

इक बार गई मिथला पुर को श्री जनक दुलारी सुकुमारी ॥
अम्बा के प्रेम प्यार पगी कछु दिवस रही तहँ सिय प्यारी ॥
इत अवध में प्रिय के व्रह वियोग में श्रीराघव विकल भये भारी ॥
भर लेत उसासें पल पल में द्रिग भरे रहत निस दिन बारी ॥
महलों में सुक पिक सिय पाले रंग रंग बहु जातन के ॥
लख अवध ललन को एक साथ कह उठें सकल कहँ सिय प्यारी॥
इक सारो चतुर सुजान बड़ी थल देख इकान्त लाल तिहि से ॥

॥ श्री राघव जी के बचन सारो के प्रति ॥

बोले सारो तू ले पाती मम वेग जनकपुर उड़जा री ॥
मिथलेश के महलन कर प्रवेश दै पियहि बेग उत्तर ला री ॥
कह सिय पिय सहचरि लै पाती उर हर्षित होय उड़ी सारो ॥
सिय जू के आज दरस पाऊँ मिथला में मगन भई भारी ॥

❀ पद रेखता ❀

आनन्द सिंधु उमड़ो मिथला नगर अपारी।
आई अवध से जबसे मिथलेश की दुलारी ॥
नित ही नवीन खेल खेलती सखिन के संग में।

प्रमुदित हो देखि मैया तन मन करे निसारी ॥
महलों में मध्य आंगन सुक सारिका अनेकन ।
चुगते हैं रोज आके चुंगाती है सिया प्यारी ॥
उन्हीं के बीच सारो आकर मिली अवध की ।
अवसर बिचार बोली सिय जू की दिस निहारी ॥

❀ सारो का बचन किशोरी जी के प्रति ❀

सिय जायँगी अवध जब फिर कौन हम सबन को ।
चुनावे हैं हम जियेंगी मुख कौन को निहारी ॥

॥ श्री जानकी जी का बचन सखियन के मिस सारो के प्रति ॥

सुन बचन सारिका के सिय समझ सैन मन में ।
बोली सखी चलेंगी हम सांझ में फुलवारी ॥
कंचन कुँवर सिया के इसारौ समझ कै सारो ।
उड़ गई शीघ्र जाय छिपी बाटिका मँझारी ॥

❀ पद कव्वाली ❀

जब सखिन संग श्री जनक लली टहरन आई फुलवारी में ।
जैसे ससि प्रगटौ बादल ते रोनक छाई फुलवारी में ॥

॥ श्री किशोरी जी के बचन सखियों के प्रति ॥

बोली सिय सखियों से आली अम्बा बिन पूछें आई हैं ॥

बूझें तो बताओ किस कारण देरी लाई फुलवारी में ॥
ता ते एक बात कहैं तुमसे चहुँ दिस सब जावो अलग अलग ॥
पंछी पिक इक गह तुम लावो सब इहि ठाईं फुलवारी में ॥

❀ श्री किशोरी जी के बचन सारो के प्रति ❀

यह सुन सब सखियाँ हर्ष उठीं बोली प्यारी तुम नीक कही ।
सुक पिक पन्छिन के पकरन को जहँ तहँ धाईं फुलवारी में ॥
कहैं सियपिय सहचरि अबसर लखि अति सुघर अवधपुरकी सारो।
बट वृक्ष ते आतुर उतर तभी सिय ढिंग आई फुलवारी में ॥

॥ दोहा ॥

सारो सिय के पद कमल बार बार लपटात ।
जनक लड़ैती प्यार कर मस्तक फेरे हात ॥

॥ श्री किशोरी जी के बचन सारो के प्रति ॥

॥ दोहा ॥

पुनि पुनि पूछे जानकी कहो पिय की कुशलात ।
कबहुँ सुरत हमरी करत वे लछिमन के भ्रात ॥

❀ सिया जी के प्रति सारो के बचन ❀

॥ पद रेखता ॥

सारो बचन कहे इमि सुनिये जनक दुलारी ।
तुमरे बिरह में व्याकुल निश दिन अवध बिहारी ॥

तुमरी बिरह व्यथा को हिय में दबाय रहते।
नैनों से अश्रु बहते दुर्बल भये हैं भारी॥
दीनी हैं पिया पाती पढ़ कर जुड़ाव छाती।
लिख दीजिये जवाब शीघ्र जाऊँ अवध प्यारी॥
पाती लई किशोरी बांची हृदय लगा के।
कंचन कुँवर लिखी इमि श्री राम धनुषधारी॥

॥ दोहा ॥

प्रान प्रिया तुम जाय उत पारहिं अम्बा प्यार।
तुम वियोग में देय मोहि मैन पुष्प सर मार॥
दृग चकोर तरसत यहां प्रिय दरसन की प्यास।
कब दरसै हो चन्द्रमुख पूरन होवे आस॥

॥ पद रेखता ॥

सिय पत्रिका पढ़ी जब हिय में उस्सास भर कै।
उत्तर लगी लिखन पुन धीरज हृदय में धर कै॥
हो सत प्रनाम मेरी स्वीकार पद कमल में।
जीवन अधार नित प्रति चरनों पै शीश धर कै॥
क्यों प्रान नाथ दुख उठाते हैं आप इतना।
मिल जात नहिं प्यारे मिथला में आन कर कै॥

पुष्पक पै हो सवार अगर आप इधर आवैं ।
ऊँचे अटा महल में निस सुमन सेज मज्ज कै ॥
पिय पन्थ निहारूंगी पट खोल दूंगी सारे ।
कंचन कुँवर पधारें निस आज कृपा कर कै ॥

॥ दोहा ॥

इत सिय सारो को दई पाती लिख निज हाथ ।
उत आवत देखी तबै सब सखियां इक साथ ॥

॥ श्री किशोरी जी के बचन सारो के प्रति ॥

तब सिय सारो से कही बेग अवध उड़ जाव ।
दे मम पाती लाल को बहु विधि से समुझाव ॥

❀ पद कव्वाली ❀

सारो उड़ चली अवधपुर को सिय चरनन सीस नवा करकै ।
पहुँची समीप रघुनन्दन के नभ पथ से बेग उतर करकै ॥
ले दई पत्रिका सारो ने दोउ चरनन सीस परस करकै ।
कहै कंचनकुँवर उते सखियन लख पच्छिन युत सुर कथा करकै ॥

॥ श्री किशोरी जी के बचन सखियन के प्रति ॥

॥ दोहा ॥

सुक पिक नीके सकल अति लाई तुम सब बात ।

देर भई अब महल को, चलहु सखी यहि काल ॥
सुन सब प्यारी के बचन, निज निज सुक गह लीन।
जनक लली संग ले सबन, गवन भवन तब कीन ॥

❀ पद रेखता ❀

मइया करै महल में सियजू की इन्तजारी।
तिहि छन तहाँ पधारी मिथलेश की दुलारी ॥
लीनी हृदय लगा कै अम्बा ने प्यार कर कै।

❀ अम्बा जी का बचन किशोरी जी के प्रति ❀

बोली कहां गई थी लाई अबार भारी ॥
तबही सु ला दिखाये अलियों ने पच्छियों को ॥

॥ श्री किशोरी जी के बचन अम्बा के प्रति ॥

सिय ने कही गई हम, इनके लिये फुलवारी ॥
सुक पिक निहार मइया मुख चूम पुन लली को ॥

❀ अम्बा जी के बचन सिया के प्रति ❀

बोली की पाव मेवा, मिष्ठान अब दुलारी ॥
तुम सब समाज लेकर, बैठो जो चौकियों पै।
मैं बेग ला रही हूं सब हित लगा कै थारी ॥
भोजन किये किशोरी सखियन सहित महल में।

अचवन कियो लये पुन ताम्बुल पान प्यारी ॥

❀ प्रिय जू के बचन अम्बा के प्रति ❀

बोली कुँवर किशोरी अम्बा से हम सखिन संग।
पौढ़ेगी आज निस में ऊँचे अटा मँझारी ॥

॥ अम्बा जी के बचन किशोरी जी के प्रति ॥

कंचन कुँवर लली से हँस कर सुनयना रानी।
बोली रुचे करो जो रस केल खेल प्यारी ॥

॥ दोहा ॥

सखिन सहित उत लाड़ली, गई अटा हर्षाय।
इते मधुर मिष्ठान अरु, मेवा थार सजाय ॥
अम्बा पठये तब अटा, अमित भांति पकवान।
सीतल जल झारिन भरो, लगे डबन भर पान ॥

॥ सारो का बचन लालजी के प्रति ॥

॥ पद ॥

कहती हैं लालजी से अस उत अवध में सारो।
तज सोच सबै मिथला रघुराज अब सिधारो ॥
सुन बैन सारिका के पाती हिये लगा के।
भये प्रेम मगन प्यारे जल नैनन ढारो ॥

पढ़ कर हर्ष उठे हैं पुन पत्रिका प्रिया की।
लागी मिलन की आस हृदय धीरज धारो॥
पुष्पक से कियो गवन बेग गगन पंथ से।
मिथला महल पे जाके पिय यान उतारो॥
हर्षाय उठी प्यारी पिय चरन परस कै॥
भर अंक लई लाल हृदय ताप निवारो।
कंचन कुँवर परसपर गल बांह डाल दोऊ।
पर पंक पै पधारे रस खेल बिचारो॥

॥ दोहा ॥

केलि कला परवीन अति जुगुल लड़ैती लाल।
हास बिलास बिनोदकर रचि नाना बिधि ख्याल॥
प्रेम बिनोद बिलास में बीती आधी रात।
छके थके लिपटे दोऊ सिथिल भये सब गात॥

॥ पद ॥

पुन उठे लाल जल झारी लै सिय ने उठ हँस रुमाल लये।
मुख को प्रक्षाल पद हस्त धोय चौकिन पर आय बिराज गये॥
मेवा मिष्ठान मधुर कछु पाकर अचवन पुन मुख पान लिये।
पर पंक बहुर पौड़े मिलके दोऊ अरस परस गल बांह दिये॥

सोये दोउ जागे अति सवार जब नभ ससि तारे अस्त भये।
उठ भूषन बसन सँभार लाल सिय के कपोल जुग चूम लये॥
कह कंचन कुँवर अवधपुर को रघुनन्दन वेग सिधार गये।

॥ फाग ॥

उत गवने अवध बिहारी हैं पौढ़ी इत सिय सुकुमारी हैं॥
सोई उमंग भरी प्रीतम संग जागत रैन गुजारी हैं॥
तबही महलन रवि रथ आये जागी सखियां सारी हैं॥
उठ उठ सजे सबन आभूषन निज निज सौज समारी हैं॥
चली सकल मिल पास लली के सज सज मंगल थारी हैं॥
कंचन कुँवर आय सिय के ढिग धीरें झरफ उघारी हैं॥

॥ दोहा ॥

सब अचरज मन में करें सिय तन छटा निहार।
पीक कपोलन तन सिथल अटपट सकल सिंगार॥

॥ फाग ॥

सब मिलकै जगाई सुकुमारी भये प्रात उठहु अब सिया प्यारी॥
कोई सखि लिये प्रभाती निज कर कोई ठाढ़ी ले जल झारी॥
कंचन कुँवर पलोटत पद गह जगी लली मुख पट टारी॥

॥ दोहा ॥

निरख सिया मुख छबि तवै मुस्क्यानी नव बाल।
चतुर सिरोमन लाड़ली समझ गई ततकाल ॥

॥ श्री किशोरी जी के बचन सखियन के प्रति ॥

जनक लली कह सखिन ते सत्य कहौ यहि ठाम।
मेरी ओर निहार सब क्यों मुस्क्याती बाम ॥

॥ सखियन के वचन किशोरी जी के प्रति ॥

॥ रसिया ॥

सखी कहइ सिया सच बात करौ मत हमसे लली छल घात करौ।
हम सब तुम चरनन की चेरी नाहिन हमें दुराव करौ ॥
इत आये रघुराज आज निम तुम तन प्यारी पुलक भरौ।
पीक कपोल अधर अरु नारे पिय नख छित छतियन उभरौ ॥

॥ किशोरी जी के बचन सखियन के प्रति ॥

बोली परम चतुर सिय प्यारी, तुम सब अटपट बात करौ ॥
कहां मिथला कित अवध नगर सखी उत्तर धरनि अकास परौ ॥
कंचन कुँवर चहत तुम आली ससि तारन निज कर पकरौ ॥

॥ दोहा ॥

काल बगीचन में सखी नव सुक कर गह लीन।

अधर विम्ब फल जान कर चोंच मार तिहि दीन ॥
छूट पटान सो उड़न हित हिय बिच नखन गड़ाय ।
चुभे उरोजन माह अति तब तिहि दीन उड़ाय ॥
लाल भूल निस में गये निज कर छड़ी बिसाल ।
अब क्या देहु जबाब सिय बोली हँस सब बाल ॥

❁ किशोरी जी के बचन ❁

॥ पद ॥

सिय बोली अली चुप साध रहौ ।
तुम सब की मत उलट गई क्या सोच समझ नहिं बात कहौ ।
इहां छड़िन की कौन कमी है ऐसी हमरे कोट लहौ ॥
अवध नरेश साउनी हमरी पठई बस्तु अनेक अहौं ।
कंचन कुँवर सकल सखि सकुची फिर न काहु कछु बैन कहौ ॥

॥ दोहा ॥

परम चतुर चूणामनी सिय सखियन पहिराय ।
बहुर सबन को संग लै अम्बा के ढिंग आय ॥
करें कलेऊ सबन तब पुन हँस खेलन लाग ।
निरख निरख सिय को बदन मइया उर अनुराग ॥

कवित्त

प्रीतम प्यारी के केल रहस्य पढ़ने सुनने के अधिकारी।
वे भावुक रसिक पगे रस में रस प्रेम कथा जिनको प्यारी॥
उनहीं को अरपन करती हूँ पढ़कर मम भूल सुधारेंगे।
सिय राम रहस्य बिचार हिये मम दोष न उर में धारेंगे॥
नहिं जुगल रहस को अन्त कछु सारदहुँ पार न पाय सके।
कबि कौन सो बरन बखान करै शेषहु की रसना रटत थके॥
सिय पिय सहचरि किमि बरन सकूँ हूँ तुच्छ हीन मति मैं नारी।
उर में भावन की उठी लहर तब कर लेखनी लई धारी॥

❀ दोहा ❀

जुगल केल रस रहस को बरन सके कबि कौन।
थकित भई मम लेखनी साध रही अब मौन॥

॥ समाप्त ॥

होरी नई धुन

आज कंचन भवन में होरी है। होरी होरी रंग बोरी है।
आज कंचन भवन में होरी है ॥
इते अवध के छैल छबीले उत मिथला की गोरी है।
अबीर गुलाल के थार भरे हैं मटकन केसर घोरी है।
खेलत फाग परस्पर दोऊ रघुवर जनक किसोरी है।
उड़त गुलाल लाल भये बादल रंग बरसत चहु ओरी है।
बजत सितार मृदंग झांझ ढफ गावत हो हो होरी है।
एक सखी गह झपट लाल को छीनी प्रीत पिछोरी है।
कोउ लहगा कोउ सारी चोली कोउ घुंघुरू ले दौरी है।
निख सिख नार सिंगार साज लख हँसी सिया मुख मोरी है।
ले पधराई जनक लली ढिग कर अंचल गठ जोरी है।
सिय पिय सहिचरि कहै सिया से अवध नृपति की छोरी है।

होरी

नई होरी आज रचाऊँगी रंग में तोहि छैल छकाऊँगी।
कंचन भवन तीर सरजू के भर भर रंग सजाऊँगी ॥
पिचकारिन बौछार करूंगी कुम कुम मार मचाऊँगी ॥
छीन लेहुंगी पट पीताम्बर नारि सिंगारि सजाऊँगी ॥
द्रिग अंजन वैंदी नक वेसर पग नूपुर पहराऊँगी ॥
कट लहगा उर कंचुकी साजूं सारी सीस उढ़ाऊँगी ॥
श्रीनिध के दरबार जाय कै छम छम नाच नचाऊंगी ॥
सियपिय सहिचरि सिय स्वामिन के विजय निसान बजाऊँगी॥

॥ रसिया ॥

होरी है रसिया होरी है होरी है। होरी है रंग बोरी है ॥
भूल जाहुगे छँद फँद सब बहुत करी चित चोरी है ॥
अनुज लखन ले सजग होय अब खेलो लालन होरी है ॥
दृग पट खोल लखो उत आवत श्री मिथलेश किसोरी है ॥
कंचन कुँअर संग सिय जू के जुत्थ जुत्थ नव गोरी है ॥

रसिया व्रज की धुन

आदर करले नार नवेली रसिया ठाड़ो तेरे दुआर ॥
यह रघुवंसी छैल छबीलो रसिकन को सिरताज ।
प्रेम भाव को भूखो प्यारी दशरथ राज कुमार ॥
मन मन्दिर में लाय पधारे पलक पावड़े डार ।
नेह नीर से चरन पखारो प्रेम पलंग बैठार ।
भाव भक्ति को भोग बनाले दया धर्म के पान ॥
छमा सील की साज आरती दीपक ज्ञान उजार ॥
जिय की सब अभिलाष पुजाले समय न वारं वार ॥
कंचनकुँवर ध्यान पहरु कर देहिय भ.पट किवार ॥

दादरा

अच्छय वट त्रितिया आज री ॥
राजत राज महल सिंघासन सिय प्यारी रघुराज री ॥
अरस परस दोऊ नाम लिवावत सुमन छड़ी कर साज री ॥
सकुचत सिय पिय नाम लेत महि लख सब सखिन समाज री ॥

कंचन कुँअर कहत हँस प्यारी कहा लाज कौ काज री ॥

दादरा

गजब तोरे नैना अजब सिकारी।
चितवत ही घाइल कर डारत मदन बान से पैना ॥
चंचल चपल चलत चारहु दिस घूमत है दिन रैना ॥
कंचन कुँअर विहँस हियबिच तक मारत तिरछी सैना ॥

पद

अह मेरो चित चकोर भरमायौ धरनि पर चंद कहांते आयौ।
कि कहुँ चंद दुसरौ प्रगटौ कि मम चित भरमायौ ॥
पिया प्यारी के दरशन कारण दूसर भेष बनायो ॥
इतहु ससि उतहु ससि राजत भेद परत नहीं पायौ ॥
कंचन कुँअर अकाश धरनि पर दो ससि दृगन लखायो ॥

रसिया ब्रज की धुन

ऐसी होरी में बरजोरी रसिया करौ ना मेरे साथ ॥
जब मैं जात भरन सरजू जल रोक लेत मग आय ॥
लेत उठाय उछंग अंक भर मुख चूमत मुसक्यात ॥
केसर रंग अबीर अरगजा सिर से देत उडेल ॥
घूंघट खोल गुलाल मलत मुख गह गह दोनों हाथ ॥
तुमहि न संक तनक काहु की मदरस छाके छैल ॥
कंचन कुँअर न बोल सकत कछु लाज भरी सकुचात ॥

॥ रसिया ॥

कंचन भवन तीर सरजू के होरी खेलत जुगल किसोर ॥
इत सिय के संग सखी छबीली उत रघुवंसी छैल ॥
हो हो होरी गावत दुहुँ दिस निरख हँसत मुख मोर ॥
पिचकारी रंग भर भर घालत मूठं गुलालन मैल ॥
बिन भीजे कोऊ निकँस न पावत रंग बरसत चहुँ ओर ॥
रघुनन्दन श्रीजनक किसोरी खेलत हिय हुलसाय ॥
कंचन कुँअर निरख छबि छाकी थकित भई मति मोर ॥

रहँस का पद

ए ए ए ए ए ए ए ए ए नाचत सुढंग
रघुनन्द सरजू पुलन विपन प्रमोद सखियन मध्ध ।
थिरकत जलधं सुन्दर अंग ।
सजँन नूपुर किंकनी कट श्रवन कुन्डल मंड ॥
झलकत मनिन मय किरण चहुँ दिस सजत बसन सुरंग ।
संगीत उघटत मधुर स्वर मृदु बीन बजत मुचंग ॥
करतार डमरू ढुलक झांझ मंजीर बजत मृदंग ॥
कंचन कुँअर गति लेत ताता थेई ताता थेई
थेई धिना धिक धिक धिना धिक धंग ॥

स्तुति

जय मिथलाधिप राज नन्दनी सीताराम जै सीताराम ॥
जय जगदम्ब त्रिलोक बंदनी सीताराम जै सीताराम ॥
जय कौशल पति जय रघुनन्दन सीताराम जै सीताराम ॥
जय जय निशाचर वंश निकन्दन सीताराम जै सीताराम ॥
जय जय जै रघुवंश दिवाकर सीताराम जै सीताराम ॥
जय जै जै जै जयति सियावर सीताराम जै सीताराम ॥
जय श्री राम भक्त भयहारी सीताराम जै सीताराम ॥
जय सन्तन उर अजर विहारी सीताराम जै सीताराम ॥
जय करुना कर भव भय भंजन सीताराम जै सीताराम ॥
जय जै जै निज जन मन रंजन सीताराम जै सीताराम ॥
जय जै जै श्री महल विहारी सीताराम जै सीताराम ॥
जय कंचन भवन सुमंगल कारी सीताराम जै सीताराम ॥
जय जय जय सिय स्वामिन मोरी सीताराम जै सीताराम ॥
जय रघुबर मुख चंद चकोरी सीताराम जै सीताराम ॥
जय लच्छमन जै भरत सत्रुहन सीताराम जै सीताराम ॥
जय हनुमंत दुष्ट दल गंजन सीताराम जै सीताराम ॥
सिय पिय सहिचरि कह जोरी सीताराम जै सीताराम ॥
कृपा कोर हेरो मम ओरी सीताराम जै सीताराम ॥

★ स्तुति ★

जै जै जनक दुलारी । जै जै अवध बिहारी ॥
जै राम प्राण प्यारे । जै कौशिला दुलारे ॥
नैनों के मेरे तारे । सुनियो बिनय हमारी ॥ जय०
जै जै प्रभा प्रकाशी । जै जै सिया बिलासी ॥
जै जै अवध निवासी । जै राम धनुष धारी ॥ जय०
जै श्याम नवल नीके । जीवन अधार जी के ॥
जै प्राण नाथ सी के । जै जै प्रमोद कारी ॥ जय०
दैके दोऊ गल बाहीं । बसिये मेरे मन माहीं ॥
कंचन कुँवर सदा ही । चहती कृपा तुम्हारी ॥ जय०

॥ पद ॥

नाथ मैं हों दर्शन की प्यासी ।
श्री मिथलेश सुता श्री सिय की, जानहु सहचरि खासी ॥
गीता ज्ञान ध्यान नहिं जानत, सीताराम उपासी ॥
सुनिये बिनय भानुकुल भूषण, अहो अवध के बासी ॥
कंचन कुँवर लेखिये लालन, निज चरनन की दासी ॥

* राम-धुनि *

आज जुगल छबि लखहु सहेली सीताराम जय सीताराम
संग नवल सखियां अलबेली सीताराम जय सीताराम
रंग भरे दोउ प्रीतम प्यारी सीताराम जय सीताराम
अवध लखन मिथलेश दुलारी सीताराम जय सीताराम
बिहरत हँस दिये गल बाही सीताराम जय सीताराम
सरजू तट नव कुंजन माहीं सीताराम जय सीताराम
ठुमक चाल गज गत मतवारी सीताराम जय सीताराम
हँस हेरत चोरत चित आली सीताराम जय सीताराम
श्याम गौर सोभा सुख सागर सीताराम जय सीताराम
सुखमा सील सकल गुण आगर सीताराम जय सीताराम
नख सिख साज सिंगार सुहावन सीताराम जय सीताराम
कंचन कुँवर निरख हिय फूली सीताराम जय सीताराम
प्रेम उमँग तन मन सुधि भूली सीताराम जय सीताराम

सीताराम-धुनि

जय सीताराम सीताराम सीताराम जय सीताराम ॥
जय सीताराम सीताराम सीताराम जय सीताराम ॥
जय सीताराम सीताराम सीताराम जय सीताराम ॥
जय सीताराम सीताराम सीताराम जय सीताराम ॥
जय सीताराम सीताराम सीताराम जय सीताराम ॥
जय सीताराम सीताराम सीताराम जय सीताराम ॥
जय रघुपति राघव राजा राम । पतित पावन सीताराम ॥
जय कौशल्या के बारे राम । दशरथ राज दुलारे राम ॥
जय भक्त जनन रखवारे राम । दीन जनन दुख टारे राम ॥
जय जनक लड़ैती प्यारे राम । सखियन प्राण अधारें राम ॥
जय सब जग कर्तारे राम । जै सब जग धर्तारे राम ॥
जय जीवन धन प्यारे राम । इन नेत्रन के तारे राम ॥
जय काँचन शरण तिहारे राम । भव वारिधि पार उतारें राम ॥
श्री सीताराम जै सीताराम श्री सीताराम जै सीताराम ॥